फरवरी १९५७

द्वितीय संस्करण

मूल्य। एक रुपया

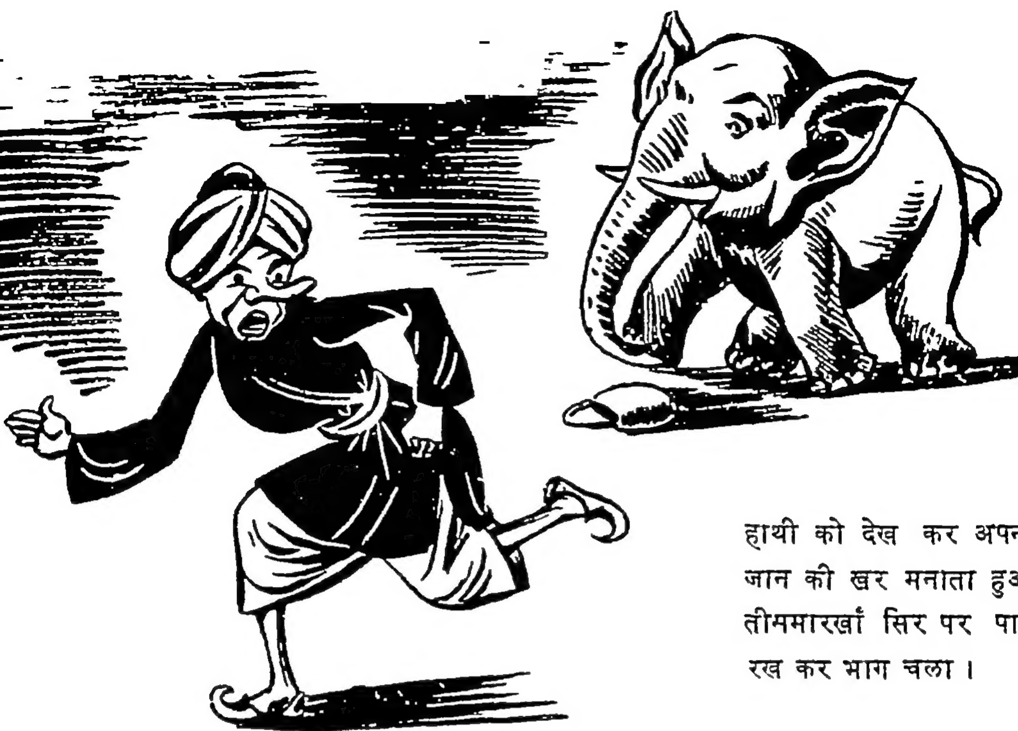
भूमिका

हिन्दी में हास्य-रस प्रधान कहानियो का प्राय अभाव-सा ही है। ऐसी शिष्ट हास्य-पूर्ण रचनाए जिनमें विनोद, व्यग्य और शिक्षा तीनो का समावेश हो, कम ही पढने को मिलती है। इसी कमी को पूरा करने के लिए 'मनोरजक कहानियाँ' का यह सग्रह निकाला गया है। इसमें चुनी हुई २२ सुन्दर सचित्र कहानियाँ है। कुछ कहानियाँ लोक-कथाओ के रूप में भी प्रचलित है। कहानियो की भाषा सरल और मुहावरेदार रखी गई ह ताकि कथोपकथन का रस बना रहे, क्योकि बोझिल भाषा कथा के सौन्दर्य को कम कर देती है।

इस सग्रह की कुछ कहानियाँ हमारे बाल लेखको द्वारा लिखी गई है। बच्चो के लिए केवल मनोरंजक साहित्य तैयार करना ही हमारा ध्येय नही रहा, अपितु बाल तथा अहिन्दी भाषी लेखको को प्रोत्साहन देने की भी हम भरसक चेष्टा करते रहे है।

मनोवैज्ञानिको का कहना है कि बच्चो को यदि कोई बात सरल और दिलचस्प ढंग से सिखाई जाये तो वह जल्दी ही असर करती है। दूसरी बात यह है कि बच्चो और प्रौढो की पढने में रुचि जाग्रत करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि हम उन्हें ऐसा साहित्य पढने को दें, जो उनकी जानकारी बढाने के अतिरिक्त उनका पूर्ण रूप से मनोरजन भी करे। आशा है कि लोक-कथा माला का यह तीसरा पुष्प 'मनोरजक कहानियाँ' अपने इस ध्येय को पूरा करने में सफल होगा।

सूचीपत्र



हाथी को देख कर अपन
जान की खैर मनाता हुअ
तीममारखाँ सिर पर पा
रख कर भाग चला।

तीसमारख़ाँ

सावित्री देवी वर्मा

एक गाव मे एक जुलाहा रहता था। उसके हाथ-पाव तो थे खूब दुवले-पतले, नाक टेढी-सी, पर सिर खूव वडा था, जिस पर कि वह एक वडा-सा पग्गड बाध लेता था। इस प्रकार उसका हुलिया बिगड़ा रहता था। लोग उसे मजाक मे सीक जवान कहा करते थे। काम मे तो सीक जवान वहुत सुस्त था पर बातें बनाने में वह बडा ही तेज था। अपनी पतली कमर मटका कर, नाक से स्वर निकाल कर, हाथ मटकाता हुआ जव वह अपनी वीरता की शेखियाँ मारता, तो उसकी वातें सुन सुन कर लोग हँस-हँस कर लोट-पोट हो जाते थे। एक दिन जबकि वह एक चादर बुन रहा था, उसकी माँ ने उसके खाने के लिये गुड और रोटी पास ही धर दी। गुड के कारण रोटी पर मक्खियाँ वार-वार आकर वैठने लगी। तग आकर गुस्से मे जुलाहे ने ज्योही एक झाँपड चलाया। रोटी

सूचीपत्र



हाथी को देख कर उ
जान की खैर मनाता
तीसमारखाँ सिर पर
रख कर भाग चला।

तीसमारखाँ

सावित्री देवी वर्मा

एक गाव मे एक जुलाहा रहता था। उसके हाथ-पाव तो थे खूब दुबले-पतले, नाक टेढी-सी, पर सिर खूब बडा था, जिस पर कि वह एक बडा-सा पग्गड़ बाध लेता था। इस प्रकार उसका हुलिया बिगडा रहता था। लोग उसे मज़ाक में सीक जवान कहा करते थे। काम मे तो सीक जवान बहुत सुस्त था पर बातें बनाने मे वह बडा ही तेज था। अपनी पतली कमर मटका कर, नाक से स्वर निकाल कर, हाथ मटकाता हुआ जब वह अपनी वीरता की शेखियाँ मारता, तो उसकी बाते सुन सुन कर लोग हँस-हँस कर लोट-पोट हो जाते थे। एक दिन जबकि वह एक चादर बुन रहा था, उसकी माँ ने उसके खाने के लिये गुड़ और रोटी पास ही धर दी। गुड के कारण रोटी पर मक्खियाँ बार-बार आकर बैठने लगी। तग आकर गुस्से में जुलाहे ने ज्योही एक झाँपड़ चलाया। रोटी

पर तीस मक्खियाँ मर गईं। यह देख कर जुलाहा तो फूला न समाया। उसने देखा कि सामने नीम के नीचे गाँव के चार पाँच व्यक्ति बैठे हुए है, बस रोटी लेकर वह वहाँ पहुँचा। जुलाहे को इतना प्रसन्न देखकर एक मनचले ने पूछा—"क्यो भाई सीक जवान आज क्या बात है जो इतने खुश दीख रहे हो ?"

जुलाहे ने भिनभिना कर कहा—"देखो जी, हमें तुम सीक जवान मत कहा करो। हाँ, हम आखिरी बार कहे देते है, फिर अच्छा न होगा।"

दूसरे व्यक्ति ने ठठोली करते हुए पूछा—"तो फिर क्या कहा करें ?"

जुलाहे ने हाथ की रोटी जिस पर गुड की डली रखी थी आगे को बढा कर दिखाते हुये कहा—"क्या समझा है आप लोगो ने मुझे ? देखिये हम कोई ऐसे वैसे नही है। पूरे तीसमारखाँ है। एक ही झोंपडे में तीस जीव मार कर रख दिये। भला कोई ऐसा कर सकता है ?"

एक मसखरे ने गभीर होकर कहा—"वाह ! भाई वाह ! आज तो सीक जवान ने गजब ही कर दिया। देखो न एक-दो नही—एक दम तीसो को मौत के घाट उतार दिया।"

दूसरा बोला—"और वह भी एक ही वार में !"

तीसरा बोला—"और एक हम है कि इन मक्खियो के मारे परेशान हो जाते है।" फिर वह जुलाहे से बोला—"जाओ भाई आज से तुम्हारा नाम नाम तीसमारखाँ रख दिया।"

बस उस दिन से जुलाहे के मिजाज और भी सात आसमान पर चढ गये। बात-बात पर वह अपने अडोस-पडोस से उलझ पडता कि —"क्या समझा हुआ है मुझे ? मैं कोई ऐसा वैसा नही हूँ जो तेरी धौंस सह लूगा। जरा जबान सम्भाल कर बोला कर। मैं तीसमारखाँ हूँ। कही गुस्सा आ गया तो हाथ चला बैठूंगा, फिर तेरी हड्डी-पसली का भी पता नही चलेगा।"

गाँव के छोकरे उसका खूब मजाक बनाते। उसे आते देखकर कह उठते—"भाइयो, जरा बच कर रहना—तीसमारखाँ आ रहे है।" उनकी बात सुन कर तीसमारखाँ सोचता, लोग-बाग सचमुच मे मुझसे दबते है। वह सिर पर पगड़ी सम्भालता हुआ उनके पास आ जाता और कहता—"दोस्त, क्या बताऊँ—आसपास के गाँव में तो हमारे जोड का तो कोई है नही।"

एक दिन गाँव के एक पडोसी भाई ने जुलाहे से कहा—"भाई तीसमारखाँ ! तुमने इतनी शोहरत कमा ली है। अब तो तुम्हें अपनी किस्मत आजमाने

के लिये किसी राज-दरबार में जाना चाहिये। सुनते है कोई-कोई राजा-महाराजा बडे गुणग्राही होते है। भगवान ने चाहा तो तुम कुछ ही दिनो मे सिपहसालार बना दिये जाओगे। बात भी ठीक है, एक झाँपडे मे तीसो को मार गिराना तुम्हारे जैसे तीसमारखाँ का ही काम था।"

यह बात तीसमारखाँ को जच गई। वह यह नही समझा कि यह पड़ोसी मुझे गाँव से टरका कर मेरा मकान हथियाना चाहते है। बस दूसरे ही दिन वह अपना थोडा बहुत सामान एक गठरी में बाँध कर चल दिया। चलते-चलते एक देश मे पहुँचा और राज-दरबार मे हाज़िर हुआ। परिचय पूछे जाने पर वह बोला—"महाराज! मै वीर शिरोमणि तीसमारखाँ हूँ। एक ही झाँपडे मे मैने तीस को मार गिराया है। हजूर के दरबार में कुछ उम्मीद लेकर हाजिर हुआ हूँ।"

राजा ने पूछा—"तुम क्या काम करोगे?"

तीसमारखाँ बोला—"महाराज! मै मामूली काम करना तो अपनी शान के खिलाफ समझता हूँ। जहाँ आप की सेना असफल रहे, वहाँ मुझे भेजा जाय। फिर देखियेगा कि मै क्या-क्या करतब दिखाता हूँ।"

उसकी बातचीत से राजा का बडा मनोरजन हुआ। उन्होने सोचा—'ठीक है। चलो जब तक यहाँ इसके लायक कुछ काम नही है, इसकी बातचीत से ही सबका मनोरंजन हुआ करेगा। जो मनुष्य एक झाँपड़े में तीस को मार गिराये, उसमे अवश्य कुछ खासियत होगी।' कुछ ही दिनों में तीसमारखाँ राजा का बडा मुँह चढा मुसाहब बन गया। जब कोई काम आ पडता तीसमारखाँ दूसरो पर हुक्म चला देता, इससे राजा का मन्त्री उससे बहुत चिढने लगा था। एक दिन मत्री ने तीसमारखाँ को अपने घर खाने पर बुलाया। इतने में उसे खबर मिली कि राजा का एक हाथी पागल हो गया है और उसने नगर में बहुत से सिपाहियो को भी मार डाला है। मौका देख कर मत्री ने राजा से कहा—"महाराज! हाथी ने तो सेना को भी कुचल दिया। वह किसी के भी काबू नही आ रहा है। आप तीसमारखाँ को उसे मारने के लिये भेजें।" राजा को यह बात जच गई।

तीसमारखाँ ने सोचा—'बस अब तो यहाँ से भाग चलने में ही खैर है।' उसने थाली मे से चार मीठी रोटियाँ उठा कर जल्दी से एक थैली में डाली और बोला—"अच्छा मन्त्री जी, चलता हूँ हाथी को मार कर तभी रोटी खाऊँगा।"

मन्त्री जी ने कहा—"हाँ, हाँ और दो रोटियाँ ले लीजिये।"

असल में उन रोटियो मे था जहर। मन्त्री तीसमारखाँ को अपने मार्ग का रोडा समझता था। राजा का मुँह चढा होने के कारण वह कई बार भरे दरबार में मन्त्री जी की मजाक बना चुका था। उसने सोचा किसी तरह इसे खतम किया जाय। इसलिये मीठी रोटियो में जहर डलवा कर उसने तीसमारखाँ को जीमने के लिये बुलाया था। पर रोटी खाने से पहले ही हाथी ने गडबड मचा दी।

इधर रोटी लेकर तीसमारखाँ जैसे ही सडक पर आया कि दूसरी ओर से वह पागल हाथी आ पहुँचा। हाथी को देखकर अपनी जान की खैर मनाता हुआ तीसमारखाँ सिर पर पाव रख कर भाग चला।

आगे-आगे तीसमारखाँ था और पीछे-पीछे हाथी। कुछ दूर भागते-भागते तीसमारखाँ के हाथ मे रोटियो की पोटली गिर पडी। गुड और घी की गन्ध पाकर हाथी रुक गया और उसने एक ही कौर मे वे छ की छ रोटियाँ खा ली। रोटियो मे बहुत तेज विष था। खाते ही हाथी चक्कर खा कर गिर पडा और मर गया। हाथी को गिरते देखकर तीसमारखाँ लौट पडा और जब उसे पूरी तौर से यकीन हो गया कि हाथी मर गया है तो वह उस पर चढ कर बैठ गया। इतनी देर में नगर मे यह खबर फैल गई कि हाथी को तीसमारखाँ ने मार गिराया है। हाथी के आसपास सब लोगो की भीड इकट्ठी हो गई। राज दरबार में पहुँच कर तीसमारखाँ ने खूब शेखियाँ मारी—"हुजूर, मैंने हाथी को बडी तरकीब से मारा है। पहले तो उसे भगाता-भगाता मैं शहर से बाहर ले गया। उसके बाद मैंने जैसे ही डपट कर उसे रुकने को कहा, तो सहम कर वह वहीं रुक गया। फिर मैंने दो ककडी मार कर उसे अधा कर दिया। बाद मे उसकी सूड पकड कर घुमा कर जमीन पर जो पटका तो चक्कर खा कर वह चारो खाने चित्त गिरा।"

यह सुन कर सब लोगो पर तीसमारखाँ का बडा रुआब छा गया। राजा ने उसे सचमुच मे अपनी सेना का सिपहसालार बना दिया। कुछ दिन बाद राज्य मे एक आदम-खोर शेर ने बहुत उत्पात मचा दिया। शेर के डर से शाम होते ही सब कोई अपने-अपने घरो का दरवाजे बन्द करके बैठ जाते थे। मौका देख कर एक दिन मन्त्री ने राजा से कहा—"महाराज! इस आदम-खोर शेर के कारण सब लोगो की बडी मुसीबत हो रही है। उसने हमारी सारी फौज को परेशान कर दिया है। उसके मारने का कुछ प्रबन्ध होना चाहिये।"

यह सुन कर राजा ने तीसमारखाँ की ओर देख कर कहा—"तीसमारखाँ जी आप जैसे बहादुर के होते हुये राज्य मे एक शेर सिर उठा जाये, यह तो

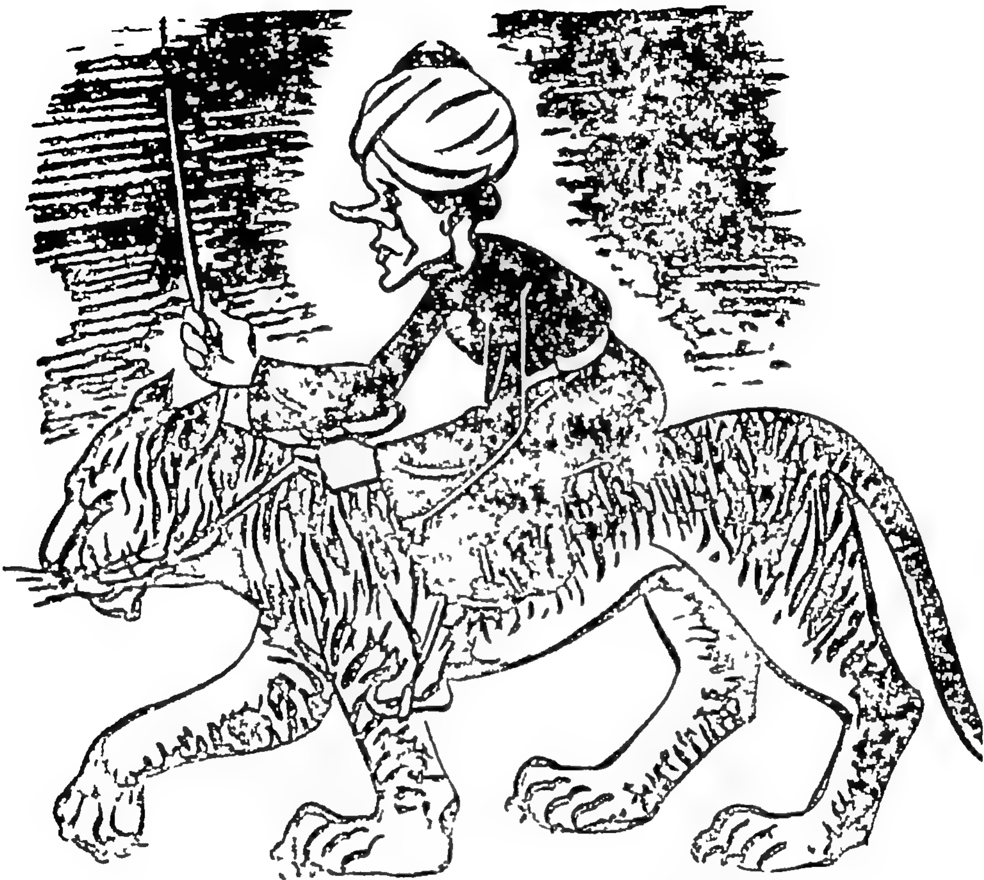
बडे अफसोस की बात है।" बस तीसमारखाँ को शेर मारने का काम सौंपा गया।

घर आकर तीसमारखाँ बडी सोच मे पडा कि अब क्या करूँ ? शेर का नाम सुन कर ही उसकी घिग्घी बध जाती थी—उसको मारने की बात तो कल्पना से परे थी। और कोई रास्ता न देख कर उसने सोचा कि कुछ रात बीतने पर चुपके से अपनी गठरी-मुठरी लेकर यहाँ से निकल चलूँगा। जब रात को सब सो गये तो तीसमारखाँ चुपके से घुडसाल मे गया और एक छोटा-सा टट्टू खोल लाया। वैसे तो वहाँ बडे-बडे घोडे खडे थे पर फौजी घोडे पर चढना तीसमारखाँ के बूते की बात नही थी। उस टट्टू पर जीन कस कर तीसमारखाँ ने सोचा कि शेर तो रात को शहर मे आता है, इसलिये जगल की राह पकडना ठीक होगा। जाडे के दिन थे। ठडी हवा चल रही थी तिस पर रास्ते मे बूदाबादी शुरू हो गई। रास्ते में एक झोपड़ी देख तीसमारखाँ ने सोचा जब तक पानी थमे यही रुकना चाहिये। बस उसने टट्टू को तो बाहर छोड दिया उसकी काठी आदि लेकर खुद झोपडी मे चला गया। उस झोपडी मे एक बुढिया रहती थी। सयोग से उस दिन शिकार की टोह मे शेर झोपड़ी के दरवाजे पर ही आकर दुबक कर बैठ गया। बातचीत मे बुढिया ने उससे कहा—"भैया, तुम इतनी रात हुये घर से निकले हो, रास्ते मे तो शेर का बडा डर है।"

यह सनकर, शेखी मारते हुए तीसमारखाँ बोला—"मै तीसमारखाँ शेर से नही डरता। मुझे तो केवल टपके (बरसात) का डर है"।

बाहर बैठा शेर यह बात सुन रहा था। तीन पहर रात बीत चुकी थी। इतने मे तीसमारखाँ को याद आया कि मै अपनी रुपयो वाली थैली तो घर ही भूल आया हूँ। उसने सोचा क्यो न दिन निकलने से पहले जल्दी से जाकर अपनी थैली ले आऊँ। बस वह जल्दी से काठी उठा कर बाहर आया, और दरवाजे पर ही टट्टू को खडा पाकर उस पर काठी कस दी और दे चाबुक, दे चाबुक मारता हुआ उसे नगर की ओर भगा लाया। इतने में दिन निकल आया था। तीसमारखाँ ने सोचा कि आज तो चुप मार जाओ, कल चलेगे। टट्टू को अस्तबल मे ही बाँध दिया जाय ताकि किसी को मेरे जाने का पता ही न चले। वह टट्टू को अगाड़ी और पिछाडी कस कर अस्तबल मे बाँध आया और खुद घर आकर सो गया।

असल मे वह टट्टू नही, परन्तु शेर था जिस पर तीसमारखाँ ने जीन कसी थी। अचानक अपने ऊपर जीन कस कर किसी को सवार होते देख



शेर को यह धोखा हुआ कि हो न हो वह मुझ से भी बली वही 'टपका' है जिससे इन्सान डरता है। और जो अब मुझ पर चढ़ बैठा है। और चाबुक खाकर तो शेर की होश हवास ही गुम हो गई।

शेर को यह धोखा हुआ कि हो न हो यह मुझ से भी बली वही 'टपका' है जिससे इन्सान डरता है। और जो अब मुझ पर चढ़ बैठा है। और चाबुक खाकर तो शेर की होश-हवास ही गुम हो गई। इधर तीसमारखाँ ने अब तक कभी शेर देखा ही नहीं था। वह उसे टट्टू के धोखे में अस्तबल में निडर होकर बाँध आया।

सुबह अस्तवल मे घोडो की हिनहिनाहट और फड़फडाहट सुन लोग उधर गये तो देख कर हैरान हो गये कि उनके बीच मे शेर बँधा हुआ है और इसी-लिये यह सब गडवड़ मची हुई है। वस फौरन शेर को मोटे-मोटे रस्सो से बाँध कर पिंजड़े में डाल दिया गया और तीसमारखाँ की जय के नारे लगाते हुये जलूस निकाला गया। अपने घर की एक खिडकी के पीछे छिप कर तीसमारखाँ ने सब वात जान ली। वस फिर क्या था ? तीसमारखाँ तीर तलवार कसकर दरवार मे पहुँचा और वोला—"महाराज। शेर के सग पहले तो मैंने खूब कुश्ती की, फिर सोचा कि इसे मार कर नही जीता ही पकड कर ले चलूँ तो ठीक है। वस इसकी पीठ पर चढ कर मैंने इसके दोनो कान पकड लिये और सीधा अस्तवल में लाकर ही दम लिया।"

यह सुन कर राजा ने तीसमारखाँ का ओहदा और वढा दिया और तन-ख्वाह भी दुगनी कर दी। इसी प्रकार कुछ दिन तो चैन से बीत गये पर फिर राज्य पर एक नई मुसीवत और टूट पडी। राज्य के एक पडोसी राजा ने भारी सेना लेकर देश पर चढाई कर दी। तीसमारखाँ घर बैठा अपनी सेना को लड़ाई करने का हुक्म देता रहा। शत्रु की सेना वेशुमार थी, उसने राजा की अधिकाश सेना काट कर धर दी। सारे देश मे त्राहि-त्राहि मच गई। जब वचने की कोई उम्मीद नही रही तो राजा ने तीसमारखाँ से कहा—"तुम्हारे रहते हम पर यह मुसीवत आये यह तुम्हारी शान के खिलाफ है, सेनापति जी। अगर तुम किसी प्रकार इस शत्रु को हरा कर हमारे राज्य और प्राणो की रक्षा कर सको तो मैं राजकुमारी से तुम्हारा विवाह कर दूँगा।"

इतने दिन दरवार में रह कर तीसमारखाँ को भी कुछ अक्ल आ गई थी। उसने सोचा अगर अव की भी किस्मत ने साथ दिया तो उम्र भर चैन की वशी वजाऊँगा। फिर उसने राजा से कहा—"मुझे एक वढिया घोडा दे और राज्य भर मे जितनी भेड़े हैं उन्हे जैसा मैं कहूँ उस प्रकार तैयार करवा दिया जाय।"

राजा ने हैरानी से पूछा—"तो क्या तुम विना सेना और हथियारो के लडोगे ?"

तीसमारखाँ वोला—"महाराज। आपकी सेना और हथियार कितने असफल रहे हैं यह तो आपने देख ही लिया। मैं आपके शत्रु की सेना को आज रात को ही गाजर की तरह काट कर रख दूँगा। वस जैसे मैं कहूँ वैसा किया जाय। मेरे लड़ने का ढंग अनूठा है।"

तीसमारखाँ के कहे के अनुसार सब भेडो के सिरो पर एक-एक जलती मशाल टिका कर बाँध दी गई। मुखिया भेड को आगे कर दिया गया। उनके पीछे एक घोडे पर तीसमारखाँ ने खुद को बँधवा लिया, क्योकि उसे डर था कि कही मुझे घोडा गिरा न दे। अगर मान लो मेरी चाल सफल नही हुई तो कम से कम घोडे को चाबुक मार कर मै लडाई के मैदान से भाग कर अपनी जान तो बचा सकूँगा। जब पूरी तैयारी हो गई तो आधी रात को जब कि शत्रु की सेना बेफिक्र होकर सो रही थी, भेडो के सिर पर मसाल जला कर उनको शत्रुओ के डेरो की ओर हाँक दिया गया। अगली वाली भेड जिधर को चल पडी सारा झुंड ही उधर को सिर हिलाता हुआ चल दिया और पीछे-पीछे तीसमारखाँ का घोडा चला। अपने डेरे की ओर असख्य मशालो को बढते हुए देख नीद मे अचानक उठे शत्रुओ ने समझा कि हम पर हमला हो गया है। मशालो के नीचे अधेरा था इस कारण उन्हे भेडें दिखाई नही दी। वे घबरा कर एक दूसरे पर ही टूट पडे। इधर भेडो मे भगदड मच गई। उनकी मशालो से डेरो मे आग लग गई। चारो ओर मार काट का हो-हल्ला सुन कर घोडा भी भागने लगे। इस भगदड मे तीसमारखाँ ने एक सूखे बबूल का तना पकड लिया। पेड उखड गया। घोडे की पीठ पर उस बबूल को रख कर तीसमारखाँ पेड की ओट मे सिमट कर बैठ गया। अब शत्रु सेना ने जितने तीर और बर्छे मारे सब पेड के तने मे जाकर गड गये उधर पेड की जड और काटेदार टहनियो से टकरा कर बहुत से शत्रु मारे गये। इस प्रकार सुबह होते तक शत्रु की सारी सेना तबाह हो गई।

दिन उगने पर राजा और प्रजा सब के सब यह देख कर हैरान थे कि शत्रु के डेरे जले पडे है और मैदान मे विरोधी दल का एक सिपाही भी जीवित नही बचा। राजा ने पूछा—"तीसमारखाँ जी! भला रात को बिना हथियार के आप कैसे लडते रहे?"

तीसमारखाँ बोला—"महाराज! हमारे जैसे वीरो को हथियार की जरूरत नही होती। मैने पेड का तना ही उखाड लिया था और उसी को गदा बना कर शत्रुओ के सिर फोड डाले। विश्वास न हो तो देख ले उस पेड की दशा। तीर और भालो की चोटो से पेड छलनी हुआ पडा है।

चारो ओर तीसमारखाँ की जय! सिपहसालार की जय! की आवाजे सुनाई पडने लगी। राजा ने तीसमारखाँ को सम्मानित करने के लिये दरबार किया और कहा—"तीसमारखाँ जैसे वीर इस राज्य में न कभी

हुये न होंगे। उनकी बहादुरी से ही हम यह लडाई जीत सके है। इसलिये शत्रु देश का राज्य इन्ही को इनाम दिया जाता है।"

इसके वाद वडी धूमधाम के साथ तीसमारखाँ का राज्य तिलक हुआ और राजा की वेटी से उसका विवाह हो गया।

इसके वाद वडी धूमधाम के साथ तीसमारखाँ का राज्य तिलक हुआ और राजा की बेटी से उसका विवाह हो गया। भविष्य में जब कभी लडने का मौका आया तीसमारखाँ ने यही कह कर वात टाल दी—"लडाई लडना राजाओ का काम नही है। राजा तो वैठ कर हकूमत करते है। प्रजा का का काम है लडना-मरना।"





रीछ रानी ने आखथू आखथू करते हुए कहा—'राम राम! यह शक्कर लाये हो या क्विनांइन? मेरा तो तमाम मुंह कड़वा हो गया।'

रीछ बाबू झुंझला कर बोले—'वाह क्या कहना! तुम्हारी तो अजीब समझ है।

परमिट की शक्कर*

जहूर बख्श

जब बाजार में शक्कर बिकना बन्द हो गई, तो एक दिन रीछो रानी बोली—"मैं तो गुड़ खाते-खाते ऊब उठी। कितने दिन बीत गए, शक्कर देखने को भी नहीं मिली। जब देखो तब गुड़ के ढेले उठा लाते हो। भला बिना परमिट

* चीनी

के कौन शक्कर दिए देता है ? तुम इतना भी नही कर सकते कि जरा कण्ट्रोल के दफ्तर तक चले जाओ, और एक परमिट वनवा लाओ।"

रीछू बाबू ने मुसकरा कर कहा —"तो गुड़ कौन बुरा होता है ! शक्कर से भी अधिक मीठा और मजेदार —एक ढेला चबालो, तो मुंह और पेट मिठास से भर जाता है।"

रीछी रानी ज़रा जोर से बोली —"मै कब कहती हूँ कि गुड़ बुरा होता है। परन्तु एक चीज खाते-खाते भी तबियत ऊब उठती है। सुना है, सियार-चन्द कण्ट्रोल दफ्तर का बाबू है, और परमिट बनाता है—वही तुम्हारा पुराना मित्र। ज़रा चले जाओ न उसके पास, वह तो तुम्हें देखते ही परमिट बना देगा।"

रीछू बाबू ने सर खुजाते-खुजाते कहा—"जाने को तो मै उसके पास अभी चला जाऊँ, परन्तु तुम उसे जानती नही। वह अव्वल नम्बर का लालची और बदमाश है। बिना पैसा लिए कभी किसी का काम नही करता। मुझे देखते ही टालमटोल कर देगा। नतीजा यह होगा कि मै उससे लड पड़ूँगा, और बैठे-ठाले झगड़े मे फँस जाऊँगा।"

रीछी रानी बिगड़ कर बोली—"न गए, न आए, लगे यही वैठे-बैठे वहाने गढ़ने। भला वह टालमटोल कैसे कर देगा ? आखिर सरकार उसे तनख्वाह किस बात की देती है ? चाहे इस कान सुनो, चाहे उस कान—इस तरह की बातें वनाने से काम न चलेगा। यदि आज शक्कर का परमिट वना कर न लाए, तो मैं शाम को खाना-दाना भी न पकाऊँगी। समझे ?"

अब रीछ बाबू क्या जवाब देते ? घुर-घुर करते चले, और कण्ट्रोल के दफ़्तर में पहुँचे। उनको देखते ही बाबू सियारचन्द मुसकरा कर वोले—"आइए-आइए, रीछू बाबू ! खैरियत तो है ? कहिए कैसे आना हुआ ? वह कुर्सी ले लीजिए न।"

रीछू बाबू कुर्सी पर बैठते-बैठते बोले—"थोड़ी-सी शक्कर चाहिए। कोई तकलीफ न हो, तो एक परमिट वना दीजिये।"

वाबू सियारचन्द ने आँखों पर चश्मा चढ़ाते-चढाते कहा—"अभी लीजिए ! परन्तु यह तो वताइए कि आप को शक्कर खाने के लिए चाहिये या पीने के लिये ?"

रीछू वाबू ने पूछा—"क्या पीने के लिये भी कोई शक्कर मिलती है ?"

बाबू सियारचन्द ने अगले दाँत बाहर निकालते-निकालते जवाब दिया—"जी हाँ! बिलकुल पानी के समान पतली! सरकार ने अभी-अभी निकाली है। इतनी मजेदार होती है कि बस, पूछिए मत। यदि आप एक बूंद भी चख लेंगे, तो फिर कभी भूल कर भी सूखी शक्कर का नाम न लेंगे।"

रीछू बाबू खुश होकर बोले—"बस-बस, आप तो मुझे इस नई शक्कर का ही परमिट दे दीजिये। मजे से चुसकियाँ ले-लेकर, पिऊँगा, और आपके गीत गाऊँगा।"

बाबू सियारचन्द ने चट-पट कागज़ का एक टुकडा लिखा, रीछू बाबू की तरफ बढाया और कहा—"लीजिए, एक शीशी लेकर डॉक्टर वानरचन्द के पास चले जाइए, और इस नई शक्कर के मजे लूटिए।"

रीछू बाबू कुछ घबरा कर बोले—"डाक्टर वानरचन्द! वह शक्कर देंगे भी—टाल-मटोल तो न करेंगे?"

सियार बाबू ने सर मटका कर जवाब दिया—"कैसी बातें करते हैं आप! देंगे क्यों नहीं? हजार बार देंगे, और मुफ्त देंगे। सरकारी हुक्म है कि दिल्लगी? आप जाइए तो सही।"

यह सुनते ही रीछू बाबू मारे खुशी के उछल पडे, और बोले—"मुफ्त! अहा हा मुफ्त! सियार बाबू यह आपने बडे मजे की बात सुनाई! सच मानिए, मेरी तबियत बाग-बाग हो गई। बस, अब रोज चुसकियाँ ले लेकर शक्कर पिऊँगा, और आपके गीत गाऊँगा।"

इसके बाद रीछू बाबू झूमते-झामते घर लौटे। उनको देखते ही रीछी रानी झट से बोल उठी—"ले आए परमिट? देखो सच कहना, अब तो मिल जाएगी न हम लोगों को शक्कर?"

रीछू बाबू ने अकड कर कहा—"हाँ-हाँ, ले आया। यह देखो न! तुम मुझे समझती क्या हो!"

रीछी रानी हँस कर बोली—"मैंने कहा था न! परन्तु तुम तो यहीं बैठे-बैठे बहाने गढ रहे थे। बाबू सियार चन्द ने टालमटोल तो नहीं की?"

रीछू बाबू ने तन कर जवाब दिया—"टालमटोल? अव्वल नम्बर का लालची और दुष्ट है। भला वह बिना टालमटोल किए रह सकता था! परन्तु मैं कब उसका पीछा छोडने वाला था, बिगड उठा—"सीधी तरह परमिट

बनाना हो, तो बना दो, नही तो सरकार मे रिपोर्ट कर दूँगा। आखिर उसने परमिट दिया और सर झुका कर दिया। बस, अब झट-पट एक बडी-सी शीशी मेरे हवाले करो तो मै दौड कर शक्कर ले आऊँ।"

रीछी रानी मुंह बना कर बोली—"शीशी! भला शीशी की क्या ज़रूरत? लोग शक्कर रुमाल मे लाते हैं, थैली मे लाते है, शीशी में शक्कर लाने की बात आज तुम्हारे मुँह से सुनी!"

रीछी बाबू ने मुंह बना कर कहा—"तुम जानती समझती तो कुछ हो नही, बस बेकार पट-पट करने लगती हो! सरकार ने एक नई तरह की शक्कर निकाली है—पानी के समान पतली शक्कर, जो चुसकियाँ ले-लेकर पीने के काम आती है। अब खड़ी-खडी सुनती क्या हो, शीशी लाओ न!"

इस तरह शीशी लेकर रीछू बाबू डाक्टर बानर चन्द के पास पहुँचे। उनको देखते ही डाक्टर बानरचन्द मुँह मटकाकर बोले—"ओहो! रीछू बाबू है—आइए-आइए! कहिए, खैरियत तो है?"

रीछू बाबू ने कुर्सी पर बैठते-बैठते कहा—"बस, एक शीशी शक्कर दे दीजिए। यह लीजिए परमिट, अभी-अभी कण्ट्रोल दफ्तर से लाया हूँ, बाबू सियार चन्द ने दिया है। मजे से चुसकियाँ ले-लेकर पीऊँगा, और आपके गीत गाऊँगा।"

डाक्टर बानरचन्द परमिट पढते-पढते मुसकरा कर बोले—"अभी लीजिए। लाइए, शीशी इधर दीजिए।"

रीछू बाबू ने शीशी आगे बढाते-बढाते सवाल किया—"सुना है, डाक्टर साहब, यह शक्कर बडी मजेदार होती है?"

डाक्टर बानरचन्द ने शीशी लेते-लेते जवाब दिया—"बस पूछिए मत, बडी मजेदार होती है। एक बूंद चख लीजिए, घण्टो मुंह मे मिठास भरी रहेगी। हाथ कगन को आरसी क्या—देखिए न।"

यह कहते-कहते डाक्टर बानरचन्द ने एक शीशी खोली, और उसमे से दो-तीन बूंदे रीछू बाबू के मुँह मे गिरा दी। रीछू बाबू मारे खुशी के नाचते-नाचते बोले—"अहाहा! अहाहा!! बडी मज़ेदार शक्कर है यह। मेरी तो तबियत मस्त हो गई, बस पूरी शीशी भर दीजिए, डाक्टर साहब··· पूरी शीशी।"

डाक्टर बानरचन्द ने शीशी भर कर रीछू बाबू को देते-देते कहा—"लीजिए और जब तबियत चाहे, आकर ले लिया कीजिए।"

रीछू बाबू शीशी लेकर चले, तो मारे खुशी के उनके पैर जमीन पर नही पड रहे थे। घर पहुँच कर उन्होने शीशी रीछी रानी की ओर बढाई



रीछू बाबू ने कहा—"बस, एक शीशी शक्कर दे दीजिये । ये लीजिये, परमिट, अभी अभी कंट्रोल दफ्तर से लाया हूँ, बाबू सियार चन्द ने दिया है । मजे से चुसकियां ले-लेकर पीऊँगा और आपके गीत गाऊँगा ।"

मास्टर वानर चन्द परमिट पढते-पढते मुस्करा कर बोले— "अभी लीजिये, लाइए, शीशी इधर दीजिये ।"

और कहा—"लो, जी भर कर पियो। मुफ्त लाया हूँ मुफ्त और डाक्टर बानरचन्द ने कह दिया है कि जब तबियत चाहे, शीशी भर ले जाया करो।"

रीछी रानी शीशी लेते-लेते मुंह बना कर बोली—"मुफ्त ?"

रीछू बाबू ने मूछों पर ताव देते-देते कहा—"हाँ, हाँ मुफ्त ! तुम अभी मुझे समझती क्या हो ?"

रीछी रानी मुस्करा कर बोली—"खूब समझती हूँ, तुम बडे बहादुर, बड़े चतुर और बडे बुद्धिमान हो !"—यह कहते-कहते जो उन्होने थोड़ी-सी शक्कर कटोरी मे डाल कर पी, तो फौरन उछल कर पिच्च से ज़मीन पर उगल दी, और आखथू-आखथू करते हुए कहा—"राम राम ! यह तुम शक्कर लाए हो या क्विनाइन ? मेरा तो तमाम मुंह कडवा हो गया—जैसे किसी ने उसमे ज़हर-ही-ज़हर घोल दिया हो। बस देख ली तुम्हारी बहादुरी और समझदारी।"

रीछू बाबू झुंझला कर बोले—"वाह ! क्या कहना ! तुम्हारी तो वही समझ है कि बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद ! समझती भी हो इस शक्कर के मज़े ? मैंने तो डाक्टर बानरचन्द के यहाँ सिर्फ दो बूंदें चखी थी, तभी से मेरे मुंह मे मिठास घुली हुई है। अच्छा लाओ, मैं अभी थोडी-सी पीकर तुम्हें बताए देता हूँ।"

यह कहते-कहते उन्होने कटोरी भरी, और गट-से गले में उतार ली। परन्तु फौरन आखथू-आखथू करते हुए कहा—"ऐं ! यह तो क्विनाइन है—बिलकुल क्विनाइन। हाय-हाय ! सियारचन्द ने मिल कर मुझे तो पूरा बुद्धू बना दिया। अब देखूंगा उनको, मैं भी रीछू बाबू कहलाता हूँ। तुम अभी मुझे समझे क्या हो ?"



चालाक जाट

मन्मथनाथ गुप्त

एक जाट के तीन लडके थे। जाट ने चाहा कि पहले से ही बटवारा हो जाय तो अच्छा रहे। पर उसका सोचा-सोचाया रह गया, और वह मर गया। जब तक पिता जीवित थे, तब तक कोई खास झगडा नही हुआ, पर पिता के उठ जाते ही बटवारे का प्रश्न उठा। बडे दो भाई तो विवाहित थे, पर छोटे भाई का अभी विवाह नही हुआ था।

बडे भाइयो ने कहा—"तीन भाई है, तीन हिस्से कर लो इसमे झगडा ही क्या है ?"

पर छोटे भाई ने कहा—"मै तो आधा हिस्सा लूंगा।"

भाइयो ने बहुतेरा समझाया कि उसका हिस्सा केवल एक तिहाई है, पर यह बात उसकी समझ मे नही आई, और वह अपनी जिद पर डटा रहा। तब बडे भाइयो ने कहा—"जाने दो यह नासमझ है, इसे आधा हिस्सा दे दिया जाय।"

पर उन लोगो ने छोटे भाई से कहा—"जाओ पहले व्याह कर लो तब आधा हिस्सा मिलेगा।"

अब छोटा भाई विवाह करने के लिये चला। उसकी गाँठ मे केवल एक अधेला था इसे लेकर वह नाई के पास पहुँचा और बोला—'ताऊ, मेरे साथ चलो मै शादी करने जा रहा हूँ।"

नाई ने पूछा—"पास मे रुपये कितने है ?"

उसने बताया कि अधेला है। इस पर नाई ने कहा—"एक अधेले मे कही शादी होती है ?"

जाट बोला—"तू फिक्र मत कर। मै अपना सारा बन्दोबस्त कर लूंगा।"

नाई तो पुराना था, नमक खाया हुआ था, साथ कैसे छोडता ? इस लिये साथ चला। वे दोनो एक बाजार मे पहुँचे। वहाँ जाट ने नाई से पूछा—'ताऊ शादी के लिये जिन-जिन चीजो की जरूरत हो, बताओ।"

नाई ने कहा—"यो तो बहुतेरी चीजो की जरूरत होती है, पर सालियाँ सबसे पहले चीग और उगालदानियो की माँग करती है।"

नाई ने इसलिये ज्यादा चीजे नही बताई कि वह जानता था कि इसके पास है तो सिर्फ एक अधेला, लेना-देना कुछ है नही, इसलिये थोडे मे छुट्टी कर लो।"

जाट एक पन्सारी की दुकान पर गया, और वहाँ अधेला देते हुए अपनी चादर विछा कर बोला—"लौंग और इलायचियाँ वाँध दो ।"

दुकानदार ने उसको सिर से पैर तक देखा, और सोचा कि यह कैसा आदमी है कि अधेले के लौंग और इलायची के लिये चादर विछाता है। पर बोहनी का समय था, उसने अधेले को अपने बक्स में डाल दिया, और उसे दो इलायची और दो-चार लौंग देने लगा ।

इस पर जाट ने कहा—"मैंने तो सोने का अधेला दिया था, तुम मुझे दो इलायची कैसे दे रहे हो ?"



जाट एक पंसारी की दुकान पर गया, और वहाँ अधेला देते हुए अपनी चादर विछा कर वोला– "लौंग और इलायचियाँ वाँध दो।"

इस पर दोनो मे लडाई शुरू हो गई। आसपास के दुकानदार और राह चलने वाले इकट्ठे हो गये। दोनो अपनी-अपनी हाँकने लगे। अन्त में लोगों ने यही फैसला किया कि भला अधेला देकर कभी कोई चादर फैलाता है, इसलिये जाट ने सोने का अधेला दिया होगा। जब यह निर्णय हो गया तो दुकानदार को मानना पडा, और जाट को एक रुपये की लौंग-इलायची मिली, और चौदह रुपये नकद मिले।

वहाँ से वे एक गाँव में पहुँचे तो वहाँ एक कुयें के पास स्त्रियाँ आपस में बातें कर रही थी। उसने छिप कर उनकी बातें सुनी। उनकी बातो से मालूम हुआ कि गाँव के नम्बरदार की लडकी का आज गौना होनेवाला था, पर किसी कारण से उसका दामाद न आ सका। नम्बरदार की स्त्री बडी चिन्तित थी।

उन स्त्रियो की बात-चीत से जाट को यह भी पता लगा कि शादी कई साल पहले हुई थी, और अब किसी को यह याद न था कि दामाद का चेहरा कैसा है। कुयें के पास की कोई स्त्री उसे गोरा बता रही थी तो कोई साँवला।

थोडी ही देर में जाट नम्बरदार के घर पहुँचा और बोला—"मैं लडकी विदा कराने आया हूँ। दिन में इसलिये नही आया कि छुट्टी नही मिली। मेरे साथ यह मेरा नाई भी है।"

दोनो की बडी आवभगत हुई। खाने को बहुत बढिया पकवान मिले, और रात ही मे विदाई की तैयारी होने लगी। दिन चढते तक लडकी विदा कर दी गई, और साथ मे बहुत-सा सामान भी दिया गया। एक गाडी पर लडकी और दामाद चले और नाई पीछे-पीछे चला। यो तो जाटो मे घोडी देकर विदा करने का रिवाज है, पर जाट ने कहा कि उसे घोडी चढने की इच्छा नही है।

थोडी दूर जाकर जाट स्वय तो नीचे उतर पडा, और नाई को गाडी पर बैठा दिया। उसके कन्धे पर एक कम्बल भी था। गाडी चलने से पहियो के जो निशान बन रहे थे, वह उन्हें पीछे से मिटाता जा रहा था।

जिस समय जाट नम्बरदार के घर गया था, उस समय नम्बरदार नही था। विदा कराते समय भी नही था। जब वह घर लौटा तो सारा वृत्तान्त सुन कर दामाद से मिलने के लिये व्याकुल होकर घोडे पर दौडा। निशान मिट जाने पर भी वह जल्दी ही उस गाडी के पास आ गया, और जाट से पूछा यह कौन है?

जाट ने कहा—"मैं ऐसे ही कोई हूँ यदि तुम्हें किसी की तलाश है तो पेड पर चढ कर देखो, यहाँ से दूर तक दिखाई देगा।"

नम्बरदार ने वैसा ही किया, तो वह जाट नम्बरदार के घोडे पर सवार हो गया। यहाँ से उसने सारा किस्सा बता दिया और बोला—"तुम्हारी घर में लडकियाँ और है, उनमें से किसी को उस जमाई को दे देना। मुझे तुम अपना जमाई मान लो।"



सब वातो को सोचकर नम्वरदार ने उसकी वात मान ली और वोला— "अच्छी वात है जव यह सव हो ही गया तो मैं तुम्हें अपना जमाई मानता हूं।"

सव वातों को सोच कर नम्वरदार ने उसकी वात मान ली और वोला—"अच्छी वात है जव यह सव हो ही गया तो मैं तुम्हे अपना जमाई मानता हूं"—कह कर वह घर चला गया।

छोटा भाई अपनी दुलहिन को लेकर घर पहुँचा, और वोला—"भाइयो अव आधी जायदाद दो।"

भाई समझते थे कि न नौ मन तेल होगा और न राधा नाचेगी, न छोटे भाई का व्याह होगा न उसे आधी जायदाद देनी पड़ेगी। पर वह अव शादी करके लौट आया तो उन्होने कहा—"कचहरी चलो।"

अव तीनो कचहरी चले। रास्ते मे भूख-प्यास लगी, तो उन्होने कहा—"छाछवाछ पी लें।"

वे एक जाट के घर पहुँचे। पहले वडा भाई भीतर गया। जाटनी वोली—"छाछ तैयार है, पर कोई वारपार की बात सुनानी पडेगी। न सुना पाओगे तो पाँच जूते मारूँगी।"

वडे भाई ने छाछ पी ली और जूते खा लिये, मझले भाई ने भी ऐसा ही किया। अव छोटे भाई की वारी आई थी। उसने छाछ पी ली तो जाटनी जूता उठाकर उसे मारने को तैयार हुई। तव छोटे भाई ने कहा—"तुम जूता क्यो मार रही हो ? मै एक नही सौ ऐसी वात सुनाऊँगा। पर पहले अपनी इज्ज़त तो वचा लो। मै कही भागा थोडे ही जाता हूँ।"

जाटनी वोली—"मेरी इज्ज़त को क्या हुआ ?"

छोटा भाई वोला—"सामने के दुकानदार ने सव को गुड वाँटा, और तुम्हारे दरवाज़े पर आकर तुम्हे सौ गालियाँ देकर चला गया।"

गाली का नाम सुन कर जाटनी लडने के लिये दौडी हुई गई। उधर घर का मालिक जाट आया तो छोटे भाई ने कहा—"दुकानदार जाटनी को वुला ले गया है।"

इस पर घर का मालिक, विना कुछ पूछताछ किये, जाकर जाटनी को मारने लगा। जाटनी रोती हुई आई तो उधर से जाट की लडकी वाहर से आई, तो छोटे भाई ने कहा—"तुम्हारे मामा जी मर गये इसलिये तुम्हारी माँ रो रही है।"

इतना कहना था कि वह लडकी भी रोने लगी, और उससे पूछ कर वाकी सव घरवाले रोने लगे। एक फकीर आया तो उसे भी छोटे भाई ने यह कह कर रोने मे शरीक करा दिया कि माँगने से दिन भर मे चार आने मिलेंगे, यहां रोओगे तो आठ आने मिलेंगे।

इस पर भयकर हल्ला हुआ। जव कुछ देर तक रोना-पीटना हो गया तो लोगो ने पूछा कि आखिर वात क्या है। घर की मालकिन ने कहा कि मेरा दामाद मर गया है, और उसकी लडकी ने कहा कि मै तो समझी कि मामा जी मर गये है।

जाटनी समझ गई कि यह सव छोटे भाई की वदमाशी है। तव उसने छोटे भाई से हार मानी। यहां से निकले तो वडे भाइयो ने कहा—"यह तो वडा चालाक है, इससे कौन पार पायेगा। इसे विना कचहरी गये आधी जायदाद दे दो।"

इस प्रकार छोटे भाई को आधी जायदाद मिल गई।

जूते में से

रामचन्द्र शर्मा

एक गाँव मे चार शेखचिल्ली रहते थे। एक वार अकाल पड गया और लोग भूखो मरने लगे। उन चारो ने सोचा कि यहाँ तो गुजारा होना मुश्किल है, परदेश जाकर कोई रोजगार करना चाहिये।

यह सोच कर वे अपना-अपना विस्तरा वगल मे दवा कर चल दिये। आगे चल कर एक जगल पडा। जगल रेहीला था। सारी जमीन रेह से सफेद ही सफेद हो रही थी। यह देख कर एक शेखचिल्ली वोला—"अरे भाई, रुक जाओ। गगा जी आ गई। दोपहर भी हो गया है। स्नान कर लो। खाना खा-पी कर और आराम करके चलेंगे।" और शेखचिल्ली वोले—"हाँ भाई, ठीक है। भूख भी लगी है। और थक भी गये है। आओ, नहा ले।"

फिर क्या था, चारों ने कपडे उतारे और लगे रेह मे लोटने। जब नगे शरीर मे काँस चुभते तो कहते 'मछलियाँ काट रही है,' कोई कहता—'मगर से वचे रहना', कोई कहता—'गहरे मे न जाना' और कोई चिल्लाता—'सव साथ ही साथ रहना।' इस तरह रेह मे लोटते-लोटते उन्हे वहुत देर हो गई। तव एक शेखचिल्ली वोला—"अरे भाई, निकलो। वहुत देर हो गई। जुकाम हो जायगा।" औरो ने भी कहा—"हाँ भाई, निकलो।" तव सव निकल आये।

आकर चारो ने कपडे पहने। इतने मे एक वोला—"अरे भाई, यह तो देख लो, कोई गगा जी मे डूवा तो नही है।" दूसरा वोला—"नही, कोई नही डूवा।" तीसरा वोला—"डूवता कैसे ? पानी ही कितना था ?" चौथा वोला—"सव तैरना जानते हैं।" पहले शेखचिल्ली ने कहा—"तैरनेवाले भी डूव जाते है। सव एक लाइन मे खडे हो जाओ, मै गिनूंगा।" इस पर सव एक लाइन मे खडे हो गये। पहला शेखचिल्ली गिनने लगा—"एक, दो, तीन" और वोला—"एक डूव गया, तीन ही रह गये।" दूसरा वोला—"तुमको गिनना नही आता। तुम लाइन मे खडे हो जाओ। मै गिनूंगा।" उसने भी तीन गिने। इसी प्रकार तीसरे और चौथे ने भी गिन कर देखा, परन्तु तीन ही होते थे। उनकी गलती यह थी कि वे अपने आपको नही गिनते थे। जो लाइन मे खडे थे, उन्ही को गिन लेते थे। जव

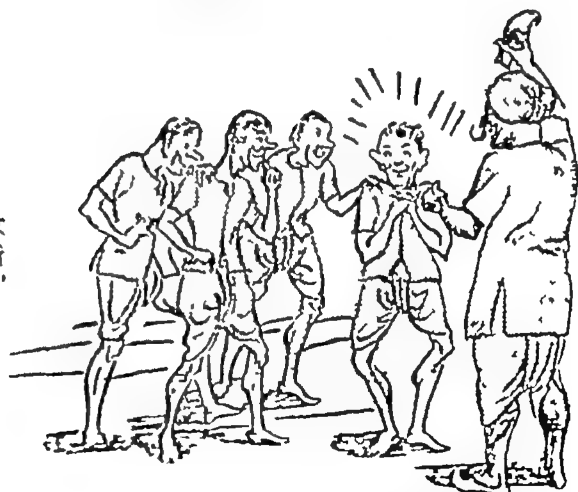
उन्होने कई-कई बार गिन कर देख लिया और तीन ही रहे, तो उन्हें निश्चय हो गया कि एक जरूर डूब गया और वे वही बैठ कर जोर-जोर से रोने लगे।

इतने मे सामने से घोडी पर एक जाट आ गया। उन चारो को बुरी तरह से रोते देख कर उसने घोडी का लगाम खीची और उनसे रोने का कारण पूछा। उन्होने बताया कि हम घर से चार साथी नौकरी के लिये चले थे। यहाँ गगा जी मे नहाये तो हमारा एक साथी डूब गया। हम उसी के लिये रो रहे है। जाट बोला—"तुम तो चारो मौजूद हो।" शेखचिल्ली बोला—"नही, चौधरी साहब! तीन है। हमने कई बार गिन कर देख लिया है।"

जाट बोला—"जरा गिनना।"

तब उनमें से एक उठ कर खडा हुआ और गिनने लगा—"एक, दो, तीन। एक, दो, तीन।"

जाट उनकी बेवकूफी समझ गया और बोला—"तुम सब लाइन में खडे हो जाओ, मैं गिन कर दिखाता हूँ।" जब वे लाइन में खडे हो गए तो जाट ने पैर [illegible] निकाला और पहले शेखचिल्ली के सिर मे मार कर बोला—



शेखचिल्ली के सिर मे जोर से जूता मार कर जाट ने कहा—"देखो यह 'चार'।"

"कहो 'एक'।" शेखचिल्ली बोले—"हां, एक।" फिर दूसरे के सिर में मारा और बोला—"कहो 'दो'।" वे बोले—"हां, 'दो'।" फिर तीसरे के

सिर मे मारा और बोला—"कहो 'तीन'।" तीसरे ने कहा—"तीन" चौथे शेख चिल्ली के सिर मे जोर से जूता मार कर जाट ने कहा—"देखो यह 'चार'।" शेखचिल्ली बड़े आश्चर्य और खुशी के साथ 'चार' कहते हुए जाट के पैरो पर गिर पडे और बोले—"चौधरी साहब ! चौथा आपके जूते मे से निकला है। आप वडे करामाती हे। हम तो आप ही के साथ चलेगे और आप ही की सेवा करेंगे।" जाट ने बहुतेरा मना किया परन्तु वे उसके साथ हो लिये। जाट ने कहा—"तुम एक शर्त पर मेरे यहाँ रह सकते हो। तुम्हे सिर्फ खाना-कपडा मिलेगा और कुछ न मिलेगा।"

शेखचिल्ली बोले—"चौधरी साहब ! हमे और कुछ नही चाहिये। हम तो आपके जूते में से निकले है। हम जीवन भर आपकी सेवा करेंगे।"

घर पहुँच कर जाट ने उनके काम बाँट दिये। उसने कहा—"एक तो मेरी बीमार माँ की सेवा करेगा, और तीन छप्पर बनाने के लिये जंगल से काँस के पूले लायेगे।" जो शेखचिल्ली माँ की सेवा के लिये रखा गया, उसको आवश्यक हिदायते देते हुये जाट ने कहा "देखो जी, तुम्हें हर समय माँ के पास रहना है। पानी पिला दिया करना और मक्खियाँ उड़ा[illegible]। माँ बहुत कमजोर हैं, कोई कष्ट न होने पाये।" पूले लाने वालो को हिदायते देते हुए उसने कहा—"देखो, तुम बैलगाड़ी ले जाओ और जं[illegible] पूले भर लाओ। पर, खबरदार, गाडी नई है, सँभाल कर ले जाना और सँभाल कर लाना।"

"बहुत अच्छा" कह कर चारो शेखचिल्ली अपने-अपने काम में लग गये। एक रोगिणी बुढिया के पास बैठ गया और शेष तीन बैलगाडी लेकर जगल को चल दिये।

जो शेखचिल्ली बीमार बुढिया की तीमारदारी के लिये तैनात किया था, उसने देखा कि बुढिया के मुँह पर मक्खियाँ भिनभिना रही है। कारण यह था कि उसे कुछ ही देर पहले दूध पिलाया गया था। शेखचिल्ली ने पखा हाथ मे उठाया और बुढिया को हवा करने लगा। एक मक्खी बहुत ढीठ थी। बार-बार उडाने पर भी नही मानती थी, और मुँह पर आकर बैठ जाती थी। जब जोर-जोर से हवा करने से भी वह न उड़ी तो शेखचिल्ली को गुस्सा आ गया। बोला—"ले सुसरी, अब मैं तेरा खात्मा ही करके छोड़ूँगा। तू ने बुढिया को बहुत परेशान किया है।" यह कह कर उसने पखा एक तरफ फेंक दिया और बुढिया के गाल पर बैठी हुई मक्खी को मारने के लिये एक

चपत जमाई। चपत इतने जोर से पड़ी कि बुढ़िया के प्राण-पखेरू उड़ गये। मक्खी तो न मरी पर बुढ़िया मर गई।

शेखचिल्ली को यह पता न था कि बुढ़िया मर गई है। देर काफी हो चुकी थी, इसलिये उसने बुढ़िया से पूछा—"माँ, पानी पियोगी ?" जब कोई उत्तर न मिला तो उसने चम्मच से उसके मुँह में पानी डाला। पानी इधर-उधर बह गया, दुबारा डाला, वह भी बह गया। तिबारा डाला, वह भी बह गया और तकिया भी भीग गया। इतने में जाट आ गया और शेखचिल्ली से बोला—"अब माँ की तबियत कैसी है ? ठीक है न ?"



जब जोर-जोर से हवा करने से भी वह मक्खी न उड़ी तो शेखचिल्ली को गुस्सा आ गया। बोला—"ले ससुरी, अब मैं तेरा खात्मा ही करके छोड़ूँगा। तूने बुढ़िया को बहुत परेशान किया है।"

शेखचिल्ली बोला—"पानी नहीं पीती।" जाट ने पास जाकर देखा तो मालूम हुआ कि माँ का सारा शरीर ठंडा हो गया है और न मालूम कब से मरी पड़ी है। वह शेखचिल्ली पर बहुत बिगड़ा और रोता हुआ बाहर चला गया।

थोड़ी देर बाद बाकी तीनों शेखचिल्ली भी एक गठरी में लोहे की कीलें और पत्तियाँ लिये आ गये। जाट ने पूछा—"गाड़ी कहाँ खड़ी कर दी ?" शेखचिल्ली बोले—"चौधरी साहब ! गाड़ी तो आपकी परम धाम को चली गई। पुर्जे हम बीन लाये हैं।" जाट उनका बेतुका उत्तर न समझ सका और जोर से नाराज होकर बोला—'क्या मतलब है तुम्हारा ? ठीक-ठीक क्यों नहीं बताते ?"

शेखचिल्ली बोले—"मतलब यही है कि गाडी जल गई और उसकी हड्डी पसली जो बाकी रह गई थी हम ले आये है।"

जाट बोला—"गाडी कैसे जल गई ?"

शेखचिल्ली बोले—"चौधरी साहब ! सुनिये। आपकी आज्ञानुसार हम गाडी को जगल मे ले गये थे। वहाँ काँस के फूलो से उसे चकाचक भर दिया। परन्तु जब बैल जोत कर चलने लगे तो गाडी चर्र-चर्र करने लगी। हमने सोचा, इसके पेट मे दर्द हो रहा है, इसलिये कराह रही है। शायद पानी पिलाने मे कुछ शाति मिले, यह सोच कर हमने उसे नदी मे खूब पानी पिलाया और थोडा नहला भी दिया ! हमारा नहलाना था कि उसकी कराहट और बढ गई और हम बडे सोच में पड गये। हमने समझा गाडी को ठड लग गई है इसलिये इसे तपा देना चाहिये। यह सोचकर हमने दियासलाई से उसमें आग लगा दी। आग लगते ही गाडी जल गई, और पूले भी जल गये। बैल अधजले होकर जगल मे भाग गये। जब गाडी भस्म हो गई तो हमने उसे पानी मे बहा दिया और जो कील-पत्ती बची थी उसे अपने साथ सुरक्षित ले आये है। लीजिये यह गठरी।"

यह किस्सा सुनकर जाट को बडा क्रोध आया और बोला—"तुम सब के सब बेवकूफ हो। चले जाओ मेरे यहाँ से। एक ने माँ को मार दिया और तुम तीनो ने गाडी-बैल जला दिये। मेरा बहुत नुकसान हो गया। अब मैं तुम्हे न रखूँगा।"

जब उन्होने जाट को बहुत क्रुद्ध देखा तो उसके पैर पकड लिये और गिडगिडाते हुए बोले—"चौधरी साहब ! हम तो आपके जूते मे से निकले है। हम कहाँ जा सकते है ? हम तो आप ही के यहाँ रहेगे।"

जाट को उन पर तरस आ गया और बोला—"देखो, आगे से ऐसी बेवकूफी मत करना। काठ की गाडी के पेट मे भी कही दर्द हुआ करता है ? गाडी नई थी, इसलिये चर्र-चर्र कर रही होगी। तुमको पता है उसके जलने से मुझे कितना नुकसान हुआ है ? खैर ! अब तो मै तुम्हें माफ किये देता हूँ। आगे ध्यान रखना। जाओ, माँ की तेरहवी के लिये पास के गाँव से घी खरीद लाओ।" जाट की आज्ञा पाकर और रुपये और कुप्पियाँ लेकर चारो शेखचिल्ली घी खरीदने चल दिये।

उन्होने गाँव मे जाकर चार कुप्पी घी खरीदा। जब घी खरीद चुके तो चारो ने एक-एक कुप्पी उठा ली और अपने-अपने सिर पर रख कर चल

दिये। रास्ते में एक बाग पडा। दोपहर हो चुका था, धूप बहुत कडी पड रही थी। इसलिये थोडी देर विश्राम के लिये रुक गये। कुप्पियाँ उतार कर जमीन पर रख दी और उन्ही के पास बैठ गये। धूप की गर्मी से कुप्पियो का घी पिघल गया था और पानी जैसा पतला हो गया था। एक शेखचिल्ली ने यो ही अपनी कुप्पी में झांक कर देखा, तो घी मे उसका चेहरा दिखाई दिया। शेखचिल्ली डर कर पीछे हट गया और जोर से चिल्लाया 'अरे, भूत!' दूसरे शेखचिल्ली ने अपनी कुप्पी में झांका तो उसे भी अपना मुँह दिखाई दिया। वह भी चिल्लाने लगा—"अरे, मेरी कुप्पी में भी है।" तीसरे और चौथे शेखचिल्ली ने भी इसी प्रकार अपनी-अपनी कुप्पी मे झाँक कर देखा और वे भी घी में अपने चेहरे की परछाइं देखकर उसे भूत समझने लगे। चारो बडे आश्चर्य मे थे कि कुप्पियो मे भूत कहाँ से आ गये। उनको बडी चिन्ता हुई और सोचने लगे कि क्या किया जाय, भूत तो खा जायेगा। इतने में एक शेखचिल्ली बोल उठा—"अरे, मेरी कुप्पी का भूत बडा भयानक है। कैसा घूर-घूर कर देख रहा है। अरे रे, बचाओ, बचाओ, खाने दौड रहा है।" उसकी चिल्लाहट सुनकर दूसरा शेखचिल्ली जल्दी से उसके पास आया और



इतने में एक शेख-चिल्ली बोल उठा-"मेरी कुप्पी का भूत बडा भयानक है। कैसा घूर-घूर कर देख रहा है। अरे अरे, बचाओ, बचाओ, खाने दौड रहा है।"

भूत को देखने के लिये उसकी कुप्पी में झाँकने लगा। अब तो कुप्पी में एक के बजाय दो चेहरे दीखने लगे। यह देख कर दोनो चिल्ला उठे—"अरे, भाग चलो, दो भूत है, दो। जल्दी दौडो।" उन दोनो की घबराई हुई आवाज सुन कर शेष दोनो शेखचिल्ली भी आ गये और कुप्पी मे झाँक कर देखने लगे। अब कुप्पी मे दो के बजाय चार चेहरे दिखाई देने लगे। यह देख कर शेख-चिल्लियो को बडा आश्चर्य हुआ। पहले कुप्पी में एक भूत था, फिर एक के दो हुए और तुरन्त ही दो के चार हो गये। वे आपस में कहने लगे—"मालूम

होता है भूत ब्या रहे है। चल कर देखना चाहिये और कुप्पियो मे तो नहीं ब्याये।" यह ध्यान मे आते ही वे दूसरी कुप्पी के पास गये और उसमे झाँक कर देखने लगे। उस कुप्पी मे भी चार चेहरे दिखाई दिये। तीसरी कुप्पी मे झाँका तो उसमे भी चार और चौथी मे भी चार चेहरे दिखाई दिये। अब उनको निश्चय हो गया कि भूत जरूर ब्या रहे है। वे बहुत डरे और बोले—"भाइयो! कुप्पियो मे भूत ब्या रहे है। इनकी गिनती बढती ही जा रही है। ये तो हजारो हो जायेगे और हमको खा जायेगे। इसलिये इनको अभी मार डालना चाहिये।" यह कहते ही उन्होने डडे मार-मार कर चारो कुप्पियो को तोड़ फोड डाला और बात की बात में सारा घी मिट्टी में मिला दिया।

घी और कुप्पियो को नष्ट-भ्रष्ट करके चारों शेखचिल्ली वहाँ से भाग छूटे। उनको भय था कि कही भूतो के सगी-साथी आकर उन पर हमला न कर दे। वे हाफते हुए घर पहुँचे और जाट को सारा हाल सुनाया। जाट उनकी बेवकूफी की दास्तान सुन कर बडा तिलमिलाया। परन्तु कर क्या सकता था? अपने मन में सोचने लगा—"मै खुद ही बेवकूफ हूँ, जो इन बेवकूफो को अपने यहाँ रखा। इन से मुझे क्या लाभ है? हानि ही हानि है। अब मै एक क्षण भी इनको अपने यहाँ न रहने दूँगा।" जाट क्रोध से लाल हो गया और बोला—"तुम लोग निहायत बेवकूफ हो। कही कुप्पी में भी भूत ब्याते है? तुम मेरा सत्यानाश करने पर तुले हुए हो। आज ही मेरे घर से चले जाओ। अब मै तुम्हें न रखूँगा।" शेखचिल्ली जाट के क्रोध का कारण न समझ सके। उसको लाल-पीला देखकर वे काँप उठे और आँखो में आँसू भर कर बोले—"चौधरी साहब! हम तो आपके जूते मे से निकले है। हमारा और कहाँ ठिकाना है? हम तो आप ही की शरण है। आप ही के यहाँ रहेगे। आप चाहे मारिये, चाहे छोडिये।" जाट को फिर उन पर तरस आ गया और बोला—"देखो! अब की बार मै तुम्हे और माफ करता हूँ। आगे न करूँगा। इसलिये अब ऐसी बेवकूफी न करना। कुप्पियो में तुम्हारे चेहरे दीख रहे थे। भूत-ऊत कुछ न था। तुमने अपनी बेवकूफी के कारण कुप्पियो को तोड़ दिया और घी को नष्ट कर दिया। अब मै माँ की तेरहवी मे बूरा-पूडी की दावत नही कर सकता। ब्राह्मणो को दाल-भात खिला दूँगा। तुम रुपया ले जाओ और बाजार से दाल और चावल खरीद लाओ। खबरदार, मेरे पास और रुपया नही है।

शेखचिल्लियो ने ठंडी साँस ली। जान बची लाखो पाये। रुपया लेकर बाजार गये। दाल और चावल खरीदा। पास ही मे जंगली जाति

के कुछ लोगो के डेरे पडे हुए थे। शेखचिल्लियो ने सोचा अगर दाल और चावल इन भूखे लोगो को बाँट दिया जाय तो बडा अच्छा रहेगा —एक तो बोझ हलका हो जायगा, दूसरे जाट को पकाने की तकलीफ न करनी पडेगी। बस, सब का सब अन्न उनको बाँट दिया गया। शेखचिल्ली खुश होते हुए खाली हाथ घर लौट आये।

घर पहुँचने पर जाट ने उनसे पूछा तो उन्होने चावल बाँटने की सारी कथा कह सुनाई।

जाट उनकी बेवकूफी पर बेहद नाराज हुआ और उसने धक्का देकर उन्हे घर से बाहर निकाल कर ही दम लिया।



बादशाह की विचित्र पोशाक

सावित्री देवी वर्मा

बहुत दिनो की बात है कि किसी देश मे एक बादशाह राज्य करता था। उसे नई-नई पोशाक पहनने का बडा चाव था। दिन में प्रत्येक कार्य के लिये वह नई पोशाक बदलता था। उसकी पोशाके धोने, इस्त्री करने, तहाने, झाडने, पहिनाने, उतारने आदि के लिये ही असख्य दास-दासियां रखी गई थी। पोशाको मे नये-नये डिज़ाइन बनाने, उन्हे सीने-सवारने के लिये कारीगरो और दर्जियो के कई विभाग थे, इसी प्रकार नये तरह के कपडे तैयार करने के लिये कई मिले थी।

सक्षेप में यो कहिये कि वह राजकोष का अधिकाश पैसा अपनी पोशाको की तरक्की पर ही ख़र्च करता था। बादशाह की देखा-देखी अन्य राज्य कर्मचारियो तथा पुरजनो को भी अपनी वेषभूषा की शान-शौक्त बनाई रखनी पड़ती थी। फलस्वरूप उस देश मे जुलाहे और दर्जियो ने बडा पैसा कमाया। जितना रोजगार उनका चलता था उतना और किसी का नही चलता था। इस विषय मे प्रतियोगिता का आयोजन होता था और जिसकी तैयारी की हुई पोशाक सर्वोत्तम प्रमाणित होती थी उसे बादशाह बहुत इनाम देता था।

अति हर एक बात की बुरी होती है। बादशाह की पोशाक सम्बन्धी यह सनक इतनी बढ गई कि राज दरबार मे सिवाय पोशाक के और कोई चर्चा ही नही होती थी। फैलते-फैलते यह बात दूर-दूर तक फैल गई। एक दिन बादशाह को बेवकूफ बना कर धन प्राप्त करने की इच्छा से दो भाई उसके दरबार में बडी ठाठ-बाट से आये और बोले—"जहापनाह! हम आपका नाम सुन कर आये है, आज्ञा हो तो हम भी अपना कुछ हुनर दिखायें?"

बादशाह—"तुम किस प्रकार की पोशाक तैयार करने में चतुर हो, तथा तुम्हें उसके लिये क्या-क्या सामग्री चाहिये? उस पोशाक की क्या विशेषता होगी?"

यह सुन कर ठग बोले—"सरकार! हम पोशाक तो ऐसी तैयार करके देगे जैसी आज तक आपने कभी पहनी ही न होगी, पर उसके लिये हमें बारीक से बारीक रेशम तथा सोने की तारें, सोने-चादी के कर्घे, सुइयां आदि चाहिये। उस पोशाक की विशेषता यह होगी, जो व्यक्ति बुद्धिमान और ईमानदार होगे

उन्हें ही वह दिखाई देगी, मूर्ख और कपटी मनुष्यो को वह पोशाक दिखाई ही नही दे सकती ।"

यह सुन कर वादशाह सोचने लगे कि 'ऐसी पोशाक तो मै अवश्य वनवाऊँगा, क्योकि इसके द्वारा मुझे अपने राज्य के वुद्धिमान और ईमानदार व्यक्तियो का पता चल जायगा । इस प्रकार मै मूर्ख और कपटी व्यक्तियो को अपने राज्य से निकाल वाहर कर सकूँगा ।'

वस वादशाह के मजूर करने की देर थी, कि उन दोनो ठगो को मुँहमागी सुविधायें जुटा दी गईं । वडी शान से उन दोनो ठगो ने कुछ महीने गुजार दिये । जब वे दरवार में हाजिर होते तो पोशाक के वारे में बादशाह की कल्पना को और भी उभारते । फलस्वरूप वादशाह अपनी पोशाक को देखने के लिये और भी उत्सुक हो गया ।

एक दिन उन्होने अपने खास वजीर से कहा—"वज़ीर जी, मै चाहता हूँ कि इस पूनम को जब कि मेरा जन्म-दिन है, मै इस विशेष पोशाक को जलूस के समय पहिनूँ । अभी वीस दिन वाकी है, आप कृपया वहाँ जाकर देख आये कि पोशाक कितनी तैयार हो गई है । ज़रा जल्दी तैयार करने का तकाज़ा भी करना न भूलें ।"

"जो हुक्म"—कह कर वज़ीर उस मकान में आया जहाँ वे कारीगर ठहरे हुए थे और ठगो से वोला—"कारीगर जी ! वादशाह ने मुझे यह मालूम करने के लिये भेजा है कि पोशाक कितनी तैयार हुई है । कृपया ज़रा दिखा-इये तो सही कि किस प्रकार की पोशाक वन रही है ।"

वे दोनो ठग उसे उस वडे हाल में ले आये जहाँ सोने-चाँदी के कर्घे रखे थे और वोले—"वजीर जी ! यह देखिये कपडे की वारीकी, हाथ पर रखा हुआ कुछ पता ही नही चलता कि कपडा है कि हवा ! और यह देखिये कि इस पर वने डिज़ाइन ! इस कपडे की वनी पोशाक को वादशाह सलामत जव पहिनकर निकलेंगे तो लोग देखकर हैरान हो जायेंगे ।"

वेचारा वूढा वजीर अपनी आखे फाड-फाड कर चारो ओर देख रहा था पर उसे तो वहाँ कपडा क्या सूत की तार भी नजर नही आ रही थी । वह मन-ही-मन सोचने लगा—'तो क्या मै मूर्ख हूं ? वेईमान हूँ ? राम ! राम ! कही वादशाह को यह पता लग गया तव तो वह मुझे नौकरी से अलग कर देंगे । इसलिये किसी को यह प्रगट ही नही होना चाहिये कि पोशाक का कपडा मुझे दिखाई ही नही पडा ।'

अतएव वह उन ठगो की हाँ-मे-हाँ मिला कर बादशाह के पास आया और बोला—"हुजूर ! पोशाक के लिये कपडा तो ऐसा बारीक और हल्का बुना जा रहा है कि बस क्या कहूँ ! उस पर बने डिजाइन और बेल-बूटो का तो मै बयान ही नही कर सकता । मै कारीगरो को काम जल्द खत्म करने का तकाज़ा लगा आया हूँ, और हाँ अच्छी याद आई, उन्होने दो गाठ रेशम और दो सौ तोले सुनहले तार और मांगे है ।"



वे दोनो ठग बोले—"वज़ीर जी ! यह देखिये कपडे की बारीकी, हाथ पर रखा हुआ कुछ पता ही नही चलता कि कपडा है कि हवा ! और वह देखिये इस पर बने डिज़ाइन ! इस कपडे की पोशाक को बादशाह सलामत जब पहिन कर निकलेगे तो लोग देख कर हैरान हो जायेंगे ।"

अपने बडे वज़ीर से कपडे की ऐसी तारीफ सुन कर बादशाह बहुत ही खुश हुए । उन्होने अपने अधिकारियो को कारीगरो के पास मुंहमागा सामान पहुँचाने का हुक्म दिया ।

कुछ दिन बाद बादशाह ने अपने दूसरे वज़ीर से कहा—"वज़ीर जी ! अब ज़रा आप जाकर पोशाक के बारे में पता लगा आयें ।"

उन दोनो ठगो ने इस वज़ीर के साथ भी वही चाल चली । बेचारा वजीर खाली पडे कर्घो की ओर आखे फाड-फाड़ कर देखता रहा, पर उसकी

भी यह कहने की हिम्मत न हुई कि यहाँ पर कोई कपडा तैयार नही हो रहा है। ठगो की वातो से असहमत होने का मतलव था कि खुद को वेवकूफ और वेईमान प्रमाणित करना । उसने भी दरवार में आकर और भी वढा-चढा कर कपडे की प्रशसा की ।

अव कुछ दिन जव और वीत गये तो पूनम से एक दिन पहले वादशाह ने अपने शाही दर्जी से कहा कि—"जाओ, अव तुम जाकर देख आओ कि पोशाक सिल कर तैयार हो गई है कि नही ?"

अव वहाँ शाही दर्जी पहुँचा । वह भी वहाँ पोशाक का नामोनिशान न पाकर मन-ही-मन सोचने लगा—'तो क्या मै वेवकूफ और वेईमान हूँ ? अगर कही वादशाह सलामत को यह वात पता लग गई तव तो मेरी नौकरी की खैर नही ।'

वे दोनो ठग, दर्जी के चेहरे पर हवाइयाँ उडते देख मन-ही-मन हसे । फिर उन्होने कहना शुरु किया—"उस्ताद जी ! आपको तो पोशाक की विशेषता वताने की ज़रूरत ही नही । आखिर आप शाही दर्जी जो ठहरे । खुद ही सव समझते है । पर ज़रा मुलाहिज़ा फरमाइये, देखिये, किस खूवी के साथ इसकी कटाई हुई है, किस प्रकार सभाल कर इसे सिया गया है, यह झालर ! यह घेर ! यह घुमाव और फुलाव ! पोशाक मे चार चाँद लगा रहे है । वारीक सुइयाँ चलाते-चलाते हमारी तो उगलियो के पोरे तक छिद गये । दिन-रात एक करके तव कही यह पोशाक तैयार कर पाये है । वस अव पोशाक तैयार ही समझिये, कल सुवह हम खुद ही इसे लेकर वादशाह सलामत के खास कमरे में हाज़िर होगे ।"

दरवार में लौट कर दर्जी ने भी पोशाक की वडाई के पुल वाँध दिये । यह सव सुन-सुनकर वादशाह पोशाक पहिनने के लिये और भी अधीर हो उठे ।

राम-राम करके वह रात कटी । सुवह होते ही वादशाह को उवटन मल-मल कर नहलाया गया । जूते, मोजे और जाघिया पहिन कर जव वह तैयार हो गये तो कारीगरो को हुक्म हुआ कि पोशाक लेकर हाज़िर हो ।

वादशाह के सामने भी उन ठगो ने वही चाल खेली । टाके तोडने, कैंची चलाने आदि का अभिनय करने के पश्चात् वे वादशाह की ओर अदव से इस प्रकार वढे मानो कोई हल्की-फुल्की पोशाक थामे हुये हो और फिर वाहे पहनाने वाला ढोंग रचने, नीचे की झालर को खिसकाने तथा कमर पट्टा

कसने का अभिनय करने के पश्चात् वे बोले—"हजूर, जन्म दिन मुबारक हो। इस पोशाक को पहिन कर आज आप फरिश्तो को भी मात कर रहे हैं। आज तक इस धरती पर किसी मनुष्य को ऐसी पोशाक पहिनने का सौभाग्य नही हुआ। जरा आइने की ओर घूम जाइये और मुलाहिज़ा फरमाइये। देखिये कैसी सजती है यह पोशाक आप पर! जरा अपने इन काबिल वजीरो तथा शाही दर्जी से भी पूछ लीजिये कि हमारा कहना दुरुस्त है कि नही ?"

भला वजीर और दर्ज़ी अपनी बात से पीछे कैसे हट सकते थे। वे बोले—"जहापनाह! इस पोशाक की तो जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है। वाह भाई! वाह! बहुत ही अद्भुत और सुन्दर पोशाक बनी है। इसको पहिन कर हजूर बिलकुल स्वर्ग के बादशाह से दीखते है।"



जब बादशाह की सवारी वहाँ तक पहुँची तो वह बच्चा चिल्ला उठा—
"ओ माँ! देखो, आज बादशाह भी मेरी तरह ही नगे है,
उन्होने भी कपडे नही पहने हुए है।"

बेचारे बादशाह आखें फाड-फाड कर आइने मे देख रहे थे, पर उन्हे अपने बदन पर सिवाय जांघिया के और कोई कपडा ही नही दिखाई पडता था। अब वे मन-ही-मन सोचने लगे कि जो पोशाक मेरे सब वजीरो को और दरबारियो को दिख रही है, वह मुझे क्यो नही दिख रही ? इसका मतलब तो यह हुआ कि ये सब अक्लमद और ईमानदार है, एक अकेला मै ही भोंदू और बेईमान हूँ। अगर मेरी प्रजा को यह सब पता चल गया तो मै उनकी

नजरो मे गिर जाऊँगा। इसलिये सबसे ठीक बात यह होगी कि मै भी इन लोगो की हाँ में हाँ मिलाऊँ। बस बादशाह भी मुस्कराकर बोले—हाँ भाई! सचमुच में पोशाक बहुत ही हल्की-फुल्की और बेजोड बनी है। मेरी सब पोशाको मे यह सर्वोत्तम है।"

उनके इस प्रकार सन्तोष प्रगट करने पर दोनो ठगो ने आगे बढकर सलाम किया और कहा—"हजूर का हुक्म हो जाय तो आज इस शुभ दिन पर हमें भी कुछ मिल जायेगा।"

बादशाह ने हुक्म दिया—"अब तक सबसे बढिया पोशाक पर जो इनाम दिया गया है उससे अठगुना इन कारीगरो को दिया जाय।"

बस इनाम लेकर तथा कर्घे आदि उठा कर वे ठग तो वहाँ से चम्पत हुए।

इधर राजा की सवारी निकालने के लिये पूरे दलबल-सहित दरबारी महल के बाहर खडे थे। बडे वजीर ने बादशाह के सिर पर ताज रखा और आगे-आगे बैंड-बाजा, फिर खास-खास दरबारी, बीच मे बादशाह, पीछे प्रजा इस प्रकार नगर में से सवारी निकलनी शुरू हुई। बादशाह की विचित्र पोशाक को देखने के लिये सब पुरवासी सडक के दोनो ओर मकान की छतो पर लदे पड रहे थे। मन-ही-मन सब आश्चर्य कर रहे थे कि आज बादशाह सलामत को हुआ क्या है कि केवल एक जाघिया पहिन कर इस प्रकार आम सडक पर निकल आये है? पर अपने मन की बात कोई दूसरे से कहने का साहस ही नही करता था। कारण जो यह भेद खोलता वह दूसरो की नजरो मे भोंदू और बेईमान प्रमाणित होता। नौकरी से बर्खास्त होने तथा देशनिकाले के डर मे कोई व्यक्ति भी सच्ची बात मुँह पर नही ला रहा था। सभी बादशाह की पोशाक की बडाई के पुल बाध रहे थे।

जब यह जलूस एक सरोवर के पास पहुँचा, तो वहाँ एक बच्चा बाजे की आवाज सुन कर नहाता-नहाता नगा ही स्नान गृह से बाहर भाग आया। उसकी माँ उसे बहुतेरा रोकती रही कि अरे! अरे! तू बादशाह के सामने नगा भागा जा रहा है। पर वह जलूस देखने के लिये इस तेजी से सडक की ओर को भागा कि भीड को चीर कर आगे आ खडा हुआ। जब बादशाह की सवारी वहाँ तक पहुँची तो वह बच्चा चिल्ला उठा—"ओ मा! देखो, आज बादशाह भी मेरी तरह ही नगे है, उन्होने भी कपडे नही पहने हुए है।"

भोले-भाले बालक की यह बात सुनकर पुरवासी एक दूसरे से कहने लगे—'सुनो! सुनो! यह सरल बालक कैसी सच्ची बात कह रहा है।"

बादशाह ने भी यह बात सुनी। अब उन्हें अपने नगे रहने मे कोई सन्देह नही रहा परन्तु अपने वजीर और दरबारियो की शान रखने के लिये उन्होने निश्चित मडप तक जाना ही उचित समझा। पर उस दिन से बादशाह ने फिर कभी नई-नई पोशाको को पहिनने की लालसा प्रगट नही की। इस विचित्र पोशाक ने उनकी सनक का हमेशा के लिये इलाज कर दिया और राजकोष का पैसा बरबाद होने से बच गया।



बैंगन की चोरी

कान्तिलाल शाह

एक था ब्राह्मण और एक थी ब्राह्मणी । ब्राह्मण का नाम था दलसुख शकर तिवारी । और ब्राह्मणी का नाम था चचला । ब्राह्मणी को वैगन की तरकारी वहुत ही भाती थी ।

एक वार ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से कहा, "सुनो तो महाराज ! तुम रोज दाना पटेल की वाडी मे स्नान करने जाते हो । फिर एक वार वैगन क्यो नही लाते । मै प्रतिदिन सूखी रोटी खाते-खाते अव ऊव गई हूँ । सुना है इस साल उसके खेत मे वहुत ही वैगन हुआ है । आज जव स्नान करने जाओ, तो जरूर ही वैगन ले आना । वरना दरवाजा वन्द कर दूँगी । लाख विनती करने पर भी नही खोलूंगी ।"

ब्राह्मण ने कहा, "अजी वैगन कही वाडी मे वैसे ही पडे है कि मन मे आया और ले ले । लेने के पहले उनके मालिक को पूछना पडता है ।"

"तो पूछ लीजिये न ! पूछने का दाम तो नही पडेगा ?"

ब्राह्मण ने कहा, "अच्छा-अच्छा जी ।" और हाथ में तौलिया ले दाना पटेल की वाडी की ओर स्नान करने चल पडे ।

वहाँ पर उन्होने कुए पर जा स्नान किया । गमछे से शरीर पोछ लिया । और भीगी धोती पहने घर की ओर चलने लगे ।

ज्यो ही वाडी के दरवाजे पर आए, उनको ब्राह्मणी की वात याद आ गई । 'अरे ! उसने तो वैगन लाने को कहा है । अगर न लाऊँगा, तो जी न छोडेगी । अच्छा चलो, पटेल से पूछ के कुछ वैगन माँग लूं, अगर वह दे देगा तो अच्छा ही है ।"

ऐसा सोच कर वह वापस आया, और पटेल को देखने लगा । लेकिन पटेल वहाँ न था । उसने खेत की ओर देखा, झोपडी मे देखा, पर कही भी वह नही दिखाई दिया । खेत में वडे-वडे और काले-काले सुन्दर वैगन लटकते थे । हरे गोल-गोल और छोटे-छोटे भी नजर आ रहे थे । अरे ! कितने सुन्दर वैगन है ये ! उसके दिल में आया । अगर पटेल होता तो उसको पूछ कर मै कुछ ले लेता । पर अव क्या किया जाय । पटेल न सही, वाडी तो है । उससे पूछ लूंगा । लेकिन वैगन लूंगा जरूर ।

ऐसा सोच कर वाडी को उद्देश्य कर वह पूछने लगा।

"बाड़ी रे, ओ वाड़ी !"

पर भला बाड़ी कही बोल सकती है क्या ? इसलिये वाड़ी के ऐवज मे खुद न ही जवाव दिया।

"क्या कहते हो दला तरवाडी ?" (तिवारी)

"ये बैगन लूँ दो-चार ?" वामन ने पूछा

"ले-ले न दस-बारह ? ' उसने खुद ही जवाव दिया।

ऐसा करके उन्होने दस-वारह अच्छे-अच्छे बैगन तोडे। तोड के अपने तौलिये मे उनको वाध घर को चल पड़े।

घर आ उन्होने ब्राह्मणी को बैंगन दिखलाये। देखकर वह खुशी से फूली न समाई।

ब्राह्मणी ने प्रेम से उनमें तेल छौक कर और नमक-मिर्च लगा कर ऐसा सुन्दर साग बनाया कि कहते ही बने। ब्राह्मण और ब्राह्मणी ने उसी दिन रोटी और साग पेट भर के खाया और उनके आनन्द की सीमा न रही।

दूसरा दिन हुआ। प्रात काल मे जब ब्राह्मण स्नान करने गया तो ब्राह्मणी ने याद दिलाया कि बैगन लाना मत भूलना।

ब्राह्मण ने भी हसते-हसते 'हा' कह दिया और स्नान करने के वाद वाडी से पूछा—

"वाड़ी रे वाड़ी !"

"क्या कहते हो दला तरवाड़ी ?"

"बैगन लूँ दो-चार ?"

"ले-ले न दस-वारह ?"

फिर बैंगन लिये। और घर आये। इसी प्रकार दोनो को बैंगन की तरकारी का स्वाद लगा। प्रतिदिन ब्राह्मण इसी तरह वाड़ी से चुराके बैंगन लाता और दोनों खाते।

दिन जाते दाना पटेल हैरान हो गया। यह क्या रोज़-रोज़ वाड़ी में बैगन कम होते जा रहे है। अच्छा आज तो मै खुद निगरानी करूँगा। ऐसा ? च दाना पटेल एक दिन खेत में छिप कर बैठ गया। प्रात.काल हुआ।



हवालात में

मुबारक जहाँ

दम्मू मियां बोला—"यार, क्या कहें, अब तो जमाने की हवा ही बदल गई है। गल्ला परमिट पर मिलेगा, कपडा परमिट पर मिलेगा, तेल परमिट पर मिलेगा, नमक परमिट पर मिलेगा—और भी सुनी थी कभी ऐसी दिल्लगी ?"

एक गांव मे तीन अफीमची रहते थे, उनके नाम थे दम्मू, कम्मू और छम्मू। एक बार वे शहर आये और एक सराये में ठहरे।

जब सवेरा हुआ, तो दम्मू, कम्मू और छम्मू अफीम पीने बैठे। धीरे-धीरे नशे का रंग जम चला, तो बात-चीत ने ज़ोर बाधना शुरू किया। दम्मू मियां बोले—"यार, क्या कहे, अब तो ज़माने की हवा ही बदल गई है। गल्ला परमिट पर मिलेगा, कपडा परमिट पर मिलेगा, तेल परमिट पर मिलेगा, नमक परमिट पर मिलेगा—और भी कभी सुनी थी ऐसी दिल्लगी ?"

कम्मू मियां ने चुगी मे जला हुआ छर्रा फूंकते-फूंकते कहा—"मरमिट-परमिट तो हम भी सुन रहे है, मगर यह पता न चला कि आखिर यह मरमिट है किस बला का नाम ?"

छम्मू मियां चुगी पर छर्रा जमाते-जमाते बोले—"गधे ही रहे! इतना भी नहीं जानते कि मरमिट किस आफत का नाम है। सुनो, मरमिट किवाड जैसा लम्बा-चौडा लकडी का एक तख्ता होता है। हमने खुद अपनी आंखो

देखा है, उस दिन एक आदमी कचहरी से बहुत से मरमिट गाड़ी मे लदवा कर ला रहा था ।"

कम्मू मियाँ ने आंखे फाड़-फाडकर छम्मू मियाँ को देखा और कहा—"ऐ ! मरमिट किवाड़ो के बराबर लम्बा-चौडा लकडी का तख्ता होता है । आखिर वह आता किस काम है !"

दम्मू मियाँ ताव मे आकर बोले—"तभी तो लोग कहते है कि अफीमची बेवकूफ होते है ! अब इनको यह बताओ कि मरमिट लेकर कण्ट्रोल की दुकान पर जाओ और तरकारी-भाजी, नमक-मिर्च, तेल-खटाई, पूरी- मिठाई, जो तबियत मे आए, तुलवा लाओ ।"

छम्मू मियाँ ने हँस कर कहा—"सरकार को भी क्या दिल्लगी सूझी है ! लोग सर पर किवाड लादे बाजारो मे दुकानो-दुकानो फिरेंगे । खुदा की क़सम, एक तमाशा नजर आएगा, और मजा यह कि मुफ्त देखने को मिलेगा ।"

दम्मू मियाँ ठडी सास लेकर बोले—"हसते क्या हो ? अब शक्कर भी तो परमिट पर मिलेगी ।"

छम्मू मियाँ लाल-लाल आँखें निकाल कर चीख उठे—"क्या कहा, शक्कर भी परमिट पर मिलेगी ? गलत ! बिलकल गलत ! सरकार जानती है कि अगर अफीमचियो को शक्कर आजादी से न मिलेगी, तो बेचारे बिना मौत मर जायेंगे । इसलिये शक्कर पर तो कैद लगने से रही । यकीन न हो तो हमसे लिखवा लो ।"

कम्मू मियाँ ने छर्रा बनाते-बनाते कहा—"पढे न लिखे, लगे बैल की तरह दलांकने—हमसे लिखवा लो ! हमसे लिखवा लो ! और चीजो का कण्ट्रोल हो, चाहे न हो, शक्कर का कण्ट्रोल जरूर होगा ! सरकार अफीमचियो से जलती है और वह उनको तंग करने की ठान चुकी है । हमसे तो बमपोलिस के जमादार ने यही कहा था ।"

छम्मू मियाँ मुंह बनाकर बोले—"तुम भी यार, क्या चण्डूखाने की गप्प छोडते हो ! भला सरकार अफीमचियो से क्यो जलने लगी ?"

कम्मू मियाँ ने जला हुआ छर्रा जमीन पर ठोकते-ठोकते कहा— "यही दुनिया का कायदा है ! लोग-बाग जिसको खाते-पीते देखते है, उसी से जलने लगते है । जब सरकार ने देखा कि हम तो शक्कर खाते नही, और ये अफीमची शक्कर खाये बगैर मानते नहीं, तो वह जल उठी । बस, उसने हुक्म निकाल दिया कि लगाओ शक्कर पर कण्ट्रोल और करो अफीमचियो को तग ।"

छम्मू मियाँ आपे से वाहर हो गये, चुगी पटक कर और होट काट कर वोले—"अगर यह वात है, तो तुम भी समझ लो कि सरकार की मौत आ गई है। कभी वह मत्र पढकर फूकें कि लेने के देने पड जाए। अभी वह हमें समझे क्या !"

दम्मू मियाँ ने छम्मू मियाँ पर एक ताज्जुव-भरी निगाह डाली और सवाल किया—"अरे, तो तुम मत्र पढना भी जानते हो ?"

छम्मू मियाँ ने अकड कर जवाव दिया—"वडे भोले हो, जैसे कुछ जानते ही न हो। अहा ! अव्वाजान को तो वह-वह मत्र मालूम थे कि वस, कुछ पूछो मत ! वात-की—वात मे जिन्दो को मुर्दा और मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे। हम भी कुछ कम नही है, चाहे तो यह सरकार ससुरी किस खेत की मूली है —एक फूंक मे फर्र हो जाए।"

कम्मू मियाँ डर कर वोले—"अमा, ज़रा जवान में लगाम भी लगाओ। लगे हो ऊरान-तूरान वकने। कोई सुन लेगा, तो सव वँधे-वँधे फिरेंगे। शक्कर न मिलेगी, तो कौन मर जायेंगे। गुड खा लेंगे। जव शक्कर खाने को वहुत जी चाहेगा तो सर पर किवाड रखकर किसी दूकान पर जा खडे होगे। वस, अल्लाह-अल्लाह, खैर सल्लाह।"

दम्मू मियाँ ने चिलम मे तमाखू भरते-भरते कहा—"गलत ! घरेलू किवाडो पर कोई शक्कर न देगा। शक्कर तो सरकारी किवाडो पर ही मिलेगी। हम लोग कचहरी से ही क्यो न एक-एक किवाड ले आये। मुफ्त तो मिलते है। न किसी वात का डर, न किसी वात का झगडा !"

छम्मू मियाँ उछल पडे, वोले—"सुवहान अल्लाह ! यार मियाँ दम्मू, इन वक्त तुमने वह वात कही है, जो लाख रुपये मे भी सस्ती है। खुदा की क़सम, हमारी तवियत खुश हो गई। वस, झटपट नशे-पानी से टच हो जाओ और कचहरी चलो, एक-एक किवाड उठा लायें। शक्कर न मिलेगी, तो मकान में लगाने के काम ही आजायेंगे।"

कम्मू मियाँ ने खुश होकर कहा—"अहा हा ! ऐसा हो जाए, तो क्या कहना ! हमारे मकान मे पीछेवाले दरवाजे का एक किवाड सड भी गया है। हमेशा चोरो, उचक्को और जानवरो का खटका लगा रहता है।"

इस तरह तीनो दोस्त एक राय होकर वारह वजते-वजते कचहरी पहुँचे। कन्ट्रोल वाले साहव के वावू ने उनसे कहा—"अभी तो साहव आये नही है उनके आने पर तुम्हारी पुकार होगी। वाहर जाओ, वरगद के नीचे वैठो।"

तीनों दोस्त वरगद के नीचे आए, तो छम्मू मियाँ ने कहा—"बुरा हुआ ! हम लोग नाहक इतनी जल्दी आगए। क्या मालूम साहब कव तक आएगा और हमें कब तक इस वरगद के नीचे ऊँघना पड़ेगा। अगर अफीम लेते आते, तो मज़े मे रहते, खैर चिलम निकालो तमाखू ही उड़े।"

कम्मू मियाँ ने धीरे-धीरे चिलम निकाली, दाये पैर के अँगूठे और उँगली के बीच मे दवाई। इसके बाद तमाखू बाये हाथ की हथेली पर रखी, और दाये हाथ के अँगूठे से मलना शुरू की। इतने मे जो पीनक आई, तो वह उसी तरह बैठे रह गए। यह देखते ही छम्मू मियाँ बोले—"बैठते देर नही हुई, और लगे, जन्नत के ख्वाब देखने। अरे म्यां, चिलम गरम करो। ऊँघने के लिये तो दिन भर पडा है।"

कम्मू मियाँ ने चौंक कर कहा—"एँ ! क्या कहा —साहब आ गया ? तो बस, भाई, हमारा दरवाज़ा भी लेते आना। अगर साहब हमारे बारे मे कुछ पूछे, तो कह देना कि वह आया तो था, मगर तबियत अलील होने से घर चला गया।"

दम्मू मियाँ, उनको ज़रा सा धक्का देकर बोले—"यह क्या वक रहा है भले आदमी ! होश मे आ। चिलम गरम कर !"

कम्मू मियाँ ने एकदम आँखे खोल दी और मुंह पर हाथ फेरते-फेरते कहा—"अरे ! चिलम कहाँ गई ? क्या सब तमाखू तुम्ही दोनो ने पी डाली ? वस, यही दिल्लगी हमे पसन्द नही आती। लाओ, ज़रा इधर वढाओ, हम भी पियें।"

छम्मू मियाँ बिगड कर बोले—"क्यो तमाशा दिखाते हो यार ! अफीमची वैसे ही वदनाम होते है, कही लोग तुम्हारी यह पीनक देख पायेंगे, तो मारे हसी के गिर-गिर पडेंगे और शहर भर मे शोर मचाते फिरेगे कि अफीमची यह करते है —वह करते है। चिलम दवाए बैठे हो अपने पैर के अँगूठे मे और रेंक रहे हो गधे की तरह कि चिलम कहाँ गई ?"

अव कम्मू मियाँ के गुस्से का क्या कहना था ! उन्होने चिलम मे तमाखू जमाते-जमाते गुर्रा कर कहा—"देखो जी, मुंह सम्भाल कर वोला करो। यहाँ किसी के दवे-चपे नही है। जव जी में जो आता है वकने लगते हो। लिख रक्खो, इन वातो में किसी दिन दोखा खा जाओगे।"

छम्मू मियाँ विगड कर वोले—"तुम करोगे क्या ! एक धक्के में पचास कुलाचे भरते फिरोगे।"

कम्मू मियाँ ने चिलम मुंह की तरफ बढाई और कडक कर जवाब दिया—"हम कच्चा चबा खायेंगे। और भरोसे न रहना।"

कम्मू मियाँ ने दोनो को समझाने-बुझाने के खयाल से कहा—"शर्म की बात है! तुम लोग यहाँ काठ-कबाड लेने आये हो या लडने-झगडने? शक्कर मिलने का इन्तज़ाम हो जाए, फिर घर चलकर खूब लड झगड लेना।"

कम्मू मियाँ दियासलाई सुलगाते-सुलगाते बोले—"हम लडते-झगडते है या तमाखू पीते है! ऐसी बातें करते हो कि लडाई-झगडा न होता हो, तो हो जाए! वाह! तुम भी खूब रहे।"

दम्मू मियाँ ने कम्मू मियाँ के हाथ से चिलम लेते-लेते कहा—"हमे तो आसार अच्छे नज़र नही आते। तुमने उस बाबू को देखा था?"

कम्मू मियाँ ने खाँस्ते-खाँस्ते जवाब दिया—"देखा क्यो नही था! कम्बख्त किस तरह बडी-बडी आँखें निकाल रहा था। खुदा की कसम, हमारे तो रोंगटे खडे हो गए थे। वह तो यह कहो कि हम ज़रा हिम्मतवर हैं, इसीलिये बच गए, वरना मरने में कोई कसर थोडे ही थी।"

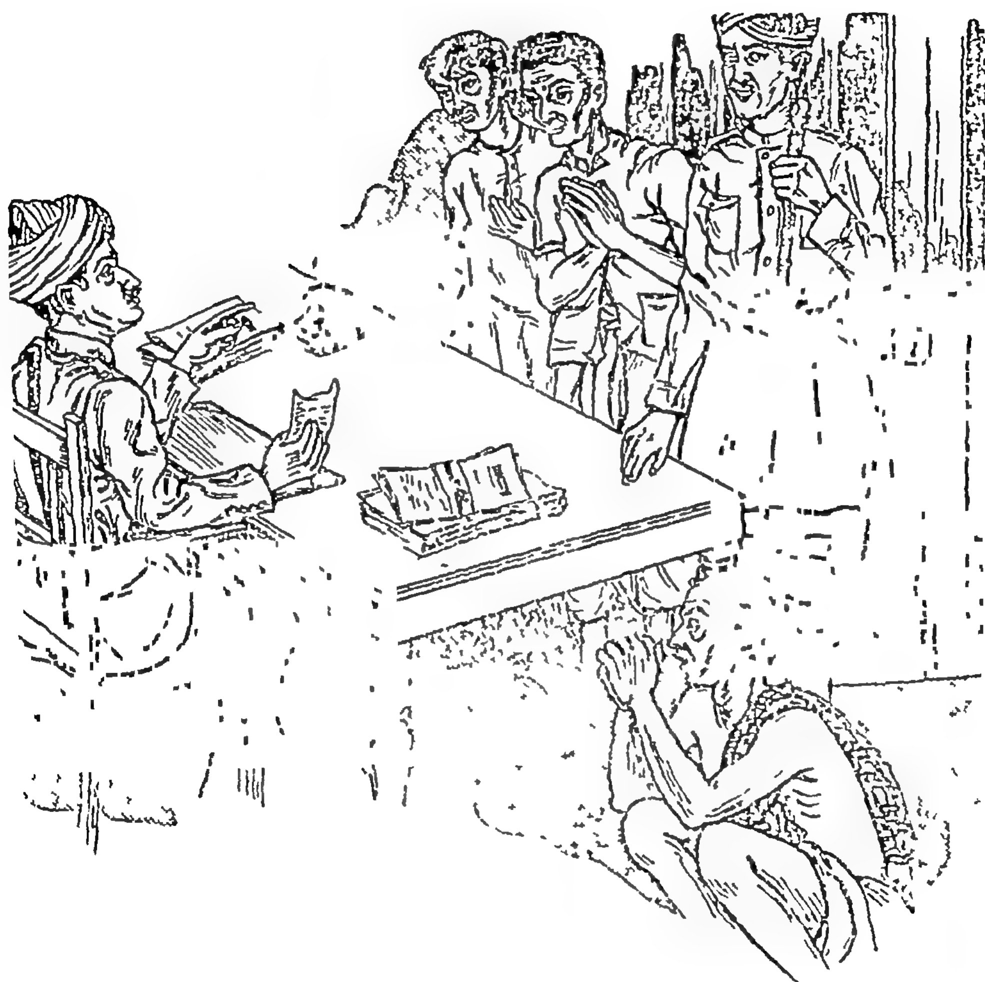
दम्मू मियाँ ने चिलम छम्मू मियाँ को देते-देते कहा—"या अल्लाह, तौबा है! या अल्लाह, तौबा है! जब बाबू का यह हाल है, तो साहब का क्या हाल होगा! क्यो छम्मू मियाँ, तुम्हे उम्मीद है कि वह हम लोगो को काठ-कबाड दे देगा?"

छम्मू मियाँ ज़रा अकडकर—ज़रा मुंह बनाकर बोले—"तुम भी बच्चो जैसी बाते करते हो! देगा क्यो नही! आखिर हम किस लिये है? उसने इनकार किया नहीं, कि हमने मंत्र पढकर फूंका नही! अगर कम्बख्त कुर्सी पर ही टें न बोल जाए, तो हमारे मुंह पर थूक देना।"

कण्ट्रोल वाले साहब न जाने कहाँ से वहाँ आ पहुँचे थे और एक तरफ खडे-खडे उन तीनो की बाते सुन रहे थे। उन्होने दफ्तर में जाते ही उनकी पुकार कराई। अब क्या था, तीनो हाँफते-काँपते हाथ जोडकर साहब के सामने जा खडे हुए। साहब ने मुसकराकर उनसे पूछा—"क्या चाहते हो तुम लोग?"

छम्मू मियाँ बोले—"अल्लाह खुश रक्खे हुजूर को। हम लोग गरीब आदमी हैं। आप जानिये, बगैर शक्कर हमारा काम नही चल सकता। अगर हम लोगो को श-शक... क्या नाम है उसका! बोलो न दम्मू मियाँ! चुप क्यो खडे हो? क्या तमाम बाते हमीं कहें?"

दम्मू मियाँ बोले—"हाँ-हाँ, वही तो—वही तो ! क्या नाम है उसका ? हमे तो याद ही नही आता ! बताओ न कम्मू मियाँ हुजूर को। क्या बोलने का ठेका अकेले हमी ने ले रक्खा है ? शक्कर लेने को तो जल्दी दौड पडोगे।"



कम्मू मियाँ सर हिला कर बोले—"कौन हम लोग ? अजी, तोबा कीजिए। यहाँ मन्त्र-तन्त्र कोई नही जानता। आप तो इस कागज मे ईंट-पत्थर जो कुछ लिखा हो, दिलवा दीजिए। हमें शक्कर की बडी जरूरत है।"

कम्मू मियाँ बोले—"नाम तो ठीक-ठीक हमे भी याद नही रहा। ईंट-पत्थर या लकडी-पत्थर··· ऐसा ही कुछ तो कहा था तुमने।"

साहव खुश-मिज़ाज थे-दिल्लगीवाज़ भी थे। उन्होने कुछ लिखकर एक कागज छम्मू मियाँ की तरफ वढाया और हँसते-हँसते कहा—"जाओ, यह कागज़ कोतवाली ले जाओ। तुम ईंट-पत्थर या लकडी-पत्थर जो भी चाहोगे, वहाँ तुम्हें मिल जायेगा।"

तीनो दफ्तर मे वाहर निकले, तो मारे खुशी के उनके पैर ज़मीन पर सीधे नही पड रहे थे। छम्मू मियाँ वोले—"देखा तुमने ? हमने जो मत्र पढकर फूका, तो साहव किस तरह उल्लू वन गया ? उसे हुक्म लिखना ही पडा।"

दम्मू मियाँ वोले—"रहने भी दो यह तारीफ ! देख लिया हमने तुम्हारा मत्र ! नाम तक तो तुम्हे याद नही रहा था। अगर वक्त पर हमने वात न सभाली होती, तो धरा रहता तुम्हारा यह कागज़-फागज़।"

कम्मू मियाँ वोले—"क्यो वातें मारते हो यार ! तारीफ करो हमारी, जो वक्त पर हमने नाम वता दिया। अगर हमने नाम न वताया होता, तो तुम्हारे फरिस्ते को भी तो यह कागज़ मिलता नही !"

इस तरह वातें करते हुए तीनो कोतवाली पहुँचे। दम्मू मियाँ ने वह कागज़ मुशी जी को दे दिया। उसमें लिखा था—"ये तीनो आदमी हमारे सामने मत्र पढने आए थे। इनको थोडी देर के लिए हवालात में वन्द कर दो ताकि इनकी होश की दवा हो जाये।'

मुशी जी ने उनको सर से पैर तक देखा। फिर सवाल किया—"तुम लोग साहव के सामने मत्र पढने गए थे ?"

छम्मू मियाँ सिर हिलाकर वोले—"कौन हम लोग ? अजी, तोवा कीजिये। यहाँ मत्र-फत्र कोई नही जानता। आप तो इस कागज़ में ईंट-पत्थर जो कुछ लिखा हो, दिलवा दीजिए। हमें शक्कर की वडी ज़रूरत है।"

मुशीजी ने एक सिपाही को हुक्म दिया—"इन लोगो को हवालात में वन्द कर दो।"

अव तो तीनो ताज्जुव मे आँखें फाड-फाड कर लगे एक-दूसरे का मुँह ताकने। उन्होंने वहुत चिल्ल-पो मचाई। मगर वहाँ उनकी कौन सुनने वाला था। सिपाही ने उनको धक्के मारते हुए हवालात में वन्द कर दिया और कहा—"और जाना साहव के सामने मत्र पढने।"



नन्हा-सा चूहा उसके पांव पर बैठा अपने नन्हें-नन्हें दांतो से उसकी रस्सियाँ काट रहा था। हाथी आँखें फाड-फाड कर उसकी तरफ देखने लगा।

चूहे की कहानी

भीष्म कहानी

एक विशाल घने जगल में एक महात्मा की कुटिया थी और उसमें एक चूहा रहा करता था। महात्मा उसे बहुत प्यार करते थे। जब पूजा से निवृत हो वे अपनी मृगछाला पर आ बैठते तो चूहा दौडता हुआ उनके पास आ पहुँचता। कभी उनकी टागो पर दौडता, कभी कूद कर उनके कन्धो पर चढ बैठता। महात्मा सारे वक्त हँसते रहते। धीरे-धीरे उन्होने चूहे को मनुष्यो की तरह बोलना भी सिखा दिया।

एक बार उस चूहे के छोटे से दिल में बलवान बनने की लालसा पदा हुई। वह बोला

"महाराज, बिल्ली के दात कितने तेज होते हे। उसके पजो में इतनी ताकत है कि झपट्टे में चूहे को दबोच लेती है और मार कर खा जाती है। बिल्ली से सब चूहे डरते हें। चूहे से कोई नही डरता।"

महाराज हँसने लगे, बोले "फिर तू क्या चाहता है ?"

"महाराज कोई ऐसा उपाय करें जिससे मै बिल्ली बन जाऊ।"

"बिल्ली बन कर क्या करेगा ?"

"फिर मुझ से सभी डरेगे। फिर मै बिल्ली बन कर बिल्ली से लड़ूँगा। उससे चूहो का बदला लूँगा। उसने हम पर बडे अत्याचार किए है। वह सैकडो चूहे खा चुकी है।"

उन महात्मा में ऐसी शक्ति थी कि वह अपने योगबल से एक जीव को दूसरे जीव मे बदल सकते थे। उन्होने चूहे को बहुतेरा समझाया कि केवल पशु-शक्ति से ही कोई बलवान नही बन जाता, मगर चूहा नही माना। तब उन्होने अपने कमण्डल में से थोडा गगाजल निकाला, उसकी कुछ बूंदें चूहे पर छिडकी फिर अपना दाया हाथ ऊपर उठा कर बोले "तथास्तु !"

और देखते ही देखते वहाँ पर एक सफेद रग की बिल्ली आन खडी हुई। नीली-नीली आखे छोटा-सा मुँह, मुलायम और सफेद बर्फ जैसी खाल। उसे देखकर साधु महाराज भी हैरान रह गए। क्षण भर तो वह महाराज के सामने खडी रही फिर झपट्टा मार कर चूहे के बिल की ओर लपकी। मगर बिल को खाली देखकर चूहो की खोज मे कुटिया से बाहर चली आई।

बिल्ली बनते ही वह बिल्लियो से बदला लेना भूल गई, उलटे चूहो पर ही टूट पडी। जहाँ कोई चूहा नजर आता। उसे काट खाती। हर वक्त उसका मुँह और पजे खून से सने रहते।

पर धीरे-धीरे वह फिर असन्तुष्ट रहने लगी।

एक दिन जब साधु महाराज गगातट से लौटकर आए तो बिल्ली छत पर बैठी रो रही थी। कहने लगी

"महाराज, असल ताकत तो कुत्ते मे होती है, उसके सामने बिल्ली की क्या गति ? जब आप चले जाते है तो एक कुत्ता मुझे खाने को दौडता है। उससे सब डरते है बिल्ली की खाल को वह देखते ही देखते उधेड डालता है, उसके दात मोटी-मोटी हड्डियाँ भी तोड डालते है। महाराज, मै बलवान बनना चाहती हू। आप मुझे कुत्ता बना दे।"

महाराज कुछ कहना चाहते थे, मगर चुप रहे और चुप चाप कमण्डल में से गगाजल की बूंदे बिल्ली पर छिडक कर "तथास्तु" कह दिया।

और देखते ही देखते बिल्ली के स्थान पर एक डवियाले रंग का कुत्ता अपने कान और पूंछ हिलाता हुआ आन खड़ा हुआ। पतली टांगें, तेज नुकीले दांत, आगे को बढ़ा हुआ नथना।

बस फिर क्या था। कुटिया के बाहर रोज हड्डियों के ढेर लगने लगे। कभी गिलहरी, कभी खरगोश, कभी बिल्ली, जो कोई मिलता कुत्ता उसे झपट कर मार डालता और अपने तेज नुकीले दांतों से उसकी बोटी-बोटी चबा जाता। कुटिया के बाहर जमीन पर खून के धब्बे ही धब्बे नज़र आने लगे।

मगर एक दिन जब महाराज कुटिया में मृगछाला पर बैठे विश्राम कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि कुत्ता दूर जंगल से रोता-कराहता चला आ रहा है। उसका एक कान कटा हुआ था और शरीर पर जगह-जगह से खून बह रहा था।

महाराज आसन छोड़कर उठ खड़े हुए और उसे अन्दर लिवा लाए।

"क्या हुआ? तेरी यह दशा किसने की?"

"महाराज, रीछ बड़ा बलवान जानवर है। उसमें असल ताकत है। अगर मैं भाग नहीं आया होता तो वह मुझे आज मार खाता।"

महाराज ने कुत्ते के जख्म धोये, मगर कुत्ता बार-बार जमीन पर पांव पटक-पटक कर कहता गया

"महाराज, रीछ से सब डरते हैं। मेरे भी उस जैसे तेज़ नख और पंजे होते तो मुझसे भी सब डरते। रीछ किसी को अपनी बांहों में ले ले तो उसकी हड्डियां तोड़ डालता है। कुत्ते, बिल्ली को तो वह एक झपट्टे में मार डालता है।"

महाराज कुत्ते का अभिप्राय समझ गए, और हँसते हुए उस पर गंगाजल छिड़क दिया और उसे रीछ बना दिया।

रीछ बनते ही पहले तो वह साधु महाराज पर गुर्राया। यदि साधु महाराज में योगबल न होता तो वह पहले उन्हीं पर अपने पंजे चलाता। अपनी शक्ति से वह मतवाला हो उठा। लाल आंखें, भयानक काला शरीर, लम्बे-लम्बे नख, मोटा नथना, भागा हुआ वह वन में चला गया, और सब छोटे-छोटे जानवरों पर अपना हाथ साफ करने लगा।

मगर उस जीव की शक्ति की भूख कब मिटने वाली थी। थोड़े ही दिनों में उसे अपने से बलिष्ट भालू नजर आया, फिर चीता, फिर बाघ। एक-

एक करके वह सभी में बदलता गया। उस जगल में शेर न था, नही तो वह शेर बन कर सबसे शक्तिवाली बनना चाहता।

आखिर वह एक रोज महाराज के सामने हाथ बाध कर बोला

"महाराज, मैंने देख लिया है। बन मे सबसे शक्तिशाली जीव हाथी है। उस की शक्ति की कोई सीमा नही। वह अपनी सूड से बडे-बडे पशुओ को पटक देता है। एक एक पदाघात से ऊचे-ऊचे पेड तोड फेकता है। उसके दात कितने लम्बे है। आप मुझे हाथी बना दें। यह मेरी अन्तिम प्रार्थना होगी।"

"सोच ले, मूर्ख, फिर तो भागा-भागा मेरे पास नही आयगा?"

"नही महाराज, अब कभी नही आऊँगा। आप मुझे हाथी बना दे।" महाराज ने हँसते हुए अपना मत्र पढ़ दिया और गगाजल छिडक दिया।

कुटिया के बाहर एक ऊचा, अधियारे रग का भीमकाय हाथी झूमने लगा। कद मे कुटिया से भी ऊचा, लम्बे-लम्बे दो दात, विकराल देह, स्थूल बोझल टागे।

हाथी चिघाडता हुआ वन की ओर दौडा। उसकी शक्ति का पार न था। जगल के जिस भाग मे जाता, पशु वहा से भाग खडे होते। उसकी चिघाड को सुन कर पेडो पर बैठे हुए पक्षी थर-थर कापते हुए उडने लगे। पेड, पौधे झाडियां उखाडता हुआ बडे-बडे पशुओ को अपने पाव के नीचे कुचलने लगा। उसके अत्याचार से सारे वन मे कोहराम मच गया।

और एक दिन, वह इस तरह गर्व से चिघाडता हुआ एक वृक्ष कुज को तहस-नहस करके बाहर निकल रहा था कि सहसा उसका पाव उखड गया और वह धडाम से एक गढे मे जा गिरा। उसके गढे में गिरने की देर थी कि जगल मे बहुत से मनुष्यो की आवाजे आने लगी, और देखते ही देखते बीसियो आदमी हाथो में रस्से, बर्छे और तरह-तरह के हथियार उठाए मुंह पर मुश्के बाधे, गढे के इर्द-गिर्द आन खडे हुए। गढे में गिरते ही हाथी के दोनो दात गढे की दीवार के साथ टकरा कर टूट गये थे। उसके माथे और टागो पर गहरी चोट आई थी, और वह दर्द से कराहने लगा था। उसने गढे में से निकलने की बहुतेरी कोशिश की मगर ज्योंही गढे की दीवार के साथ अपने पाव लगाकर उठने का प्रयत्न करता, उसी समय उस पर बर्छे और भालो के प्रहार होने लगते। हाथी दर्द और क्रोध से पागल हो उठा।

जब शिकारियो ने देखा कि हाथी काबू में आ गया है तो उस पर रस्से फेंकने लगे। गढे मे की एक दीवार लकड़ी की थी, उसे तोड़ कर शिकारी हाथी को बाधे उसे मारते-घसीटते बाहर निकालने लगे। एक आदमी उसकी गर्दन पर तेज कटार लेकर आ बैठा। रस्सो से उसके पिछले दोनो पाव एक साथ बाध दिए गए। इस प्रकार हाँकते हुए वह हाथी को जंगल से बाहर ले जाने लगे।

इतने में शाम पड गई और चारो ओर अधेरा छा गया। एक स्थान पर शिकारी रुक गए और हाथी के पाँव को मोटे-मोटे रस्सो से एक वटवृक्ष के तने के साथ बाँध कर यह सोच कर कि उसे कल खीच कर शहर को ले जाएगे, वह जंगल में से बाहर चले गए।

रात गहरी होने लगी। भूख और शरीर की पीड से व्याकुल हो हाथी बार-बार चिंघाडने लगता, मगर जगल में उसकी आवाज चारो दिशाओ में घूम कर लौट आती। उसका क्रन्दन शून्यता को भग करता हुआ फिर शून्यता ही मे खो जाता। वह बार-बार अपने जी मे कहता—"जो मुझे मालूम होता कि हाथी से भी कोई बड़ी चीज जीव है तो मै शिकारी बनता। काश कि साधु महाराज को मेरी दशा का ज्ञान हो जाए।'

इतने मे हाथी को ऐसे भास हुआ जैसे उसके पिछले पाँव पर खुजली हुई है। हाथी ने कोई ध्यान न दिया। फिर खुजली हुई, फिर भी उसने कोई ध्यान न दिया। फिर ऐसा जान पड़ा जैसे उसके पिछले पाँव पर से कोई हल्की-हल्की आवाज कर रहा है। आकाश में चाँद खिल उठा था। सिर झुका कर हाथी ने अपने पाँव की ओर देखा। क्या देखता है कि एक नन्हा-सा चूहा उसके पाँव पर चढा हुआ है। हाथी को पहले तो क्रोध आया और जी चाहा कि उसे वही पर मसल दे। मगर आकाश मे छिटकी चाँदनी मे जब उसने चूहे की ओर दोबारा देखा तो देखकर हैरान रह गया। नन्हा-सा चूहा उसके पाँव पर बैठा, अपने नन्हे-नन्हे दाँतो से उसकी रस्सियाँ काट रहा था। हाथी आँखे फाड़-फाड़ कर उसकी तरफ देखने लगा। यह चूहा कौन है? क्यो मेरे बन्धन काट रहा है? हाथी बार-बार सोचता और हैरान हो उठता।

रात बीत चली। धीरे-धीरे पौ फटने लगे। पूर्व की ओर आकाश का रग सुनहला होने लगा। जब सूर्य देव ने क्षितिज पर दर्शन दिए और उनकी पहली किरणो ने जंगल पर अपना स्वर्ण बखेरना शुरू किया तो जगल में शिकारियो की हू-हू-हा-हा फिर सुनाई पड़ने लगी। हाथी काँप उठा।

मगर ठीक उसी वक्त उसकी रस्सी का आखिरी फन्दा भी टूट कर अलग हो गया, और उसका शरीर आज़ाद हो गया ।

हाथी ने कृतज्ञता से झुक कर चूहे की ओर देखा मगर चूहे का वहाँ नाम निशान न था । रस्सियाँ काटते ही वह चुपचाप कही चल दिया था ।

हाथी उछलता-कूदता साधु महाराज की कुटिया की ओर भाग खडा हुआ ।

सन्ध्योपासना से निवृत हो साधु महाराज कमण्डल उठाए, गगा तट को जाने के लिए तैयार थे जब उनकी कुटिया के सामने हाथी आन खडा हुआ ।

"कहो गजराज, अब क्या है ?" साधु महाराज ने पूछा ।

हाथी ने दोनो जानु पृथ्वी पर टेक अपनी सूँड को बार-बार ऊपर उठा महाराज को प्रणाम किया ।

"महाराज, मे आप से अन्तिम वरदान की भिक्षा माँगने आया हूँ ।"

महाराज ने उसे सिर से पाव तक देखा ।

"अब भी कोइ लालसा बाकी है ? क्या शिकारी बनना चाहते हो ?"

"नही महाराज, आप मुझे फिर से चूहा बना दे ।"

"चूहा ? शक्ति के राजा से तुम चूहा बनना चाहते हो ?"

"हाँ, महाराज, मुझे मारनेवाली शक्ति नही चाहिए, मुझे ऐसी शक्ति दीजिए जिससे मैं औरो के बन्धन काट सकूँ ।"

महाराज ने हसते-हसते उसी क्षण गगाजल की बूँदे छिडक दी, और अपना आशीर्वाद दे दिया ।



थापड़ थैया

'रत्न' वडोला

एक गाव मे एक पडित जी रहते थे। उनके सिर पर एक लम्बी चोटी, माथे पर चन्दन पुती और गले में सदा रुद्राक्ष की माला पड़ी रहती थी। यदि सच कहा जाय तो पण्डित जी के लिए काला अक्षर भैंस वरावर था। परन्तु अपनी चालाक वुद्धि से अनपढ गॉव वालो को पण्डित जी ने खूब मूर्ख बना रखा था, और उन्हे खूब ठगते थे।

एक दिन गाँव वालो ने मिल कर सत्यनारायण की कथा की। उस रोज पण्डित जी ने अपने पिता जी की रखी हुई मलमल की पगडी निकाल कर और अपनी मिरजई पण्डिताइन से धुलवाकर पहनी। वस पण्डित जी जच गये। गोरे चेहरे पर वडा चन्दन का टीका ऐसे सज गया जैसे सफेद कागज़ पर छापे के शव्द। सत्यनारायण की कथा के श्लोक पण्डित जी यो जल्दी-जल्दी गुनगुनाने लगे—

'यस्य ज्ञानम् दयासिन्धो, लगा धक्का तो गिर पडा।
भैंस तो मेरी मर गई दूध का तोडा पडा।'

इसी प्रकार के दो चार श्लोक पण्डित जी को खूव याद थे। सत्यनारायण की कथा हो, चाहे शिव जी की, चाहे भूत-मन्त्र पढना हो पण्डित जी इसी प्रकार के दो-चार श्लोको को घुमा-फिरा कर इतनी जल्दी पढ जाते थे कि सुनने वाले उन्हे कालिदास और भर्तृहरि ही समझ लेते थे।

एक समय की वात है कि दो भाई काशी से आचार्यत्व की पदवी तथा सस्कृत के पूरे पडित वन कर घर लौटने लगे। रात होने पर उनको उसी गाँव मे विश्राम लेना पडा। उन्हे पण्डित समझ गाँव वाले अपने पण्डित जी से मिलाने के लिये उत्कठित हो गये। गाँव वालो ने दोनो भाइयो से अपने पण्डित जी की विद्वता के वहुत गान गाये और कहा कि शास्त्रार्थ मे हमारे पण्डित जी से कोई भी नही जीत सकता।

दोनो आचार्य पडित जी से मिलने के लिये पहुँचे। देखा, पडित जी भगवान की मूर्ति के सामने पूजा कर रहे है। पण्डित जी ईश्वर की स्तुति में यह श्लोक वार-वार दुहरा रहे थे—

-

'दो पैसा तो मिल गया, एक चवन्नी की है चाह
पगडी, धोती नई मिले, हे ईश्वर, हे परम पिता ।'



पण्डित जी ईश्वर की स्तुति में यह श्लोक वार-वार दोहरा रहे थे—
'दो पैसा तो मिल गया, एक चवन्नी की है चाह
पगडी, धोती नई मिले, हे ईश्वर हे परम पिता ।'

इस प्रकार की स्तुति को सुनकर दोनो आचार्य जोर से हसने लगे । तब नाराज होकर पडित जी ने उन्हें शास्त्रार्थ के लिये ललकारा । शर्त यह हुई कि जो हार जाय वह अपना सब सामान और असवाव जीतने वाले को दे दे ।

शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ । गांव के पण्डित जी ने एक अर्ब-वाक्य कह कर उसे पूरा करने को कहा वह अर्ब-वाक्य था, "थापड थैया"

दोनो आचार्य घवडाये, और उसे पूरा करने के लिये कोई भी श्लोक न गना सके । उन्हे पता न चला कि थापड थैया क्या वला है । अन्त में हार कर तमाम अपना सामान गांव के पण्डित जी को देकर दुखी मन से वे घर लौट आये । घर जाकर उन्होंने यह सारी घटना अपने छोटे भाई को वताई जो घर पर रह कर खेती करता था, और अनपढ था परन्तु था वडा ही होशियार ।

L

बहुत सोचने पर उसे बदला लेने की तरकीब सूझ गई। उसने भी पण्डित जी का रूप धारण किया, चन्दन का लेप किया और माला आदि डाल कर चल पडा।



शास्त्रार्थ मे गाँव के पण्डित जी हार गये

उसी गाँव मे आकर उसने शस्त्रार्थ के लिये पण्डित जी को ललकारा। पहले जैसी शर्त फिर बध गई। गाँव के पण्डित जी ने उसी प्रकार पूरा करने के लिये 'थापड थैया' कहा, जिसे नये पण्डित ने झट पूरा कर दिया।

'पहले पीसी चक्की, गूंधा आटा, चक चक चैय्या
तवा चढा दिया चूल्हे पर फिर रोटी की थापड थैया'.

शास्त्रार्थ मे गाँव के पडित जी हार गये। नये पण्डित जी वहुत-सा धन तथा अपने भाइयो का सामान लेकर जीत का डका वजाते हुए घर लौट आये।

क्कड जी को वुला लाया और हाथी के पांव के निशान दिखा कर जानना चाहा। लाल वुझक्कड ने अपनी वुद्धि दौडा कर कहा—

'लाल वुझक्कड वूझते—और न वूझे कोय—
पैरो चक्की वाध के—हिरना कूदा होय।'

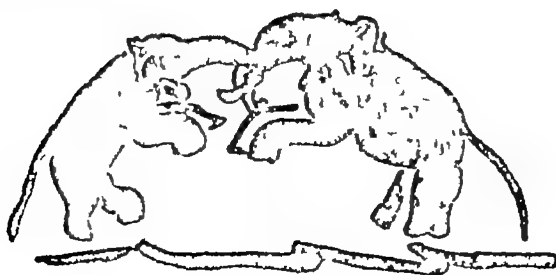
गांव वालों ने धन्य ! धन्य ! कह कर लाल वुझक्कड की वात मान ली। उन्हें यकीन हो गया कि पावो में चक्की वाध कर हिरन ही उछालें मारता हुआ यहां से निकला है।

एक घटना और सुनिए। एक दिन एक छ सात वर्ष की कन्या अपने घर के वरामदे मे खभे को पकडे खडी थी। इतने में एक स्त्री गांव में भीगे चने बांटती आई और उस कन्या को दे गई। कन्या ने खभे को दोनो भुजाओ में लिए अजली मे चने ले लिए। जव कन्या ने घर में जाना चाहा तो, वह निकल न सकी। क्योकि हाथ अलग-अलग किए विना निकलना असम्भव था और ऐसा करने से चने विखर जाते। लडकी ज़ोर-जोर से रोने लगी। घर के और गांव के लोग इकट्ठे हो गए। सव परेशान थे कि लडकी को कैसे निकाला जाय। जव कोई उपाय न सूझा तो वहां लालवुझक्कड जी को वुलाया गया। उन्होने फौरन कहा—

'लाल वुझक्कड वूझते—और वूज्झे कोय।
छान उठा कर काढलो—होनी हो सो होय॥'

ऐसा ही किया गया। गाव के लोगो ने छप्पर[१] उठाया तव कही उस लडकी को उठा कर खभे में से निकाला गया। ऐसी अनेक-कवितायें लाल वुझक्कड जी की प्रसिद्ध हैं जिनसे पता चलता है कि वह अपने गांव में मूर्ख शिरोमणि थे।

१ घास फूस का छप्पर



दूध का तालाब

अरुण कुमार (१२ वर्ष)

वीरवल वादशाह् अकवर के नवरत्नो में से एक थे। अपने हँसमुख स्वभाव और हाज़िरजवावी के कारण वे राजा अकवर के वड़े प्रिय पात्र वन गये थे। दोनो मे प्राय नोक-झोक हुआ करती थी। एकवार अकबर का दरवार लगा हुआ था। चारो ओर नवरत्न वैठे हुये थे। राजा अकवर अपनी गद्दी पर वैठे हुये अपना पेचदार हुक्का गुडगुडा रहे थे। वात ही वात में वणिकों की चर्चा छिड पडी।



अकवर वोले, "ठीक है। अगले वुधवार तक हम इस वात का सवूत चाहते है।"

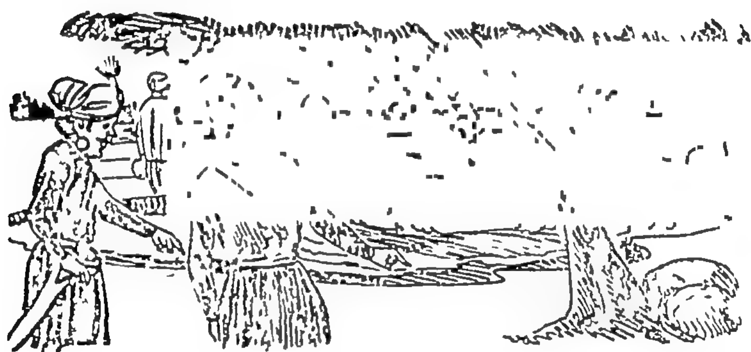
वीरवल ने कहा, "वादशाह सलामत, वणिको के स्वभाव की एक खासियत है।"

वादशाह ने पूछा, "वह क्या खासियत है ? हमे भी बताओ बीरबल ।"

वीरवल, "जहापनाह जहाँ पैसा खर्च करने का सवाल आता है वहाँ सव वणिको का एक मत होता है । हर एक यही सोचता है कि पैसा खर्च करे विना काम हो जाय तो अच्छा है ।"

वादशाह अकवर वोले, "मै तुम्हारी वात मानने को तैयार नही हूँ, क्योकि दुनिया में अधिकतर यह देखने को आता है कि एक घर के चार भाइयों का एक मत नही होता फिर भला सव जात भाई एक मत के कैसे हो सकते है ?"

अवुलफज़ल, टोडरमल तथा अन्य दरवारी वादशाह की हाँ मे हाँ मिलाने लगे । वीरवल ने कहा, "जहापनाह साँच को आँच क्या ? मेरी वात परख ली जाये ।"



सव यह देख कर हैरान हो गये कि तालाव दूध की जगह पानी से भरा हुआ था। अव वीरवल ने सिर झुका कर सलाम किया और पूछा, "कहिए जहांपनाह मेरी वात सच निकली न ?"

अकवर वोले, "ठीक है । अगले वुधवार तक हम इस वात का सवूत चाहते है ।"

वीरवल ने हाथ जोड़कर कहा, "अन्नदाता ! महल के वगीचे मे जो तालाव है उसे खाली करवा दिया जाय और इस वात का नगर मे ढिंढोरा पिटवा दिया जाय कि नगर के सव वणिक मंगल की रात को तालाव मे एक-एक लोटा दूध डाल जायें । साथ ही इस वात का भी प्रवन्ध हो कि तालाव के पास दो दरवाजे हों । एक से एक-एक करके सव वणिक आये और दूसरे से निकल जाये ।"

बादशाह ने बीरबल के कहे मुताबिक प्रबन्ध करवा दिया। मंगल की रात को नगर के सब वणिक एक-एक लोटा लेकर महल की ओर चल पड़े। पर हर एक ने यही सोचा हुआ था कि 'सब तो दूध डालेंगे ही यदि मैं एक लोटा पानी डाल दूँ तो क्या पता चलता है? काहे को पैसा बिगाड़ा जाये।'

दूसरे दिन बीरबल अकबर के साथ बाग में पहुँचे। सब दरबारी भी साथ थे। सब यह देख कर हैरान हो गये कि तालाब दूध की जगह पानी से भरा हुआ था। अब बीरबल ने सिर झुका कर सलाम किया और पूछा, "कहिये जहाँपनाह! मेरी बात सच निकली न?"





पुजारी ने जब पिटारी किनारे की ओर आती देखी तो बहुत ही खुश हुआ।

धूर्त पुजारी

सोमदत्त शुक्ल

एक समय गंगा नदी के किनारे एक मन्दिर में एक पुजारी रहता था। इस पुजारी ने मौन रहने की प्रतिज्ञा की थी और शहर के सब लोग इस बात को जानते थे। पुजारी जी रोज एक धार्मिक व्यापारी के यहां भिक्षा (सीधा) लेने जाते थे। सदा की भांति जब वह एक दिन भिक्षा लेने व्यापारी के यहां गया तो उस दिन व्यापारी की लड़की, जो बड़ी सुन्दर थी, उसे सीधा देने बाहर आई। लड़की को देखकर पुजारी उस पर मोहित हो गया और उसके मुंह से एकाएक निकल पड़ा—"ओह!"

पुजारी के ये शब्द व्यापारी के कान में पड़े और यह सुन कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह दौड़ा-दौड़ा पुजारी के पास आया और पूछा—

"महाराज, आपने मेरी बेटी को देख कर 'ओह' क्यों किया ? आपने अपना मौन व्रत तोडा, ज़रूर कोई बात है।"

धूर्त पुजारी ने पहले तो उत्तर देने में आनाकानी की। लेकिन, बार-बार अनुरोध किये जाने पर उसने कहा—"मैंने इसलिए 'ओह' किया क्योकि आपकी लडकी अत्यन्त सुन्दरी होने पर भी अभागी है।"

व्यापारी—"यह कैसे हो सकता है ? यह तो मेरी एक मात्र सन्तान है।"

पुजारी—"जब इस लड़की की शादी होगी तो आप और आपके परिवार के सभी लोगो की मृत्यु हो जायेगी।"

इस पर व्यापारी ने चिन्ता और दु ख प्रगट करते हुए पूछा—"तब मुझे क्या उपाय करना चाहिए, जिससे इस दैवी प्रकोप से बचा जा सके ? कोई पूजा-पाठ बताइये।"

पुजारी ने गम्भीर होकर कहा—"पूजा पाठ से कुछ नही होगा। यह तो विधि का विधान है। पत्थर की लकीर है। हाँ, एक उपाय है। आज रात को ही आप लडकी को एक पिटारी में बन्द करके, फिर पिटारी पर एक जलता हुआ दिया रख कर, गंगा में प्रवाहित कर दीजिए।"

व्यापारी की आँखों में आँसू आ गये और वह रुँधे हुए स्वर में बोला—"तो महाराज कोई दूसरा रास्ता नही है ? आपने यह तो बडा भयकर उपाय बताया। जिस पुत्री को मैंने पाल-पोस कर इतना बडा किया, लाड़-प्यार किया, अपने जीवन की सभी आशाएँ लगाईं, उसे गगा में निर्मोह होकर छोड देना मेरे बस का नही है।"

इस पर पुजारी ने अति गम्भीर होकर रूखे स्वर में कहा—"कोई दूसरा रास्ता नही है।" इतना कह कर वह चलने लगा।

व्यापारी ने बडे दु ख के साथ रोते-रोते कहा—"तो कल पौ फटने से पहले ही आपकी इस आज्ञा का पालन किया जायगा।"

उधर धूर्त पुजारी ने मन्दिर में पहुँच कर अपने नौकर चाकरों को बुला कर आदेश दिया—"आज रात को गंगा तट पर निगरानी रखना और यदि तुम्हें कोई चमकती हुई चीज़ दिखाई दे तो उसे बाहर निकाल ले आना। उसे खोल कर न देखना, वरना भस्म हो जाओगे।"

इधर व्यापारी ने पुजारी की आज्ञा के अनुसार अपनी पुत्री को पिटारी में वन्द कराके, उस पर एक दिया रख कर गगा में प्रवाहित कर दिया। भाग्य से एक राजकुमार ने जो उस समय गगा तट पर आखेट करने आया था, इस अजीव-सी चीज़ को देखा और ज्यो ही वह पास आई त्यो ही राजकुमार ने अपने नौकरो को आज्ञा दी कि इसे निकाल लो। नौकर झटपट पिटारी को किनारे लाये। लेकिन जव राजकुमार ने उसका दिया हटाकर, ढक्कन खोला तो उसमे वैठी हुई एक सुन्दरी युवती ने अपना सर ऊपर उठा कर कुछ विस्मय और भय के साथ राजकुमार की ओर देखा। राजकुमार भी आश्चर्य से मूर्तिवत खडा रह गया। फिर होश सभाल कर उसने उस युवती को पिटारी से वाहर निकाला और पूछा—"हे सुन्दरी, आपको इस पिटारी मे वन्द करके गगा मे इस प्रकार प्रवाहित किये जाने का क्या कारण है ?" युवती ने आदि से अन्त तक सारी कहानी कह सुनाई। राजकुमार सब कुछ समझ गया। वह इसके रहस्य को भी ताड गया। उन्हें पुजारी की धूर्तता पर क्रोध और उस लडकी के पिता की नासमझी पर दया आई ?"

राजकुमार ने पूछा—"वह पुजारी रहता कहाँ है ?"

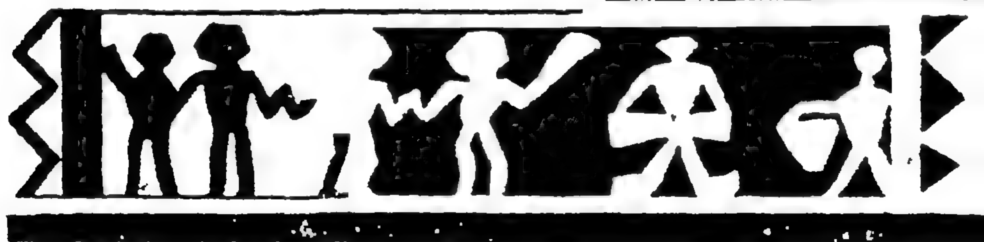
युवती ने उगली से इशारा करते हुए वताया—"नदी के उस किनारे पर जो मदिर है, वहाँ वह पुजारी रहता है।"

राजकुमार कुछ समय तक सोचता रहा और फिर अपने नौकरो को आदेश दिया कि पिटारी मे गुस्सैल वन्दर को, जिसे आज ही पिंजडे में कैद किया गया है, वन्द करके और उस पर दिया रख कर पुन प्रवाहित कर दो। नौकरो ने तत्काल ऐसा ही किया। इसके वाद राजकुमार ने अपने नौकरो को आज्ञा दी—"पिटारी के साथ-साथ जाकर देखो कि इसका क्या होता है और उसकी सूचना मुझे आकर देना।" कुछ समय वाद नौकर लौट कर आये और उन्होंने राजकुमार को आंखो देखा हाल इस प्रकार सुनाया—

'जव पिटारी मदिर के पास पहुँची तो मदिर मे चार-पाँच आदमी वाहर आये और उसे निकाल कर मन्दिर मे ले गये और उसे पुजारी के सामने रख दिया। पुजारी उसी क्षण पिटारी लेकर मन्दिर की सबसे ऊपर वाली मजिल पर गया। लेकिन ज्योंही उसने पिटारी का ढक्कन खोला कि वन्दर ने उस पर आक्रमण कर दिया। और वह 'हाय-हाय! मरा-मरा!' करता हुआ लुढकता-पुढकता सीढियो से नीचे आ गिरा। वन्दर ने पुजारी की नाक और कान काट लिये। हल्ला सुन कर पुजारी के नौकर वहाँ आ गये और उन्होंने वन्दर को भगा दिया।'

यह सब सुनकर युवती अपने मुँह पर हाथ रख कर फफक-फफक कर रोने लगी और राजकुमार के प्रति आभार प्रगट करने लगी। राजकुमार युवती को लेकर उसके घर गया और सारा वृत्तान्त उसके पिता को कह सुनाया। पिता ने भी राजकुमार के प्रति आभार प्रकट किया, यही नही उन्होंने अपनी लड़की की शादी भी राजकुमार के साथ कर दी।

उधर इस घटना से शहर के सब लोग यह जान गये कि पुजारी धूर्त, पाखडी और नीच है। पुजारी भी अपना मुँह किसी को नही दिखा सकता था। उसकी एक कान और नाक कट गई थी। वह मदिर के अदर भी नही रह सकता था —अतएव एक रात को वह चुपचाप नगर से भाग गया।



सज़ा

कृष्णाकुमारी

पण्डित माधो, पण्डित-वण्डित तो नही, परन्तु कहलाते अपने को पण्डित ही थे। सारा दिन गांव मे घूमघुमाकर जव सन्ध्या को घर लौटने लगते, तो धन्नु जाट के खेत के पास पहुँच कर तो उनकी वाछें खिल उठती। लहलहाते मक्की के खेत और उनमें लगे हुए नरम-नरम भुट्टे—'अहा! क्या चीज़ वनाई है कुदरत ने।' वह मन ही मन कहते और चल देते घर की ओर।

परन्तु भुट्टे खाने का लोभ ज्यादा दिन दवा न रह सका। एक दिन जव वह खेत के पास पहुँचे, तो मुँह मे पानी ही तो भर आया, मन ही मन बोले—'चोरी तो वो ही होती है न, जो छिप कर की जाए! भला मै कहा छिपा हूँ? और फिर अपने राम तो किसी से पूछ कर ही खाएगे भुट्टे।' जाने क्या सोच कर वह पास ही के तालाव पर गये, थोडा-सा पानी हाथ मे लेकर कुछ वुदवुदाये और वापस आकर दो-तीन भुट्टे तोडे, भूने और खाकर चलते वने।

इसी प्रकार जव कुछ दिन उनके भुट्टे तोडने पर किसी ने उन्हे मना नही किया, तो वह वहुत प्रसन्न हुए। वस फिर क्या था, अव तो उनका नियम ही वन गया कि रोज साँझ को घर लौटते समय तालाव के पास जाते और कहते—'ओ पानी ठण्डे-ठण्डे, तुझे पूछे माधो पण्डे, दो-चार भुट्टे खा लेवे?'

'खा लो जी खालो, अपना ही खेत है, दो-चार तो क्या जितनी इच्छा हो खाओ।' इस प्रकार स्वय पानी की ओर से उत्तर दे देते, उसके वाद भुट्टे खा कर यह जा वोह जा

इसी प्रकार कुछ दिन और व्यतीत हो गए। एक दिन धन्नु जाट ने महसूस किया कि तालाव की ओर से भुट्टे कम होते जा रहे हैं, उसने अच्छी तरह खेत का निरीक्षण किया और घर चला गया। अगले दिन प्रात उसने देखा कि कुछ और भुट्टे तोडे गए हैं। वह समझ गया कि अवश्य कोई गड-वडी है, सो उसने निश्चय कर लिया कि आज कैसे भी हो मै चोर को अवश्य पकडूंगा और वह वही कही छिपकर वैठ गया। रोज़ की भाँति माधो पण्डित आए और तालाव के पास जाकर उसी प्रकार वोले—'ओ पानी ठण्डे-ठण्डे, तुझे पूछे माधो पण्डे, दो-चार भुट्टे खा लेवें?' 'खा लो जी, खा लो आपको क्या परवाह है' इस प्रकार स्वय उत्तर देकर वडी वेफिक्री से लगे भुट्टे तोडने।

अपनी आंखो सामने, अपने ही खेत में, दूसरे व्यक्ति का यो घुस आना, जाट को ज़रा भी अच्छा न लगा। क्रोध से उवलता हुआ वह वाहर आया और पण्डित जी की गरदन पकड, ले चला उन्हे उसी तालाव के पास। पण्डित जी की तो जान पर वन आई। उन्होने वहुत हो-हल्ला किया, गिडगिडाये, परन्तु सुनता ही कौन था उनकी ? जाट तालाव पर पहुंच पण्डित जी के से स्वर मे वोला—'ओ पानी ठण्डे ठार, तैनै पुछ्छे जाट गवार, पण्डित ने दो-चार गोते दे लेवे ?'



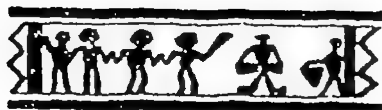
'दे लो जी दे लो—पण्डित जी तो अपनाई से। दो के जितने मर्जी दे लो गोते' यह उत्तर खुद देकर जाट ने पण्डित जी को चार पांच गोते दे ही दिये।

द लो जी दे लो पण्डित तो अपनाई से। दो के जितने मर्जी दे लो गोते।' यह उत्तर खुद ही देकर जाट ने पण्डित जी को पानी में डाल दिया। वाहर निकाला, फिर पानी से वही प्रश्न किया और पानी की ओर से स्वय उत्तर दे, फिर पण्डित जी को पानी मे डाल दिया। पण्डित जी के वहुत चिल्लाने पर भी जाट ने उन्हें पांच-छ गोते दे कर ही तव छोड़ा।

पण्डित जी बुरी तरह हाँफ रहे थे और जाट कह रहा था—"तैने बेरा न था, कि धन्नु जाट का खेत से था ? अगर तैने खाने ही थे तो माँग लेन्दा, भला चोरी क्यो करी तैने ? ले बोल के जरूरत थी चोरी की ?"

जाट कहे जा रहा था परन्तु पण्डित जी को इतनी फुरसत कहाँ थी कि वह जाट की बातें सुनते। वह तो कान मूंदे भागे चले जा रहे थे, घर की ओर। उन्हें काफी सज़ा मिल चुकी थी।

और आज ? आज भी वही मक्की के लहलहाते खेत है, उनमे लगे हुए वैसे ही नरम-नरम भुट्टे, वही पण्डित जी के घर की ओर जाती हुई पगडण्डी, परन्तु पण्डित जी आज बदले हुए है। दो वर्ष पहले मिली हुई सज़ा को वे भूले नही है। घर जाते समय कभी-कभी वह जाट उन्हें खेत की मेढ पर बैठा दिखाई देता है और उन्हे बडी मित्रता के से स्वर मे सम्बोधन कर कहता है—'पण्डित जी दो-चार भुट्टे तो खाते जाओ। भाई अब तो थूक दो गुस्से को, भला इतना क्रोध भी किस काम का ?' परन्तु पण्डित जी यह कहते हुए कि 'भूख नही है फिर कभी सही', आगे खिसक जाते है। वह अब तक यही समझे हुए है कि जाट उनका मज़ाक उडा रहा है। लज्जा से सिर झुक जाता है उनका और वह मन ही मन सोचते है कि 'क्या ही अच्छा होता यदि घर जाने को कोई और भी पगडण्डी होती।'



अन्धेर नगरी चौपट राजा

आशा देवी

एक महात्मा थे। वे बडे विद्वान् और निर्लोभी थे। उनका रामदास नाम का एक चेला था। एक दिन गुरु और चेला तीर्थ करते करते एक नगरी मे पहुँचे। गुरु ने शहर से दूर एक मन्दिर के पास अपना डेरा डाला और चेले से कहा, "जा बेटा, शहर जाकर कछ खाने-पीने की सामग्री खरीद ला।" चेला बाज़ार से लौटा तो झोली भर कर सामान ले आया। गुरुजी ने पूछा, "बच्चा, इतने थोडे पैसो मे इतना सामान कैसे आ गया?"

चेला बोला, "महाराज! कुछ न पूछिए इस नगर का! यहाँ हर एक चीज़ टके सेर बिकती है। नगर की प्रत्येक दुकान पर यात्रियो को सूचित करने के लिए लिखा हुआ है कि 'टके सेर भाजी टके सेर खाजा'।"

खैर खा-पीकर शाम को सत्सग हुआ। दूसरे ही दिन गुरुजी ने चेले को चलने की तैयारी करने को कहा तो चेला बोला, "महाराज! मुझे तो यह नगर बड़ा अच्छा लगा। यहाँ सभी चीज़ सस्ती है, खाने-पीने की मौज है। मै तो यही डेरा जमाऊँगा।"

गुरुजी ने कहा, "बेटा, यह अन्धेर नगरी है, यहाँ के राजा का नाम है चौपट महाराज! यहाँ किसी भी बात का न्याय नही हो सकता। बुरे-भले, सच्चे-झूठे सब एक ही समान समझे जाते है। अतएव मेरी राय मे तो यहाँ रहना मुसीबत मे पडना है।" पर चेले ने गुरु की सलाह नही मानी। हार कर गुरुजी चले गये और कह गये कि ठीक है, ठोकर खाये बिना तुम अक्लमन्द नही बन सकते।

गुरुजी के चले जाने के बाद चेला रोज़ दोपहर को शहर मे चिमटा बजाता हुआ निकलता और डट कर पूरी-हलवा और खाजा-मिठाई खाकर आता। एक दिन किसी दुकान की दीवार गिर जाने से एक आदमी नीचे दब कर मर गया। इस मामले की रिपोर्ट कोतवाल ने राज-दरबार मे कर दी। मकान-मालिक पकड लिया गया। जब उसकी पेशी हुई तो वह हाथ जोड़ कर बोला, "महाराज! इसमे मेरा कोई कसूर नही। राज ने दीवार कमज़ोर बनाई थी।" अब राज पकड़ कर लाया गया। हाथ जोड़ कर राज बोला, "अन्नदाता! दिखता है मज़दूर ने उसमे गारा और मसाला पतला मिलाया होगा।"

मज़दूर की पेशी हुई। वह गिडगिडा कर बोला, "गरीब-निवाज, मेरा कोई कसूर नही है। मास्की ने पानी अधिक डाल दिया था इसलिये गारा पतला हो गया।"

इस पर मास्की को पकड कर हाजिर किया गया। मास्की फर्शी सलाम करके बोला, "सरकार! मै बेकसूर हूँ। जब मै गारे में पानी डाल रहा था उस समय रामदास ज़ोर-ज़ोर से चिमटा बजाता हुआ उधर से निकला, बस मेरा ध्यान उधर बँट गया। मेरी मुट्ठी ढीली पड गई। मै क्या करता?"



राजा ने कहा, "ठीक है, दो फन्दे लटका दिये जायें, हम दोनो साथ ही साथ फासी पर लटकेंगे।"

इस पर हुक्म हुआ कि रामदास को पकड कर फांसी दे दी जाय। उस समय रामदास हलवाई की दुकान पर बैठा डटकर मिठाई खा रहा था। इतने

में सिपाहियो ने जाकर उसकी मुश्कें कस ली और खीच कर फाँसी-घर की ओर ले चले। चेले ने बहुतेरे हाथ-पाँव जोडे पर उसकी किसी ने न सुनी। "हाय! गुरुजी! किधर गये? बचाओ मुझे! तुम ठीक कहते थे कि इस अंधेर नगरी में किसी के साथ न्याय नही होता।" इस प्रकार दुहाई देकर चेला रोने लगा।

संयोग से उसी समय घूमते-घामते गुरुजी भी उधर आ निकले। जब उन्हे पता चला कि उनके चेले को फाँसी लगने जा रही है, तब वह जल्दी-जल्दी फाँसी के मैदान पर पहुँचे। वहाँ पर एक ऊँचे मच पर राजा अपने मन्त्री सहित बैठा हुआ था। गुरुजी ने पहुँच कर राजा और मन्त्री को आशीर्वाद दिया और बोले, "महाराज! इस चेले के बदले मुझे फाँसी दी जाय।" राजा ने आश्चर्य से पूछा, "यह क्यो? आप क्यो मरना चाहते है?"

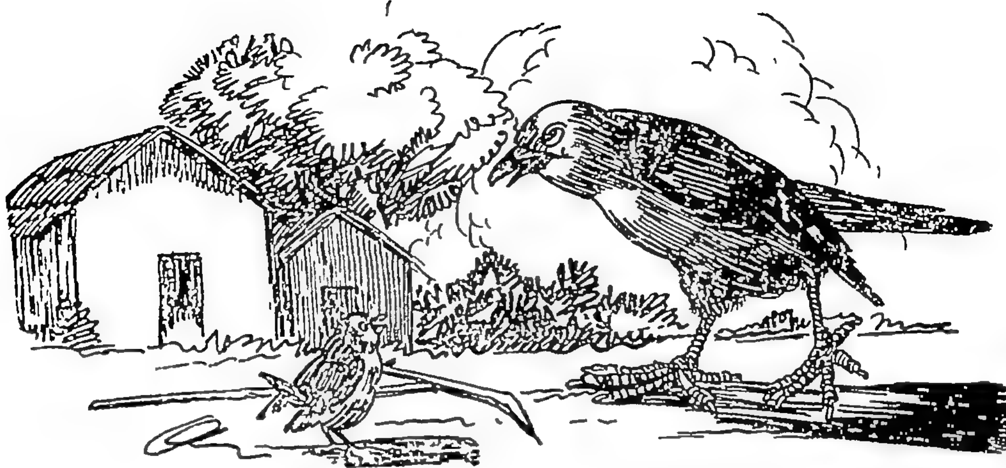
गुरु जी बोले, "धर्मावतार! मैंने गणना की है आज यह घडी मरने क लिए इतनी शुभ है कि जो आज मरेगा वह सीधा स्वर्ग जायेगा।"

इस पर राजा बोला, "तो मैं ऐसा शुभ अवसर क्यो हाथ से जाने दूँ? चेले के बदले मै ही फाँसी चढूँगा।" पर भला मन्त्री कब पीछे रहने वाला था, वह बोला, "महाराज, मैं आपका मन्त्री हूँ। मुझ पर भी कृपा की जाय।"

राजा ने कहा, "ठीक है, दो फन्दे लटका दिये जाय, हम दोनो साथ ही साथ फाँसी पर लटकेंगे।"

ऐसा ही किया गया। मूर्ख राजा और उसका खुशामदी मन्त्री दोनो ही उस दिन फाँसी पर लटक गये। गुरु जी अपने चेले को लेकर उसी दिन उस नगर से चल दिये। मार्ग मे गुरुजी ने पूछा, "क्यो बच्चा, अन्धेर नगरी का जीवन कैसा रहा?'

चेले ने अपना कान पकड कर कहा, "महाराज! भगवान बचाये ऐसे राजा और ऐसे राज्य से जहाँ न्याय का नाम तक नही। आपने ठीक ही कहा था कि बिना ठोकर खाये कोई नही सीखता।"



चिडिया ने कौवे से कहा—"कौवा भाई ! बरसात आ पहुँची है, आओ गेहूँ बोने के लिये ज़मीन तैयार कर लें।"

करनी का फल

ब्रह्मदेव शर्मा

एक जगल मे एक चिडिया और एक कौवा रहते थे। दोनो में बडी गाढी मित्रता थी। चिडिया पूर्ण रूप से अपनी मित्रता निभाती, लेकिन कौवा काइयां और धूर्त था। वह सदा ही चिडिया की शराफत का नाजायज़ फायदा उठाता। लेकिन था वह बहुत मिष्ट भाषी।

वर्षा ऋतु आ पहुँची थी। सब लोग बुआई आदि के कामो मे लगे थे। अवसर पाकर चिडिया ने कौवे से कहा—"कौवा भाई ! बरसात आ पहुँची है, आओ गेहूँ बोने के लिये ज़मीन तैयार कर लें।"

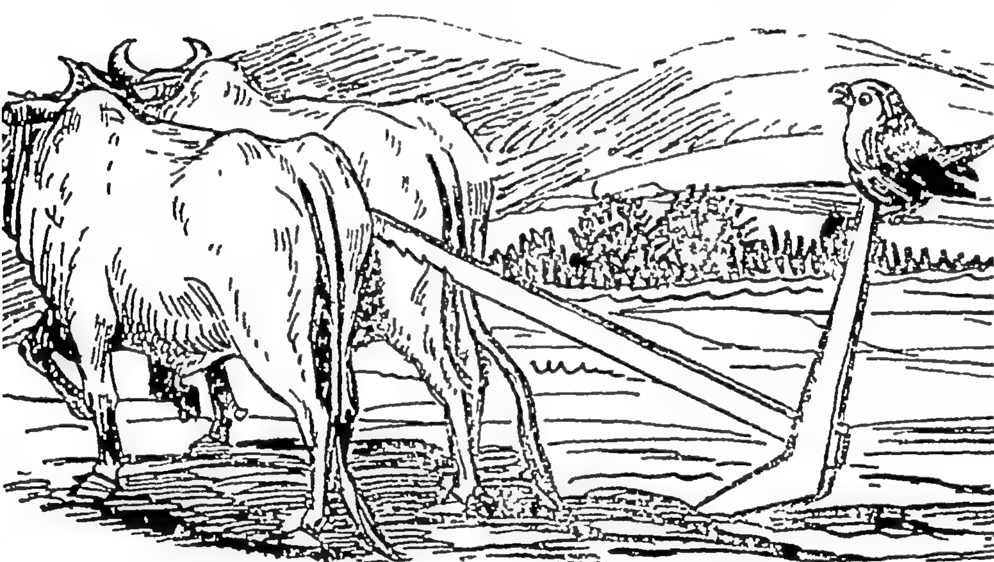
कौवे ने उत्तर दिया—"ठीक है चिडिया दीदी, देर नही करनी चाहिये, अगर एक-दो वार और भी ज़ोरो की वारिश हो गई तो बडी कठिनाई होगी। अच्छा तो····

तू चलती चल, मैं भी आऊँ।
हुक्का, तम्बाकू पी आऊँ।

बच्चों को रोटी दे आऊँ।
दो-दो बाते करता आऊँ।
नीम छाँव मे सुस्ता आऊँ।"

चिड़िया चली गई। दिन भर खूब मेहनत से काम किया। खेत पूरा जुत चुका था, लेकिन कौवे ने अभी तक कोई खबर नही ली। थकी-माँदी चिडिया सन्ध्या को घर लौटी। घर का काम-धन्धा किया। बाल-बच्चो को दाना पानी दिया। चिडिया काफी थक चुकी थी, शीघ्र सो गई।

सवेरा हुआ। चिडिया कौवे के पास गई और बोली—"कौवे भाई, खेत जुत चुका है। सायकाल तक तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही, लेकिन तुम नही आये। अच्छा हो अगर हम तुम दोनो आज मिलकर खेत बो दे।"



चिडिया चली गई। दिन भर खूब मेहनत से काम किया। खेत पूरा जुत चुका था, लेकिन कौवे ने अभी तक कोई खबर नही ली।

कौवे ने कहा—"हाँ ठीक है दीदी, मुझे दुख है मै कल न आ सका, घर के ही काम-धन्धो मे सब समय चला गया।" इतना कह कर उसने उपयुक्त गाना दुहरा दिया।

चिडिया चली गई। उसने खेत पर खूब मेहनत से कार्य किया। गेहूँ बोने का कार्य सायकाल तक समाप्त हो गया। कार्य से छुट्टी पा वह

घर आ गई। बाल-बच्चों को दाना-पानी दिया। बच्चों को सुला कर फिर खुद भी सो गई।

सवेरा हुआ। चिडिया घर से आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर कौवे के पास पहुंची और बोली—"भाई, गेहूं भी बोया जा चुका है। तुम्हारी प्रतीक्षा के बाद सब कार्य मुझे ही समाप्त करना पडा।"

खैर कुछ अर्से कार्य यो ही चलता रहा। गेहूं बडा हो गया। चिडिया कौवे से बोली—"गेहूं बडा हो गया, चलो उसे नला आयें, नही तो गेहूं का पौधा कमजोर पड जायेगा।"

चिडिया को कौवे का वही मीठा उत्तर मिला,

"तू चलती चल, मै भी आऊँ।
हुक्का तम्बाकू पी आऊँ।
बच्चों को रोटी दे आऊँ।
दो-दो बातें करता आऊँ।
नीम छांव में सुस्ता आऊँ।"

चिडिया खेत पर चली गई। सायकाल तक खेत की घास साफ की। कौवे की प्रतीक्षा के बाद वह घर आ गई। बच्चो की देखभाल की, दाना-पानी दिया। सब को सुला कर खुद भी सो गई।

एक दिन चिडिया ने कौवे से फिर कहा—"कौवे भाई! गेहूं अब पक चुका है, चलो दोनो मिलकर काट लें।" लेकिन चालाक कौवा उसके सुझाव को कब मानने वाला था? उसने फिर पुराना गीत दुहरा दिया।

चिडिया ने खेत पर खूब मेहनत से कार्य किया लेकिन दुष्ट कौवा फिर भी न गया।

चिडिया कठिन परिश्रम के पश्चात् घर लौटी। नित्य कार्यों से छुट्टी पा वह सो गई।

सवेरे चिडिया ने कौवे से कहा—"भाई कौवे, अनाज कट चुका है और अब गहवाई करनी है। आज हम दोनो मिल कर इस कार्य को कर डालें। वर्षा समीप है, दोखो, कैसे काले-काले बादल आकाश पर छाये हैं। ऐसा न हो नुकसान उठाना पडे।"

कौवे ने सदा की भांति मीठे स्वर में उत्तर दिया—"हाँ! हाँ। ठीक है अवश्य इस कार्य को आज ही कर डालना है। तू चलती चल · · ।"

यह सुन चिडिया खेत पर चली गई। दिन भर का कार्य समाप्त किया। गहवाई हो चुकी। अनाज और भूसा दोनो की अलग-अलग ढेरियां लगा दी गई।

तत्पश्चात् चिड़िया घर चली आई। फिर नित्य कार्य से निवृत होकर वह सो गई।

सवेरे शीघ्र उठ वह कौवे के पास गई और बोली—"भाई कौवे, आज बटवारे का दिन है, कम से कम बटवारे मे तो शामिल हो जाओ।"

कौवा बोला—"हां! हां ठीक है दीदी, चलो—"और शीघ्रता से कौवा उड़कर खेत पर जा पहुंचा। और गेहूँ की ढेरी पर जा बैठा।"

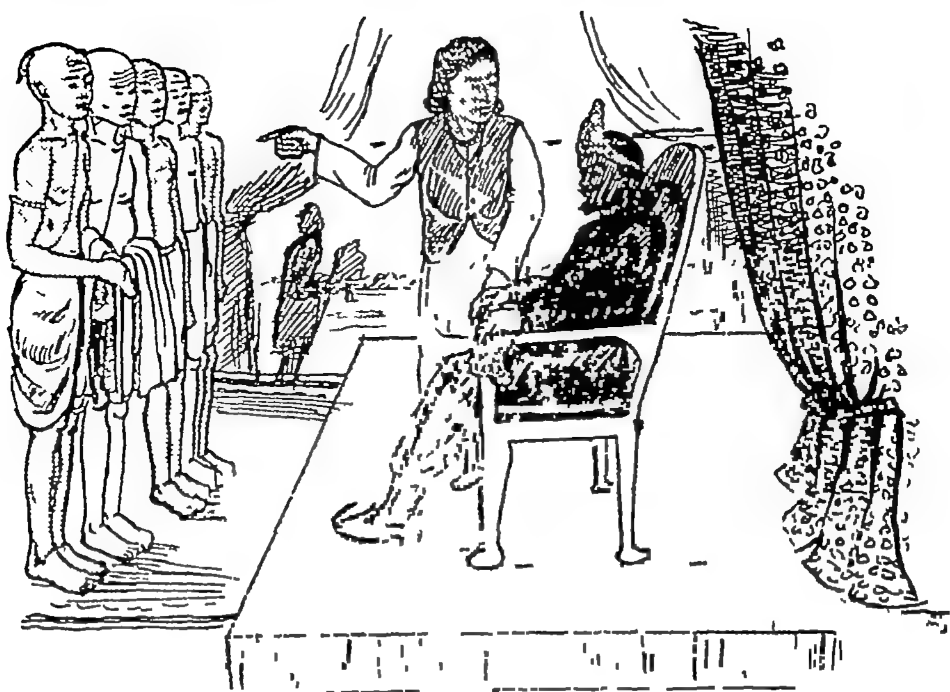
चिडिया जब वहां पहुँची तो हैरान थी। समस्या बडी विकट थी। कौवा किसी प्रकार भी अनाज की ढेरी से उठने के लिये तैयार नही था। चिडिया को कोई युक्ति समझ मे नही आई और हार कर वह घर वापस आ गई। वह हैरान थी कि आखिर कौवे ने ऐसा क्यो किया। उसके साथ अब कैसा व्यवहार करना चाहिये।

लेकिन विधाता को कुछ और ही मजूर था। कौवे की दुष्टता उससे छिपी नही थी।

उस रात्रि को बडे जोरो से वर्षा आई और ओले गिरे। कौवा सिकुड कर गेहूँ की ढेरी पर ढेर हो गया। दुष्ट को अपनी करनी का फल मिला।

चिडिया ने सवेरे अपना सब अनाज और भूसा इकट्ठा कर लिया और आराम से रहने लगी।





मन्त्री ने कहा—"महाराज इन्हें कह दें कि कल स्वय रसोई बनाकर दरबार में हाजिर हो।"

पांच किताबी पंडित

महेश्वर नायर

एक बार एक राजा के दरबार में पाच पडित आये। पाचो बडे विद्वान थे, केवल अपने-अपने शास्त्र मे। उनमे से एक कुशल तर्कशास्त्री था तो दूसरा वैयाकरण। तीसरा गाने बजाने में कुशल था तो चौथा ज्योतिष-शास्त्र में पारगत। पाचवाँ पडित वैद्यक शास्त्र में प्रवीण था।

अपनी विद्या का चमत्कार दिखा कर राजा से धन प्राप्त करने वे एक दिन दरबार में आये। उनके प्रमाण पत्र देखकर राजा बडा खुश हुआ। इनका स्वागत कैसे हो इसी विचार में राजा पडा। राजा ने अपने प्रधान

मंत्री की ओर देखा। उनका प्रधान मन्त्री बड़ा चतुर था। उसने राजा की अडचन जान ली और राजा के कान मे कहा—"महाराज, उन्हे कह दें कि कल खुद रसोई बना कर, भोजन कर, दरबार मे हाज़िर हो ।"

इस तरह की विचित्र सलाह सुनकर राजा आश्चर्य मे पडा। उसने प्रधान मन्त्री से कहा,—"तुम पागल तो नही हुए? इतने बडे पडितो से रसोई बनाने को कहें?"

"हाँ, इसमे क्या हर्ज है?" प्रधान मन्त्री ने उत्तर दिया।

"उनकी परीक्षा होने की बजाय हमें ही लोग भला-बुरा कहेगे।"

"उसकी चिन्ता आप न करे। मै देख लूंगा। आप वैसी आज्ञा दे।"

राजा को अपने मन्त्री की चतुरता पर काफी भरोसा था। राजा ने वैसा हुक्म दिया। पडितो को ठहरने के लिये एक बडी हवेली दी गई।

दूसरे दिन सुबह ये पाचो पडित रसोई बनाने की तैयारी मे लगे। उनमे से प्रत्येक ने एक-एक काम अपने-अपने जिम्मे लिया। तर्कशास्त्री घी लाने बाज़ार गया। एक बर्तन में घी लेकर घर लौटने लगा। घर आते समय उसके मन में आया कि इस बर्तन का आधार घी है या घी का आधार बर्तन? 'पात्रात् घृत वा घृतात् पात्र?' ऐसा सन्देह उसके मन में उत्पन्न हुआ। वह था तर्क शास्त्र का पडित! प्रत्येक विषय में तर्क कर बैठना ही उसकी आदत! उसने काफी तर्क किया, लेकिन कुछ निश्चय नही कर सका। आखिर घर पहुँचने पर ही निर्णय करने का उसने विचार किया। घी का आधार बर्तन या बर्तन का आधार घी इसे देखने के लिये उसने बर्तन उल्टा और घी ज़मीन पर गिर गया।

दूसरा पडित था व्याकरण का विद्वान। बाज़ार से दही लाने का काम उसका था। वह बाज़ार में गया। बाजार में दही बेचने वाली 'थईर-ओ-थईर-ओ' कह कर चिल्ला रही थी। (तेलुग भाषा में 'थईर' अर्थ है दही)। 'थईर-ओ' ऐसा व्याकरण की दृष्टि से गलत उच्चारण सुनकर इस व्याकरण का सिर भड़क गया उसने उस स्त्री को खरी खोटी सुनाई वह स्त्री भी भडक गई। दोनो मे झगड़ा हुआ। आखिर उस स्त्री को इतना गुस्सा आया कि उसने दही का मटका वैयाकरण के सिर पर दे मारा। मटके के टुकडे-टुकडे और उस पडित का दधि-स्नान हो गया। पंडित वहाँ से भागा और दही लिए बिना लौट आया।

गाने बजाने में जो कुशल था उसके पास चावल पकाने का काम था। चूल्हे पर 'रट-रट' कर चावल पकने लगे तो पडित को भी गाने की सूझी। चावल ताल दे रहा है ऐसा उसे लगा। परन्तु चावल थोडे ही एक सरीखा 'रट-रट' करेगा ? वह अब 'खद-खद' आवाज करने लगा। पडित को लगा कि 'खद-खद' आवाज से ताल भग हो रही है। ताल भग होता है देखकर कौन गवैया चुप बैठेगा ? उसने क्रोध के मारे उस बर्तन पर जोर से एक थप्पड लगाया। फिर क्या, बर्तन चूल्हे से दूर जा गिरा और पका हुआ चावल जमीन पर फैल गया।

चौथे पडित थे ज्योतिषी महाशय ! भोजन के लिए पत्ते लाने का काम था उनका। वह प्रात काल उठ कर घर से निकला। गाव के बाहर बरगद का एक पेड था, वह वहाँ पहुँचा। पत्ते तोडने पेड पर चढने लगा। आधा चढा था कि न मालूम कही से छिपकली ने 'चुक-चुक' किया। पडित सोचने लगा—'बडा बुरा सगुन हुआ। आगे चढू या न चढू।' आखिर नीचे उतरने का निर्णय किया और नीचे उतरने लगा। नीचे उतर ही रहा था कि दुबारा छिपकली ने 'चुक-चुक' किया। अब नीचे उतरना भी ठीक नही, बीच मे ही लटक गया। ऐसा कितने समय तक लटका रहूँगा ? उसके हाथ दर्द करने लगे और वह नीचे गिर गया। गिरने से चोट लगी और वह किसी तरह से घिसट-घिसट कर घर पहुँचा।

अब रह गया पाचवाँ पडित। उसका काम था तरकारी लाने का। वह था वैद्यक शास्त्र मे पारगत। वह बाजार में तो गया, परन्तु कैसी तरकारी आरोग्य के लिए लाभदायक है इसका निश्चय न कर सका। वैद्यक शास्त्रानुसार उस मौसम मे खाने योग्य ऐसी तरकारी हो उसे न मिलने के कारण वह कुछ भी न खरीद कर घर लौट आया।

इससे क्या हुआ कि भोजन का समय हुआ, परन्तु उन्हे भोजन न मिल सका। दरबार मे हाजिर होने का समय हुआ तब वे भूखे तथा उदास वहाँ पहुँच गये।

इधर उस चतुर प्रधान मन्त्री ने पाचो पडित क्या-क्या करते है यह देखने एक आदमी नियुक्त किया था। उसने सारी खबर प्रधान मन्त्री को दी तथा प्रधान मन्त्री ने सारी कथा राजा को सुनाई।

दरबार मे आये हुए उन पाचो पडितो को देखकर राजा को दु ख हुआ। राजा ने पडितो से कहा—"कल मै तुम्हारी विद्या से काफी सन्तुष्ट था, परन्तु

आज मुझे मालूम हुआ कि तुम्हे व्यवहार-ज्ञान बिल्कुल नही है। पहले व्यवहार सीखो और फिर मेरे दरवार मे धन के लिए आओ।"

पाँचो कितावी पडित दु खी और निराश होकर दरवार से निकल गये।

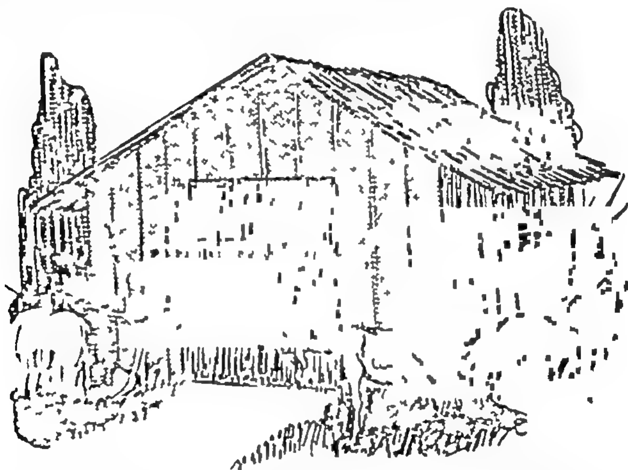
पाँचों कितावी पण्डित दुखी और निराश होकर दरवार से निकल गये।



चैंऊँ-मैंऊँ

रामचन्द्र शर्मा

एक वकरी थी। उसके चार वच्चे थे। एक का नाम था आले, दूसरे का नाम था वाले, तीसरे का चैंऊ और चौथे का मैंऊ। जव वकरी जगल में चरने जाती थी, तो अपने घर के दरवाजे से टट्टी लगा जाया करती थी। उसे डर था कि कही किसी दिन भेडिया या और कोई जगली जानवर उसके वच्चो को मार कर न खा जाय। जव वह शाम को घर लौट कर आती तो दरवाजे के पास खडी होकर कहती—"आले टट्टी खोल, वाले टट्टी खोल, चैंऊ टट्टी खोल, मैंऊ टट्टी खोल।" अपनी माँ की आवाज़ पहचान कर वच्चे टट्टी खोल देते थे और वकरी भीतर घुस जाती थी।



उसने रोज की तरह दरवाज़े पर आवाज़ लगाई—"आले टट्टी खोल, वाले टट्टी खोल, चैंऊँ टट्टी खोल, मैंऊँ टट्टी खोल।"

एक दिन एक भेडिया झाडी की आड में खडा-खडा यह सव तमाशा देख रहा था। उसने अपने मन मे सोचा कि अगर मैं भी दरवाज़े पर जाकर इसी प्रकार कहूँ तो वच्चे टट्टी ज़रूर खोल देगे। फिर मै भीतर घुस जाऊँगा और सवको मार कर खा जाऊँगा।

दूसरे दिन वकरी रोज की तरह वच्चों को दूध पिलाकर और दरवाज़े से टट्टी लगा कर जगल में चरने चली गई। उसके जाने के थोडी ही देर वाद भेडिया आया और दरवाज़े के पास खडा होकर वोला—"आले टट्टी खोल, वाले टट्टी खोल, चेंऊ टट्टी खोल, मेंऊ टट्टी खोल।" वच्चो ने समझा कि आज शायद हमारी माँ हमसे कुछ कहना भूल गई है, इसलिये लौट आई है। उन्होने तुरन्त टट्टी खोल दी। टट्टी खुलते ही भेडिया अन्दर घुस गया और एक-एक करके चारो वच्चो को निगल गया। जब भेडिया वहाँ से गया, तो टट्टी दरवाजे से ठीक उसी तरह से लगा गया जिस तरह से वकरी लगाया करती थी।

शाम को जव वकरी घर लौटी, तो उसने रोज़ की तरह दरवाज़े पर आवाज़ लगाई—"आले टट्टी खोल, वाले टट्टी खोल, चेंऊ टट्टी खोल, मेंऊ टट्टी खोल।" परन्तु टट्टी कौन खोलता ? वच्चे तो भेडिये के पेट मे थे। वकरी ने फिर चिल्ला कर कहा—"आले टट्टी खोल, वाले टट्टी खोल, चेंऊ टट्टी खोल, मेंऊ टट्टी खोल।" फिर भी टट्टी नही खुली। तव तो वकरी को वडी चिन्ता हुई। तरह-तरह के विचार मन मे उठने लगे। भय और घवराहट से थर-थर काँपने लगी। मन मे सोच रही थी—आज निश्चय ही भेडिया मेरे वच्चो को खा गया। उसने वड़ी तेजी के साथ आगे वढ़ कर टट्टी मे अपने सीग गडा दिये और टट्टी एक तरफ को गिर गई। परन्तु वकरी जव भीतर घुसी, तो देखती क्या है कि घर खाली है और वहाँ एक भी वच्चा नही है। यह देखकर वकरी को वहुत दु ख हुआ। वह समझ गई कि जरूर भेडिया मेरे वच्चो को खा गया है। वकरी घर के एक कोने में वैठ गई और धाडे मार-मार रोने लगी—

'हाय ! मेरे आले-वाले !
हा ! मेरी आंखो के तारे !
हाय ! मेरे चेंऊ-मेंऊं !
तुम विन कैसे मै अव जीऊँ ?'

वकरी यह कहती हुई वाहर को दौडी—"कहाँ है रे भेडिया ? मेरे वच्चो को खाने वाले आजा, तेरा पेट फोडूंगी।" वह दु ख से व्याकुल थी। रुदन करती हुई इधर-उधर दौडने लगी। फिर घर मे आ गई और थोडी देर चुपचाप वैठी रही। इसके वाद वह उठी और सीधी वढई के घर गई। वढई से वोली—"भाई वढई ! अगर तू मेरे सीगो को पैना कर दे, तो मै तुझे एक थन का दूध पिला दूँगी।" वढई ने रेती से रेत कर

री के सींगो को पैना कर दिया और बकरी ने उसे एक थन का दूध पिला
ा। इसके वाद वकरी तेली के घर गई और उससे बोली—"ए तेली!
र तू मेरे सीगो को चिकना कर दे, तो मैं तुझे एक थन का दूध पिला दूँगी।"
ी ने तेल चुपड कर सीगो को चिकना कर दिया और वकरी ने उसे दूसरे थन
दूध पिला दिया।

अव वकरी वहाँ से चली और सीधी तालाब पर पहुँची। तालाब के
नारे वह एक ऊँचे टीले पर बैठ गई। थोडी देर वाद एक खरगोश तालाब
पानी पीने आया। बकरी ने खरगोश को डाँटते हुए कहा—"ए खरगोश!
खरगोश! पानी न पीना।" खरगोश बोला—"क्यो?" बकरी ने कहा—
, ने ही मेरे आले खाये, तू ने ही मेरे वाले खाये, तू ने ही मेरे चैंऊ खाये, तू
ही मेरे मैंऊ खाये।"

खरगोश ने उत्तर दिया—"न मैंने तेरे आले खाये, न मैंने तेरे वाले खाये,
मैंने तेरे चैंऊ खाये, न मैंने तेरे मैंऊ खाये। मुझे पानी पी लेने दो।"
बकरी ने कहा—"अच्छा, पी ले।"

जव खरगोश पानी पीकर चला गया, तो गीदड आया। बकरी ने
दड को भी पानी पीने से रोक दिया और उससे भी यही कहा—"तू ने ही मेरे
ले खाये, तू ने ही मेरे वाले खाये, तू ने ही मेरे चैंऊँ खाये, तू ने ही मेरे मैंऊ
ाये।"

गीदड ने भी कहा—"न मैंने तेर आले खाये, न मैंने तेरे वाल, खाये,
मैंने तेरे चैंऊ खाये, न मैंने तेरे मैंऊ खाये।" इस पर बकरी ने उसको भी
ानी पीने की इजाज़त दे दी।

जव गीदड पानी पी कर चला गया, तो वही भेडिया आया, जिसने बकरी
वच्चे खाये थे। बकरी ने भेडिये को रोक कर कहा—"ए भेडिये!
भेडिये! पानी न पीना।"

भेडिये ने पूछा—"क्यो?"

वकरी ने कहा—"तू ने ही मेरे आले खाये, तू न ही मेरे वाले खाये,
ने ही मेरे चैंऊ खाये, तू ने ही मेरे मैंऊ खाये।"

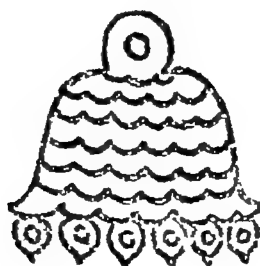
भेडिया वोला—"न मैंने तेरे आले खाये, न मैंने तेरे वाले खाये, न मैंने
रे चैंऊ खाये, न मैंने तेरे मैंऊ खाये। मुझे पानी पी लेने दो।'
वकरी ने कहा—"अच्छा पी ले।'

जब भेडिया पानी पीकर चला, तो बडे घमड के साथ बोला—"मैने ही तेरे आले खाये, मैने ही तेरे बाले खाये, मैने ही तेरे चैऊँ खाये, मैने ही तेरे मैऊ खाये। कर, तू मेरा क्या करेगी ?" यह कह कर भेडिया मस्तानी चाल से वहाँ से चला गया और एक झाडी मे जाकर सो गया। बकरी अपने टीले से नीचे उतरी और जिधर भेडिया गया था उधर ही चल पडी। भेडिये के पैरो के निशान जमीन पर बने हुए थे। उन्ही निशानो के सहारे बकरी उस झाड़ी



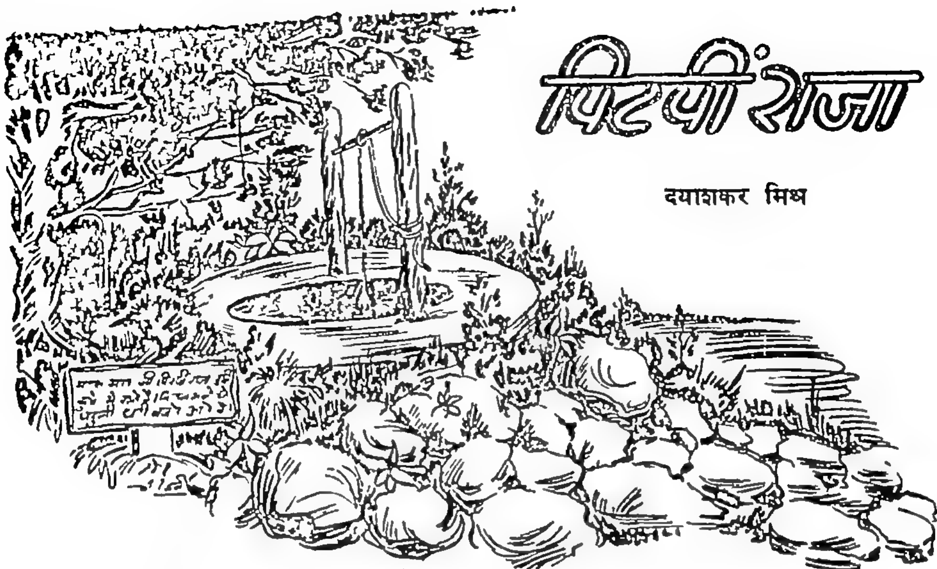
भेडिया का पेट फट गया और उसमें से चारो बच्चे निकल पडे।

के पास पहुंची, जहाँ भेडिया घनी और शीतल छाया मे आराम कर रहा था। बकरी ने देखा कि भेडिया अचेत सोया पडा है। वह धीरे-धीरे आगे बढी और अपने दोनो पैने सीग उसके पेट मे घुसेड दिये। भेडिये का पेट फट गया और उसमें से चारो बच्चे निकल पडे। उनको गोद मे उठा कर बकरी खूब रोई और बार-बार उनका मुंह चूमने लगी। बच्चे अपनी माँ से मिलकर सब दु ख भूल गये। बच्चो को पेट भर दूध पिला कर बकरी उन्हें अपने साथ घर ले आई। बच्चे घर आकर खुशी से किलोले करने लगे।



पिटपी राजा

दयाशकर मिश्र



पिटपी राजा कजूस तो थे ही साथ ही ढोंगी भी पक्के थे । कही जहाँगीर की घटी का नाम सुना तो आपने भी अपने कुए पर एक घटी लटकवा दी ।

एक जगल में एक तालाव था । तालाव में बहुत से मेढक रहते थे । तालाव के पास एक कुआँ था । उसमें मेढको का राजा रहता था । राजा का नाम था 'पिटिपी राजा' । पिटपी राजा पूरा मक्खीचूस था ।

एक दिन मेढको ने सभा की । सवने वैठकर विचार किया कि "हम सव लोग पिटपी राजा का मान करते है , दावत देते है, लेकिन पिटपी राजा हमे कभी दावत नही खिलाते । कभी हमे अपने घर पर नही वुलाते । क्या करना चाहिये ?"

एक ने कहा —"सत्याग्रह करना चाहिये ।"

दूसरे ने कहा—"राजा को गद्दी से उतार दिया जाये ।"

इतने में एक छोटा सा मेंढक जिसका नाम था 'टर्रकटूँ', उछल कर सामने आया और वोला—"सुनो जी ! राजाओ से मिल कर चलना चाहिये । उन्हे गद्दी से नही उतारना चाहिये । मैं तरकीव से काम लूंगा । पिटपी राजा नाराज़ भी न होंगे और हमें दावत भी मिल जायेगी ।"

सब मेंढ़को ने 'टर्रकटूँ' की बात मान ली। सभा समाप्त हुई।

पिटपी राजा कजूस तो थे ही साथ ही ढोंगी भी पक्के थे। कही जहांगीर की घंटी का नाम सुना तो आपने भी अपने कुए पर एक घटी लगा दी, और नीचे एक कागज पर लिख कर टाग दिया :—

'मेढकमल जी पिटपी राजा,
इसी कुए में रहते हैं।
मिलना हो तो बजे घुटुली
घटी बजते आते हैं ॥'



'टर्रकटूँ' जी सभा से उठ कर सीधे पिटपी राजा के कुए पर पहुँचे। आपने पहला कागज फाड कर फेंक दिया। अपना दूसरा कागज़ वहाँ लगा दिया। उस पर लिख दिया—

'मेढकमल जी पिटपी राजा,
आज हो गये हैं बीमार।

ठीक अगर करना चाहो तो ,
डालो कडवी गोली चार ॥'

तालाब के मेढको ने नया कागज़ पढा । मेढ़को को क्या मालूम कि यह सब करामात 'टर्रकटूं' की है । मेढको ने 'कुनैन' की कडवी गोलियाँ ला-ला कर कुए में डालनी शुरू की । कुए का पानी कडवा हो गया । पिटपी राजा बबडाये । मन मे सोचने लगे—"आज यह मेढको को क्या सूझा है । क्या इन्होने भी आज़ादी की लडाई शुरू कर दी ?" पिटपी राजा बाहर आये । बाहर आकर नया कागज़ पढा । उन्होने नया कागज तो फाड दिया । अपना पुराना कागज फिर लगा दिया और बडबडाते हुए कुए में चले गये ।

टर्रकटू पास ही छिपे बैठे थे । उछलते-उछलते आये । पिटपी राजा का कागज फाड दिया । अपना नया कागज लगा दिया ।

'मेढक मल जी पिटपी राजा,
गोली खा कर ठीक हुए ।
आज खुशी मे दावत खाओ,
घर वालो को लिये हुए ॥'

तालाब के मेंढको ने नया कागज पढा । कागज़ मे दावत की बात पढ कर सभी मेढक उछलने लगे । उछलते-उछलते घर गये । घर से बीवी बच्चो को लेकर पिटपी राजा के कुए पर पहुँचे । कुए की घटी बजाई गई पिटपी राजा बाहर आये । सब मेढको को देखकर पिटपी राजा ने पूछा—"कहिये क्या बात है ?"

मेंढक बोले—"दावत मे कितनी देर है ?"

पिटपी राजा ने हैरान होकर कहा—"कैसी दावत ?"

मेढको ने कुए पर लगा नया कागज दिखाया । पिटपी राजा ने सिर झुका लिया, मन मे सोचने लगे—आजकल प्रजा की ताकत बढ रही है । राजाओ से राज्य छीने जा रहे है । एक दावत खिला देने से अगर गडबड टल जाये, तो ठीक ही है । ऐसा सोच कर पिटपी राजा बोले—"आइये ! आप लोग अन्दर आइये । दावत मे देर नही है ।"

पिटपी राजा ने नया कागज फाड दिया । अपना पुराना कागज़ फिर लगा दिया । टर्रकटू पास ही छिपे बैठे थे । उछलते-उछलते आये । पिटपी राजा का कागज फाड दिया अपना नया कागज़ फिर लगा दिया—



मेंढक उछलते-उछलते घर पर गये। घर से बीवी
बच्चों को लेकर पिटपी राजा के कुएं पर पहुंचे।

'सारे मेंढक दावत खाकर,
सौफ-सुपारी फांक रहे।
भूखे प्यासे टर्रकटू जी।
बैठे-बैठे झांक रहे॥

दावत खाकर मेंढ़क बाहर आये। पीछे से पिटपी राजा भी आये। ऊपर आकर एक दूसरा नया कागज़ लगा हुआ देखा। पिटपी राजा लाल-पीले होने लगे। पर नया कागज पढते ही खुश हो गये। दौडकर नटखट टर्रकटू को गले से लगा लिया। पिटपी राजा बोले—"टर्रकटू जी! चलिये आज तो आप मेरे साथ ही एक थाली में खाना खायेंगे। आज आपने हमें नया पाठ पढाया है कि राजा को भी प्रजा का मान करना होगा। प्रजा में मिलजूल कर ही रहना होगा।"

एक प्रहार सात मार

योगराज थानी

एक दर्जी ने बाज़ार से मिठाई लाकर विना ढके हुए अपने कमरे में रख दी और अपना काम करना शुरू कर दिया। थोडी देर मे क्या देखता है कि वहुत सी मक्खियाँ मिठाई पर आकर बैठ गई है। दर्ज़ी ने ज़ोर से मिठाई पर हाथ मारा जिससे सात मक्खियाँ मर गई। दर्जी मन ही मन बडा खुश होने लगा कि मैने एक ही वार मे सातो को खत्म कर दिया है। खुशी से फूला न समाया।

उसने अपना काम छोड दिया और एक बक्स बना लिया, जिसके ऊपर लिखा था, 'एक प्रहार सात मार'। इसी बक्स में उसने एक कबूतर और एक पनीर का टुकडा रख दिया। बक्स को गले में लटकाये वह बाज़ार में चल पडा। शाम का समय हो गया था। जो भी आदमी उसे देखता, वडा हैरान हो जाता कि यह कितना वहादुर है जिसने एक वार में सात को मार डाला।

उसी देश मे एक और भी वहादुर नौजवान रहता था। जव यह वात उस नौजवान के कानो मे पहुँची तो वह भागता हुआ दर्ज़ी के पास आया और उस नौजवान ने दर्ज़ी से शर्त लगाई कि हम दोनो पत्थर फेंक कर देखते है कि किसका पत्थर देर में नीचे गिरता है। दर्ज़ी ने यह शर्त मज़ूर कर ली। पहले नौजवान की वारी थी जो उससे मुकावला करने के लिये आया था। उसने पत्थर को फेका जो दो मिनट के वाद नीचे आ गया। जव दर्ज़ी की वारी आई तो उसने एक दम से अपने वक्से मे से कवूतर निकाल कर इस चालाकी से ऊपर फेका कि नौजवान समझा कि यह पत्थर है। नौजवान देखने लगा कि कव पत्थर नीचे आये। लेकिन वह तो कवूतर था वह कव नीचे आनेवाला था ?

दर्जी ने कहा—"मै इतना वहादुर हूँ कि मेरा फेका हुआ पत्थर नीचे नही आयेगा।" दर्ज़ी ने अपनी वडाई करने के लिए नौजवान से कहा, "मै पत्थर से पानी भी निकाल देता हूँ।"

नौजवान ने पूछा, "वह कैसे ?"

दर्जी ने पनीर के एक टुकडे को पहले से मिट्टी में फेक दिया था, अव उसमे काफी मिट्टी लग गई थी और वह विलकुल पत्थर के समान लग रहा था। दर्जी ने उसी पनीर को जमीन से उठाया और उसे जोर से दवाकर वडे मजे से उसमें से पानी निकाल दिया। फिर क्या था नौजवान ने इसकी खूव प्रशसा की। लोग इसे फूलो के हार चढ़ाने आते, अपने घर वुलाते और अव दर्जी का वड़ा आदर सत्कार होने लगा।

उस देश का राजा वडा चिन्तित रहा करता था क्योकि उस देश के जगल में दो राक्षस रहते थे जो रोज एक आदमी को पकड कर ले जाते थे और मार कर खा जाते थे। राजा को हमेशा यही सोच पडी रहती थी कि क्या मेरे देश मे कोई ऐसा वहादुर नही है जो इन राक्षसो को मार दे।

दर्जी की बहादुरी की प्रशसा राजा के कानो तक भी पहुँची। राजा ने दर्जी को वुलाया, उसका आदर सत्कार किया और दर्जी को उन दोनो राक्षसो को मारने के लिए कहा। पहले तो दर्जी ने इन्कार-सा किया। लेकिन फिर राजा ने कहा—"मै तुम्हे एक गाव दे दूंगा। और यदि तुम चाहो तो मेरी सेना भी ले जा सकते हो।"

दर्जी ने कुछ सोचने के वाद कहा—"मुझे सेना की आवश्यकता नही, मै अकेला ही काफी हूँ।"

रात के समय दर्जी जंगल की ओर चल पडा। दर्जी ने जेव में दो वडे से पत्थर डाल लिए और उस वृक्ष के ऊपर चढ कर वैठ गया जिसके नीचे दोनो राक्षस सो रहे थे।

ऊपर जाते ही दर्जी ने एक पत्थर एक राक्षस के ऊपर दे मारा। राक्षस उठा और उसने इधर-उधर देखा, उसे कुछ भी दिखाई नही दिया। राक्षस ने अपने दूसरे साथी को उठा कर पूछा, "क्यो तूने मुझे पत्थर मारा है?"

दूसरे राक्षस ने उत्तर दिया, "नही भाई मैने नही मारा है।"

पहले ने कहा "और किसने मारा है?"

दूसरे ने कहा, "अव मुझे माफ भी कर दो।"

दोनो सो गये। अव दर्जी ने दूसरा पत्थर दूसरे राक्षस पर दे मारा। दूसरा राक्षस उठा और उसने पहले वाले राक्षस को उठा कर मारना शुरु कर दिया। और कहा, "मैने तो तुम्हे पत्थर नही मारा था लेकिन तुमने

उनमे सोचने की शक्ति कहाँ थी। दोनो लड़े और इतने लड़े कि एक दूसरे को दोनो ने इसी भूल मे नष्ट कर दिया और मृत्य की गोद मे सो गये।

दर्जी वापस लौटा और राजा को यह समाचार सुनाया। राजा उस पर बड़ा खुश हुआ और दर्जी को एक गाँव इनाम दे दिया।

अब वह दर्जी अमीर बन गया।

गाँव पाकर दर्जी अपनी पत्नी को भी ले आया अब वह बहुत खुश था



घोड़े का अंडा

विष्णुकुमार अग्रवाल

एक वार एक मूर्ख जुलाहा शहर में घूमने के लिए गया। वहाँ उसने एक दुकान के सामने तरबूज़ो का ढेर लगा हुआ देखा। जुलाहे ने पहले कभी तरबूज नही देखे थे, इसलिये उसने उन्हें देखकर सोचा कि ये किसी चिडिया के अडे है। फिर उसने सोचा कि चिडिया के अडे तो इतने बडे हो नही सकते इसलिये अवश्य ही ये घोडे के अडे है। उसने दुकानदार से पूछा, "क्या ये घोडे के अडे है ?"

यह सुनकर पहले तो दुकानदार चौंका, पर वाद में उसने सोचा कि यह मूर्ख है। इसलिये वह वोला, "हाँ, ये घोडे के ही अडे है।" उस गवार ने उनका दाम पूछा तो दुकानदार ने एक तरबूज़ का दाम बीस रुपये बताया। जुलाहे ने एक तरबूज़ खरीद लिया और अपने घर की ओर चल पडा।



उसे भागते देख कर जुलाहे ने समझा कि अडे में से निकल कर घोडे का वच्चा भागा जा रहा है। वस उसके पीछे वडी तेजी से दौडा पर खरगोश जरा सी देर में आँखों से ओझल हो गया।

वह सोचता जा रहा था, 'इस अडे को मैं अपने घर के एक गर्म स्थान में रख दूंगा। कुछ दिन वाद इसमे से एक घोडे का वच्चा निकलेगा। जव वह बडा हो जायगा तो उसे वेचकर और अधिक अडे खरीदूंगा और फिर

उनके बच्चे बेच-बेच कर पैसे कमाऊंगा। तब मैं घोडो का व्यापार करने लगूंगा और इस प्रकार अमीर बन जाऊगा।'

चलते-चलते दोपहर हो गया। वह एक तालाव के पास रुक गया और तरबूज़ को उसने एक झाडी मे रख दिया। वह नहा ही रहा था कि एकाएक तेज हवा के झोके से तरबूज़ गिर गया। तरबूज़ के गिरने की आवाज़ से डरकर एक खरगोश जो कि झाडी मे छिपा हुआ बैठा था, बड़ी तेज़ी से भागा। उसे भागते देख कर जुलाहे ने समझा कि मेरे अडे में से घोडे का बच्चा निकल कर भागा जा रहा है। वह उसके पीछे बडी तेज़ी से दौडा पर ख़रगोश जरा सी देर मे आँखो से ओझल हो गया।

अन्त मे हार मान कर अपने भाग्य को कोसता हुआ वह घर लौटा। तरबूज़ को बेकार समझ उसने वही छोड दिया। घर पहुँचते ही उसने अपनी औरत से सब हाल कह सुनाया। उसकी औरत को भी बडा दु ख हुआ और उसने कहा "यदि तुम घोडे के बच्चे को यहाँ ले आते तो मुझे चढने को मिल जाता।"

यह सुनकर वह बड़ा गुस्सा हुआ और अपनी स्त्री को पीटते हुए बोला, "अरी डायन! तू छोटे-से घोडे के बच्चे पर लदकर उसकी पीठ तोड डालना चाहती है? तेरा ढाई मन का बोझ भला छोटा-सा बच्चा सभाल सकता है?"

हल्ला-गुल्ला सुनकर गाँववाले दौडे हुए आये और पूछने लगे, तू "अपनी औरत को इतनी निर्दयता सें क्यों पीट रहा है?"

जुलाहा बोला, "निर्दय तो यही है जो एक छोटे से घोडे की पीठ तोडना चाहती है।" और उसने उनसे सब हाल कह सुनाया।

सब सुनकर गाँववालो ने पूछा, "तेरे घोडे का अडा कहाँ है।"

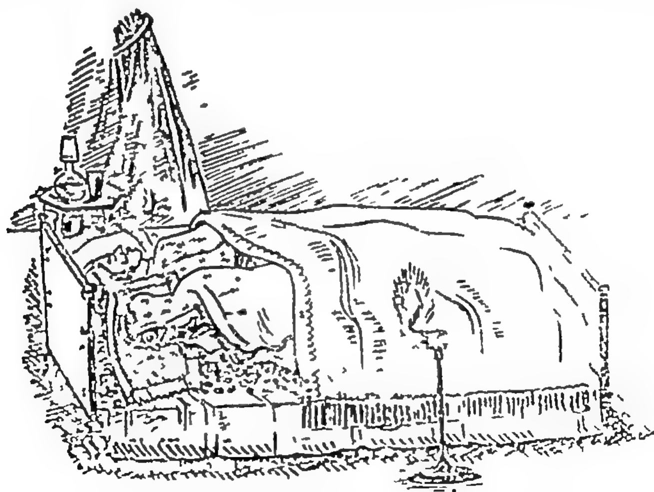
उसने उनको झाडी के पास ले जाकर अडा दिखा दिया। गाँव-वाले उसकी बेवकूफी पर खूब हँसे। उनमें से एक ने कहा, "घोड़े के अंडे कभी नही होते। तुम्हे किसी ने ठगा है। आओ, मै तुम्हे इस अडे के असली बच्चे दिखाऊँ।" यह कहकर उसने तरबूज़ को एक पत्थर पर पटक कर फोड दिया और उसके बीज उसे देकर कहा कि यही इसके बच्चे है और तरबूज़ को गाँववाले बाँटकर खा गये।

सेठानी की चालाकी

सतीश रंजन सिन्हा (१४ वर्ष)

बहुत पुरानी बात है। एक नगर में एक कजूस सेठ रहता था। वह सारे नगर मे अपनी कजूसी के लिए मशहूर था। उसकी सेठानी तो उससे भी अधिक कजूस मक्खीचूस थी। उनका लेन-देन का बडा कारोबार था और वह सूद बडा कडा लेते थे। कभी एक पाई भी खो जाती तो उनको बडा दुख होता और तीन-रात-दिन कलपते ही रहते थे।

एक दिन मौका पाकर सेठ जी के घर में चोर आ घुसे। सब बेखबर सो रहे थे। चोरो ने सारा घर छान डाला पर कोई कीमती माल उनके हाथ न लगा। अन्त मे वे हिम्मत करके उस कमरे में गये जहां सेठ और सेठानी सो रहे थे। सेठ जी तिजोरी अपने सिरहाने रखकर सो रहे थे। चोरो ने



इतनी दर में सेठानी की भी नीद खुल गई। उसने अभी मदी आंखो से करवट ली।

मन्द प्रकाश में देखा कि सेठ-सेठानी गाढी नीद में सो रहे हैं। इधर रात भी बीत रही थी इस कारण उन्होने तिजोरी तोडने में जल्दी की। हथौड़ी

की आवाज़ से सेठ जी की नीद खुल गई। वह घवडाये और वड वड करने लगे। उनकी विस्तर से उठने की हिम्मत न हुई। जोर से वोलना भी उनसे न हो सका।

इतनी देर मे सेठानी की भी नीद खुल गई। उसने आधी मुंदी आखो से करवट वदली। उसकी नजरो ने कनखियो से देख लिया कि चोर घर में घुस आये है। सेठानी वडी होशियार थी। वह घवडाई नही। और रज़ाई को कुछ और ऊपर को सरकाते हुए सेठ जी से वोली—"ओह! अच्छी याद आई। कल आप राम नगर से जो ५,००० रुपये वसूल करके लाये थे वह मैं रसोई में हडिया मे ही रख आई हूँ।"



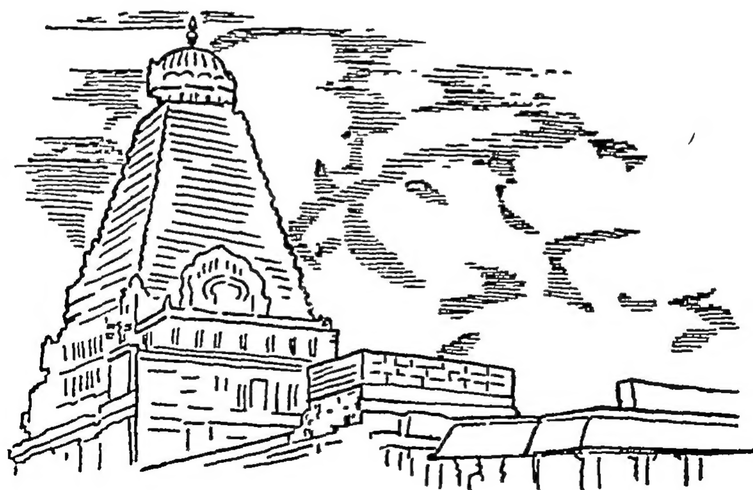
उनके हाथ डालते ही विच्छू ने ज़ोर से डक मारा।

पहले तो सेठ जी वहुत सपकपाये परन्तु वाद मे सेठानी का मतलव समझ गये और उसे लेटे ही लेटे डाटने लगे,—"तूने मेरी साल भर की कमाई वरवाद कर दी। इतना समझाया, इतना सावधान किया पर तुझ पर कोई असर

ही नही होता। तिजोरी खाली रख कर इधर-उधर रुपये पटकते रहने से क्या मतलब ?"

सेठानी बात बनाकर बोली—"लो तुम तो नाहक को बिगडने लगते हो। तिजोरी की तरफ तो सबका ध्यान जाता है। हडिया मे रुपया सुरक्षित रहता है। मै तो कई बार उसी में रुपया छिपाकर रख दिया करती हूँ। किसी को ख्याल भी नही होगा कि हमारी पूजी हडिया में है। तिजोरी तो दिखावे के लिए रखी हुई है।"

चोर यह सब बातें सुन रहे थे। व बडे खुश हुए और तिजोरी छोडकर धीरे-धीरे बरामदे में चले गये। वहाँ उन्होने हडिया में हाथ डाला परन्तु उसके अन्दर रुपये के बदले एक जहरीला बिच्छू था। उनके हाथ डालते ही बिच्छू ने जोर से डक मारा। चोर ज़ोर-ज़ोर से हाय ! हाय ! करने लगे। चिल्लाहट सुन कर आस-पास के सब लोग दौडे आये। तब तक दिन निकल आया था। पुलिस में खबर दी गई और वह चोरो को पकड कर थाने में ले गई।



कथा-माला

हमारे देश में स्वस्थ और मनोरंजक बाल-साहित्य का अभाव है। इस कमी को पूरा करने के लिए भारत सरकार भरसक कोशिश कर रही है। इसी सिलसिले में कथा-माला के तीन भाग निकाले गये हैं। देश-विदेश की लोक-कथाए—इसमे भिन्न-भिन्न देशो की १६ चुनी हुई लोक-कथाए हैं। पुस्तक में पचास से ऊपर चित्र और १२० पृष्ठ हैं। भारत की लोक-कथाए—इस पुस्तक में एक से एक बढिया २२ सचित्र लोककथाए हैं। पुस्तक में ६० से ऊपर चित्र और १४४ पृष्ठ हैं। इस कथा माला का तीसरा पुष्प है मनोरजक कहानिया—इस सग्रह में एक से एक अनूठी और हास्य-रस की कहानिया हैं। अनेक चित्रो ने इसमें चार चाद लगा दिये हैं। प्रत्येक पुस्तक का दाम केवल एक रुपया है।

इस क्रम में हमारे अन्य प्रकाशन है—पचतत्र की कहानिया तथा भारत के गौरव।

इन लोक कथाओं का यह द्वितीय सस्करण है। इन पर महानुभावो की बहुमूल्य सम्मतियो के कुछ अश नीचे उद्‌धृत किये जाते हैं

कथाएँ इतनी रोचक और मनोरजक हैं कि बच्चे इसे समाप्त किये बिना उठना ही नही चाहते। कथाओ के आकर्षण में चित्रों ने भी वृद्धि की है। इस बालोपयोगी रोचक कथा-सग्रह के लिए प्रकाशक और सम्पादिका को हम बधाई देते है।

—हिन्दुस्तान टाइम्स

प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन से केवल मनोरजन ही नही बल्कि हिन्दी साहित्य की एक कमी पूर्ण हो गई। आज ऐसे प्रकाशनो की अत्यन्त आवश्यकता है। इस दृष्टि से पुस्तक का मूल्य और भी बढ जाता है।

—दक्षिण भारती

किसी भी देश की लोक-कथाओ से हमें उसके लोक-जीवन का ज्ञान होता है। ऐसे सग्रहो की बहुत दिनो से आवश्यकता थी। हर्ष की बात है कि अब वह अभाव दूर हो गया है।

—आरसी

हमारे देश के बालक और सामान्य जनता अधिकतर भारतीय लोक कथाओ से ही परिचित हैं। वह अन्य देशो की कथाओ से भी परिचित हो, इस दृष्टि से ये अन्तर्राष्ट्रीय लोक-कथायें सग्रहीत की गई है। शुरू से लेकर अन्त तक सब कहानिया सचित्र दी गई है, इसमें पाठक की विशेषतया बालको की पुस्तक में विशेष दिलचस्पी बढ जाती है। इस प्रकार के सग्रह की उपयोगिता स्पष्ट है, इन्हें बालको के अतिरिक्त दूसरे पाठक भी चाव से पढेंगे।

—प्रतिभा

सग्रह करते समय सम्पादिका ने इसके साथ श्रम किया है, फलस्वरूप कहानिया सुन्दर और आकर्षक बन गई हैं। भाषा सरल, सुबोध और मजी हुई है। कहानिया मनोरजक है। पुस्तक की छपाई और गेटअप आदि सुन्दर है। ऐसी बालोपयोगी पुस्तको का प्रकाशन कर सरकार ने स्तुत्य कार्य किया है।

इस पुस्तक के लेखक

सावित्री देवी वर्मा—इस पुस्तक की सम्पादिका। वाल-मनोविज्ञान पर 'आपका मुन्ना' (३ भाग) 'नारी का रूप शृगार' 'भारतीय भोजन विज्ञान' और पारिवारिक समस्याए' पुस्तको की लेखिका। बाल साहित्य में आपकी कथा-भारती, जगल-ज्योति, शेक्सपियर की कहानिया, कथा-कहानी (वाल-पचतत्र) और उत्तर प्रदेश की लोक-कथाएँ आदि पुस्तकें प्रकाशित हुईं। प्रौढो के लिये आप की तीन पुस्तकें प्रसिद्ध हैं—आदर्श माता-पिता, बीमार की सेवा, कैसे पकायें क्या खायें? 'आपका मुन्ना' पर उत्तर प्रदेश सरकार से पुरस्कार मिला है। शेक्सपियर की कहानिया और 'आपका मुन्ना' को विन्ध्य प्रदेश सरकार ने भी पुरस्कृत किया है।

जहूरबख्श—हिन्दी के पुराने, ख्याति प्राप्त एक मुस्लिम लेखक। आपकी शैली बहुत ही सधी हुई तथा भाषा मुहावरेदार होती है। 'वाल-भारती' में आपकी कई एक रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।

मन्मथनाथ गुप्त—'वाल-भारती' के भूतपूर्व-सम्पादक—अनेक पुस्तको के लेखक जिनमे लगभग एक दर्जन उपन्यास हैं। वाल साहित्य में ये पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं (१) फ्रास की लोक-कथाएँ, (२) वगाल की लोक-कथाएँ, (३) आदमी का जन्म। एक साल आपकी वाल रचनाओ पर विन्ध्य प्रदेश सरकार ने प्रथम पुरस्कार दिया था।

रामचन्द्र शर्मा—आप हिन्दी के उदीयमान लेखक हैं। आपकी कई एक कहानिया "वाल-भारती" में छप चुकी हैं। इस समय आप भारत सरकार के 'पत्र सूचना विभाग' में काम कर रहे हैं।

कान्तिलाल शाह—एक गुजराती लेखक।
मुवारक जहाँ—एक प्रसिद्धि प्राप्त मुस्लिम लेखिका।
भीष्म साहनी—हिन्दी के एक ख्याति प्राप्त कथाकार।
रत्न वडोला—'वालभारती' के एक उदीयमान लेखक।
गणेशदत्त इन्दु—एक हिन्दी लेखक।
अरुण कुमार—कहानी प्रिय एक वाल लेखक।
रामदत्त शुक्ल—हिन्दी के एक नवीन लेखक।
कृष्णकुमारी—एक उदीयमान लेखिका।
आशादेवी—'वालभारती' की वाल लेखिका।
चन्द्रदेव शर्मा—हिन्दी लेखक तथा प्रसिद्ध चित्रकार।
महेश्वर नागर—एक उदीयमान लेखक।
दयाशकर मिश्र—हिन्दी लेखक।
योगराज थानी—एक हिन्दी लेखक।
विष्णु अग्रवाल—एक उदीयमान लेखक।
इन्द्र भूषण—'वाल भारती' के एक हिन्दी लेखक।
सुबोध रजन सिन्हा—एक वाल लेखक।